आधुनिक काव्य संग्रह
की टीका

लेखक—

श्री फूलचन्द्र जैन एम० ए०
साहित्यालङ्कार साहित्यरत्न ।

322

0152, L:8x, JAI, L
J4

विनोद पुस्तक मन्दिर
हॉस्पिटल रोड, आगरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

0152,1:8x,JA1,L 3323
J4
Jain, Phool Chand.
Adhunik kavya san-
graha ki tika.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की टीका

323
C.

लेखक—

श्री फूलचन्द्र जैन एम० ए०

साहित्यालङ्कार साहित्यरत्न।

विनोद पुस्तक मन्दिर

हॉस्पिटल रोड, आगरा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शान्त शर्मा हिरेमठ

Shant Sharma Hiremath
'काव्यतीर्थ', 'वेदान्त शास्त्री'

27

कवि नामावली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

27

श्री मैथिलीशरण गुप्त

साकेत

सौध सिंह द्वार .... की सृष्टि की ।

शब्दार्थ—सौध-सिंहद्वार=महल का प्रमुख दरवाजा । रागनी=संगीत का एक राग विशेष । कीर=तोता । पंजर स्थित=पिंजड़े में स्थित । सुरम्य=सुन्दर । खंजन=एक प्रसिद्ध पक्षी, जो शरतकाल से लेकर शीतकाल तक दिखलाई पड़ता है । साहित्य में इसकी उपमा विशेषतः आँखों से दी जाती है । सृष्टि की=बनाई ।

भावार्थ—महल के सिंह द्वार पर अब भी बाँसुरी की वही संगीत रस में डूबी हुई रागिनी बज रही थी । पिंजड़े में बैठा हुआ सुन्दर रूप वाला तोता भी उसी बाँसुरी के संगीत का अनुकरण कर रहा था । उर्मिला ने अपनी दृष्टि तोते की ओर डाली । उसके (उर्मिला के) नेत्र इस प्रकार शोभित हुए मानों दो सुन्दर खंजन पक्षी हों ।

मौन होकर कीर .... चुप क्यों हो रहा ?"

शब्दार्थ—विस्मित = चकित । स्थिर = अपने स्थान पर ठहरा हुआ । प्रेयसी = प्रेमिका, यहाँ उर्मिला से तात्पर्य है । सुभाषी = मधुर वचन बोलने वाला ।

भावार्थ—उर्मिला के अपनी ओर देखने पर तोता ने एकाएक मौन भाव ग्रहण कर लिया और सहसा चकित होकर वह अपने ही स्थान पर स्थित होकर ठगा सा देखता रह गया । बड़े प्रेम के साथ प्रेयसी उर्मिला ने कहा, "हे मधुर भाषी तोते बोल, तू चुप किस लिए हो रहा है ।"

पार्श्व से सौमित्र .... यह कौन है ?"

शब्दार्थ—पार्श्व = बगल । सौमित्र = लक्ष्मण । अधर = होठ । शुक = तोता । काँति = शोभा । दाड़िम = अनार । भ्रांति = भ्रम, धोका ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—उसी अवसर पर लक्ष्मण जी पार्श्व से आ पहुँचे। आते ही उन्होंने कहा : तोता क्यों नहीं बोल रहा, लाओ इसका कारण मैं अभी बतला दूँ। तुम्हारे इस नाक के सफेद मोती को जो कि तुम्हारे होटों के लाल रंग से शोभित है, इस तोते ने भ्रमवश अनार का दाना समझ लिया है। इस मोती को ही देखकर इस तोते ने मौन भाव ग्रहण कर लिया है। वह अपने मन में सोच रहा है कि यह दूसरा तोता कहाँ से आगया है। (यहाँ लक्ष्मण जी ने उर्मिला के मुख को तोते का रूप दिया है)

यों वचन कह कर .... स्थिर चाल से।

शब्दार्थ—सहास्य = हास्य से भरी हुई। मोद = प्रसन्नता। पद्मिनी = सुन्दरी, यहाँ उर्मिला से तात्पर्य है। मत्त = मस्त। मराल = हंस।

भावार्थ—हास्य से भरी हुई विनोद की इतनी बातें कह चुकने के उपरांत लक्ष्मणजी हृदय की प्रसन्नता से मुग्ध होते हुए सुन्दरी उर्मिला के निकट मत्त हंस के समान स्थिर चाल से चलते हुए आकर खड़े होगए।

चारु चित्रित .... आँखों में खिला।

शब्दार्थ—चारु = सुन्दर। चित्रित = चित्रों से सजी हुई। भित्तियाँ = दीवालें। आवेग = तीव्रता। हास = हास्य।

भावार्थ—सुन्दर चित्रों से सजी हुई विशाल दीवालें भी मानों यह सब कुछ देख कर खड़ी की खड़ी रह गई थीं। वातावरण में प्रीति ने जैसे और तीव्रता भर दी थी। आँखों में हृदय का उल्लास हँस रहा था।

मुस्करा कर .... जब से हुआ।"

शब्दार्थ—सुरस = सरस, मधुर। स्वप्न-निधि = स्वप्नों का खजाना। मोहिनी = सुन्दरी, यहाँ उर्मिला से अभिप्राय है। रुचिकर = भला।

भावार्थ—अपनी मुस्कान से अमृत बरसाती हुई तथा प्रेम के रसीले पन को और भी अधिक मधुर बनाती हुई उर्मिला लक्ष्मणजी से बोली "क्या आप जग गए? आपको स्वप्नों से प्रेम कब से हो गया है?" लक्ष्मण ने तत्काल ही उत्तर दिया "जब से तुम जैसी सुन्दरी ने मेरे ऊपर मंत्र पढ़ दिया है और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हें जब से जागरण भला मालूम देने लगा है। तभी से मुझे ये स्वप्न की निधियाँ भली मालूम देने लगी हैं, अर्थात् अब मैं देर से जगने लगा हूँ।"

+ + +

सिख कर लोहित ... दे रहा।

शब्दार्थ—लोहित = लाल रंग से रंगा हुआ। व्योम सिंधु = आकाश रूपी समुद्र। तारक-बुद्बुद् = तारों रूपी बुलबुले।

भावार्थ—कोई लाल रंग से लेख लिखने के समान यह सूर्य संसार को लाल रंग से भर कर डूब गया। (जब सूर्य अस्त होता है आकाश में लालिमा छा जाती है) अब तो हे सखि देख, आकाश रूपी समुद्र में सूर्य के डूबने से तारे रूपी बुलबुले उठ रहे हैं।

× × ×

सखि पतंग भी ... प्रेम पलता है।

शब्दार्थ—पतंग = शलभ, एक चमकता हुआ भुनगा जो दीपक की लौ से जल कर मरता है सीस = सिर। बन्धु = भाई। वृथा = व्यर्थ। दहता = जलता। विह्वलता = आतुरता, व्याकुलता।

भावार्थ—प्रेम दोनों पक्षों में होता है। यदि एक ओर पतंग दीपक की लौ पर जलकर मर मिटता है, तो दूसरी ओर दीपक की शिखा भी जलती रहती है। दीपक पतंग से मना करते हुए कहता है "हे भाई तू व्यर्थ में ही क्यों जलता है? परन्तु पतंग दीपक की बात पर ध्यान न देकर जल ही जाता है। पतंग के हृदय में प्रेम की कितनी व्याकुलता है। इस प्रकार प्रेम दोनों पक्षों में होता है।

बचकर हाय ... प्रेम पलता है।

शब्दार्थ—प्रणय = प्रेम। धरे = जीवित रखना।

भावार्थ—क्षुद्र पतंग यदि दीपशिखा पर न जले तो क्या करे? अपने प्रेम को त्याग कर वह भला किस भाँति जीवित रह सकता है? प्रेम की ज्वाला में क्या वह बिना जले ही अपने प्राणों का अन्त कर दे? क्या दीपशिखा पर मर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिटने की उसकी साध उसके जीवन की असफलता है ? प्रेम दोनों पक्षों में हुआ करता है।

कहता है पतंग प्रेम पलता है।

शब्दार्थ—मनमारे=अनमना सा होकर। महान = बड़े। लघु = छोटा। पर=परन्तु। मरण=मृत्यु। शरण किसे छलता है=आश्रय किसे धोका देता है।

भावार्थ—शलभ दीपक की बातों से उदासीन होकर कहता है "यद्यपि तुम बड़े और मैं छोटा हूँ परन्तु फिर भी क्या मुझे प्रेम की वेदी पर मरने का अधिकार नहीं है ? प्रेम की शरण में जाने पर धोका नहीं होता है। प्रेम दोनों ओर से पला करता है।

दीपक के जलने प्रेम पलता है।

शब्दार्थ—आली = सखि। जीवन की लाली = जीवन की सुन्दरता। पतंग-भाग्य लिपि काली = पतङ्ग का भाग्य निराशा और दुर्दैव की कालिमा से युक्त है। वश = अधिकार।

भावार्थ—दीपक के जलने में हे सखि ! फिर भी सुन्दरता और जीने की चमक है, परन्तु पतङ्ग का भाग्य निराशा और दुर्दैव की कालिमा से भरा हुआ है। कौन भला इसे मिटा सकता है ? प्रेम दोनों ओर पला करता है।

जगती वणिग्वृत्ति प्रेम पलता है।

शब्दार्थ—जगती = संसार। वणिग्वृत्ति = व्यापारियों के बीच होने वाले सौदे की प्रवृत्ति, लाभ हानि की साँसारिक भावना। परिणाम = फल। निरखती = देखती है। खलती = बुरी लगती है।

भावार्थ—मुझे व्यापारियों की उस लाभ हानि की सांसारिक भावना से घृणा है। ऐसी प्रवृत्ति पूर्ण हृदय उसी से प्रेम करता है, जिससे कुछ स्वार्थ होता है, कुछ लाभ होने की आशा होती है। ऐसी भावना मनुष्य के कार्य को नहीं वरन् उसके फल को अधिक महत्व देती है। इसीलिए बुरे साधनों द्वारा उत्पन्न किए हुए उत्तम फल को भी वह आदर देती है। मुझे यही बुरा मालूम होता है। प्रेम दोनों ओर से किया जाता है।

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बता अरी अब मारू झखमार।

शब्दार्थ---रुपी = छिड़ी हुई है। रार = लड़ाई। मन मारूं = उदासीन होकर चुपचाप बैठना। झखमार = विवश होकर।

भावार्थ---पति के वियोग में व्याकुल उर्मिला कहती है कि अब मैं क्या करूँ मेरा तो इस रात्रि से जैसे युद्ध ठन गया है। (भाव यह है कि पति के अभाव में उर्मिला को नींद नहीं आती। उर्मिला कहती है कि इस रात्रि से भयभीत होकर रुदन करूँ अथवा विवश होकर चुपचाप बैठ जाऊँ।

× × ×

अरी सुरभि जा काँटों की सेज।

शब्दार्थ---सुरभि = बसंत ऋतु। अङ्ग सहेज = अपने को सँभाल कर। काँटों की सेज = काँटों की शय्या।

भावार्थ---पति के वियोग में उर्मिला को कुछ भी भला नहीं मालूम देता। यहाँ तक कि बसंत ऋतु भी उसे सुखदायी नहीं प्रतीत होती। बसंत ऋतु से उर्मिला कहती है कि मुझसे अपने अङ्गों को सावधानी से बचाती हुई लौट जाओ। क्योंकि तुम फूलों में पलने वाली कोमल ऋतु हो। मेरी काँटों की शय्या पर तुम्हारे अङ्ग छिल जायँगे। भाव यह है कि वसन्त ऋतु की मधुरिमा भी उर्मिला के दुख को दूर नहीं कर पाती।

× × ×

सखि नील नभस्सर डरता डरता।

शब्दार्थ---नभस्सर = आकाश रूपी तालाव। तारक मौक्तिक = तारे रूपी मोती। हिमबिन्दु = ओस की बूँदे। कंटक=काँटे। भूतल=पृथ्वी। कर=हाथ, किरण।

भावार्थ---प्रभात होने पर उर्मिला कहती है कि हे सखि नीले आकाश में यह सूर्य ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे मान सरोवर में कोई हंस तैरता हुआ उतर रहा हो। अब तो आकाश में तारे नहीं दिखलाई पड़ते। मालूम होता है, जैसे इस सूर्य रूपी हंस ने इन तारे रूपी मोतियों को चुग लिया हो, जिनको चुगने के लिए वह निकला था। ओस की बूंदों के रूपों में उस सूर्य रूपी हंस के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो हिम विन्दु वचं रहे हैं, उनको अपने पास रखता हुआ वह चल रहा है। पृथ्वी पर गिरती हुई इस सूर्य की किरणें अब धीरे धीरे फैल रही है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे सूर्य रूपी हंस अपने हाथ (किरणों) पृथ्वी पर इसलिए डरता हुआ डाल रहा है कि कहीं उसके हाथ में पृथ्वी के काँटे नहीं चुभ जायँ।

यशोधरा

देखी मैंने आज .... मैंने न तरा।

शब्दार्थ—जरा=वृद्धावस्था । यशोधरा=बुद्धदेव की पत्नी । वर्ण=रंग । सुवर्ण=सोना । खरा=विशुद्ध । ज्यों=समान । बाँध परा=बंधन से घिरा पशु । चेतन=जीव, प्राण । रिक्त मात्र=खाली । भव=संसार । न तरा=पार नहीं हुआ ।

भावार्थ—आज मैंने वृद्धावस्था का रूप देखा है। क्या एक दिन मेरी यशोधरा भी इसी रूप को प्राप्त होगी। हाय ! उसका यह निखरे हुए विशुद्ध सोने के समान मनोहर रूप क्या मिट्टी में मिल जायगा ? क्या आज मेरे जीवन का यह हरा-भरा उपवन सूख जायगा ? बंधन में घिरे हुए पशु की भाँति यह मानव-जीवन सौ-सौ रोगों का शिकार बना हुआ है।

यदि मेरे रहते हुए मेरे प्राण निकल जाते हैं, मेरा जीव युक्त शरीर निष्प्राण बन जाता है, तो मेरे जीवन को धिक्कार है। क्या जीवन का सुन्दर दीखने वाला बाहरी रूप अन्दर से थोथा है ! मेरा जीवन सचमुच व्यर्थ ही जायगा यदि मैंने इस भवसागर को पार नहीं किया (यदि मैंने इस नश्वर शरीर को अमरत्व प्रदान करने की शक्ति प्राप्त नहीं की)।

× × ×

पड़ी रह तू .... कोई शुक्ति।

शब्दार्थ—भाव-मुक्ति=सांसारिक भोग-विलास । मानस-हंस=मन रूपी हंस युक्ति=उपाय । मुक्ताफल=मुक्ति रूपी मोती । निर्द्वन्द=बिना किसी डर के, निशंक । शुक्ति=सीप ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे मेरी सांसारिक भोग विलासों की वस्तु तुम यहीं पड़ी रहो।

तुम्हें त्याग कर आज मैं मुक्ति के मार्ग पर प्रस्थान कर रहा हूँ। मुझे तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। मुझे तो बस इस संसार से मुक्ति चाहिए। मेरा मन रूपी हंस मुक्ति रूपी मोतियों को ही चुनेगा। इसके अतिरिक्त उसके लिए अन्य कोई उपाय नहीं हो सकता। अन्य सांसारिक पुरुषों का मन ही सीप रूपी निस्सार वस्तुओं में उलझा रहेगा।

× × ×

प्रियतम तुम रसमय मन भाए।

शब्दार्थ—श्रुतिपथ=वैदिक रीति से। आए=पति बनकर जीवन में आए। अधर कपाट=होठों के किवाड़, शांत बनी रही। हास-विलास=आनन्द केलि। दृष्टि मार्ग=आँखों की राह, देखते ही देखते। रसमय=आनन्द से भरे हुए। मन भाए=मन को भले लगने वाले।

भावार्थ—यशोधरा अपने पति सिद्धार्थ को सम्बोधन करती हुई कहती है कि हे स्वामी तुम वैदिक रीति से पति बनकर मेरे जीवन में आए हो। मैंने तुम्हें अपने हृदय में स्थान दिया और शांत बनी रही। भाव यह है कि तुम्हें पाकर मुझे किसी बात का अभाव न था। परन्तु क्या मेरी आनन्द क्रीड़ाएँ तुम्हें मेरे पास रख सकीं? आनन्द से भरे हुए मेरे मन को भाने वाले हे: स्वामी! तुम देखते ही देखते मेरे जीवन में से निकल गए।

प्रियतम तुम से आए।

शब्दार्थ—निश्वास=दुःख भरी सांसें, आहें।

भावार्थ—हे स्वामी तुम्हें मैंने वेदों द्वारा बताई गई रीति से पति रूप में वरण किया है। (परन्तु आज तुम मुझे छोड़कर चल दिए।) यशोधरा भला अब क्या कर सकती है? तुम कहीं भी जाकर रहो, परन्तु तुम्हारे वियोग में मेरे हृदय से निकलने वाले ये निश्वास: एक दिन तुम्हें अवश्य मेरे पास खींच लायेंगे। (क्योंकि मैं तुम्हारी अर्द्धाङ्गिनी हूँ।)

हे स्वामी शास्त्रोक्त रीति से तुम मेरे पति पति बने हो।

× × ×

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चेरी भी वह तुष्ट हो।

शब्दार्थ--चेरी=दासी । प्रभु=स्वामी, सिद्धार्थ । मानी=मान करने वाला रूठने वाला । अवला जीवन=असहाय नारी जीवन । आंचल=स्तन । परिपुष्ट=स्वस्थ । पानी=यहाँ आँसुओं से तात्पर्य है । रुष्ट=नाराज़, क्रोधित । तुष्ट=प्रसन्न ।

भावार्थ—यशोधरा कहती है हे स्वामी जब तुम मेरे पास थे तब मैं तुम्हारी रानी थी परन्तु आज तुम्हारे चले जाने पर तो मैंने तुम्हारी दासी होने का भी अधिकार खो दिया है । हे उदार हृदयी स्वामी तुमने मुझे यह मान करने वाला हृदय क्यों दिया ? (जिससे आज तुम्हारे द्वारा इस प्रकार अकेली छोड़ जाने पर मैं क्षुब्ध हूँ) । हमारा यह नारी जीवन तो इसी प्रकार करुणा और दया से भरा हुआ है । अपने आँचल के दूध से एक ओर जहाँ अपने पुत्रों को दूध पान कराती हुई वे अपने मातृत्व का गौरव प्रकट करती है वहाँ पति के दुख में अश्रु दान करती हुई अपने पत्नित्व का परिचय देती हैं ।

हे स्वामी मेरा यह राहुल मेरे दूध का पान करके परिपुष्ट और सुन्दर बने । तुम्हारे लिए तो आज मेरी आखों में केवल आँसू बचे हैं । (भाव यह है कि तुम्हारे वियोग में मैं सदैव रोती रहती हूँ) । यशोधरा कहती है कि हे स्वामी मेरे इन आँसुओं को पाकर तुम भले ही प्रसन्न अथवा क्षुब्ध बनो ।

× × ×

यह छोटा-सा चन्द खिलौना ।

शब्दार्थ—छौना = छोटा बालक । उज्ज्वल = सुन्दर । सलौना = सुन्दर । टौना=जादू । आर्यपुत्र=सिद्धार्थ ।

भावार्थ—यह मेरा छोटा सा राहुल कितना सुन्दर, कितना कोमल और कितना मधुर है । इसने आकर जैसे मेरे में जादू कर दिया है । इसे पाकर क्यों न मैं अपने जीवन को हास्य-रुदन के संगीत में डुबो दूँ । हे आर्यपुत्र मेरे यहाँ आओ तो सही, राहुल के रूप में, मैं तुम्हें सचमुच ही चन्द्रमा के समान सुन्दर खिलौना भेंट में दूँगी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

× × ×

झँकार

अच्छी आँख   करें बैठ रँगरेली।

शब्दार्थ—आँख मिचौनी=लुकाछिपी का खेल । रस=आनन्द । अनायास=सरलता से, बिना प्रयास के । रंगरेली=केलि-क्रीड़ा ।

भावार्थ—हे प्रभु यह आँख मिचौनी का खेल तुम खूब खेल रहे हो। तुम प्रत्येक बार छिप जाते हो और मुझे अकेली ही तुम्हें खोजना पड़ता है। इसमें तुम्हें भला क्या आनन्द मिलता है कि मैं तुम्हारी खोज में इधर-उधर भटकती हुई फिरूं और तुम किसी एकांत स्थान पर जाकर छिप जाओ। यदि मैं किसी स्थान पर छिप जाऊँ तो तुम बड़ी सरलता से बिना किसी प्रयास के मुझे खोज निकालो। परन्तु मेरे लिए तो कोई ऐसा स्थान भी नहीं है जहाँ जाकर छिप जाऊं, क्योंकि प्रत्येक स्थान पर तो तुम विद्यमान हो। अब इन बातों को छोड़ो। आओ साथ बैठकर आनन्द मनाएं। (यहाँ भाव यह है कि कवि अपने को जीवात्मा का रूप देता है। यह जीवात्मा प्रत्येक भव में ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए भटकती फिरती है। इसलिए कवि ने यह भाव दर्शाया है कि जीवात्मा का तादाम्य ब्रह्म से शीघ्र हो)।

अच्छी आँख   मिचौनी खेली।

शब्दार्थ—भार पटककर=बोझ डालकर। सटकूं=भाग जाऊं, चली जाऊं। अटकूं=अटकी रहूँ। अन्तर=हृदय। पीत पट=पीले वस्त्र। चेली= दासी, शिष्या।

भावार्थ—तुम अच्छी आँख मिचौनी खेल रहे हो। जब तुम सब स्थानों में स्थित हो तब तुम्हें ढूँढने के लिए मुझे सब स्थानों पर भटकने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब तो मैं जिस स्थान पर चाहूँ वहीं पर अपना जीवन भार तुम पर डाल कर निर्भय बन सकती हूँ। तुम केवल बाहरी दुनिया में ही नहीं, मेरे हृदय में भी स्थित हो। अतएव मेरे लिए यह भी आवश्यक नहीं कि मैं बाहर के संसार में उलझी रहूँ। अपने हृदय के अंधकार में ही, क्योंन तुम्हारा पीताम्बर पकड़लूं स्वयं अपनी शिष्या बनकर क्यों न तुम्हारी खोज करूं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(अपनी चेली से कवि का भाव यह है कि जब जीवात्मा स्वयं भगवान् का अंश है तब वह स्वयं ही भगवान की खोज कर सकती है उसे अन्य किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है ।

हे प्रभु तुम यह कैसा आँख मिचौनी का खेल खेल रहे हो ।

कुणाल गीत

परिपाक हो पाया निर गई ।

शब्दार्थ—परिपाक=पूर्णता । रंगशाला = वह स्थान जहाँ नाटक किया जाता है । यवनिका=पर्दा । नट-नटी=नाटक में कार्य करने वाले स्त्री-पुरुष पात्र । पटी=नाटक का पर्दा । कृषि=खेती । तिमिर=अँधेरा । निर गई=समाप्त होगई ।

भावार्थ—(कुणाल गद्दी पर बैठने वाला था किन्तु विमाता तिष्यरक्षिता द्वारा अन्धा बनाये जाने के कारण उसका जीवन एकाएक बदल गया । जीवन नाटक के इसी परिवर्तन को कवि ने इन पंक्तियों में दर्शाया है ।) अभी तो नाटक के रस का पूर्ण रूप से विकास भी नहीं हो पाया था कि नाटक का स्थान ही नष्ट-भ्रष्ट हो गया । नाटक के बीच में ही नाटक का पर्दा सहसा टूट कर गिर गया ।

अब वे नाटक में भाग लेने वाले नट और नटी कहाँ चले गए ? नाटक में बोले जाने वाले, बहुत दिनों से रटे जाने वाले संवाद भी अब उन्हें याद नहीं रहे । अब तो नाटक के समस्त कार्य कलाप पर्दे के पीछे छिप गए । जिस प्रकार खेती नष्ट होकर अँधेरे से घिर जाती है, उसी प्रकार नाटक के समस्त क्रिया-कलाप नष्ट होकर अँधेरे में छिप गए ।

लो बीच गिर गई ।

शब्दार्थ—काली घटा = काले बादल ।

भावार्थ—अब तो बीच नाटक में ही पर्दा सहसा छूट कर गिर गया । दीपकों का झिलमिल करता हुआ सुन्दर समूह क्षण भर में ही बुझ गया । यह कौन-सी आँधी चलने लगी है जिसके द्वारा काली घटाएं घिरने से चारों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओर अंधकार छा गया है। [भाव यह है कि कुणाल के अंधे हो जाने से चारों ओर दुख छागया है।]

अब तो नाटक के बीच में पर्दा सहसा छूट कर गिर गया।

× × ×

मैं नई पहेली बूझ रहा।

शब्दार्थ—बूझ रहा=ज्ञात कर रहा। सूझ रहा=मालूम हो रहा। अंध-सिंधु = अन्धपन के अंधकार का समुद्र। अमृत भागी=मेरे अमृत का पात्र। निर्जविष = अपने दुख। जूझ रहा = लड़ रहा।

भावार्थ—मैं एक नई पहेली ज्ञात कर रहा हूँ अर्थात् मुझे अब एक नया ज्ञान प्राप्त हो रहा है। यद्यपि अन्धा होने के कारण मुझे बाहर कुछ भी नहीं दिखलाई पड़ रहा है, फिर भी मेरी अन्धी आँखें हृदय के आलोक को भली-भाँति देख रही हैं। अतएव अब मैं अपने अन्तर को ही टटोलूंगा और अन्धे-पन के अन्धकार से भरे हृदय रूपी समुद्र के रत्नों को निकालूँगा। इन रत्नों में मुझे जो अमृत प्राप्त होगा उसका पात्र वही बनेगा जो अपने जीवन की पीड़ाओं से संघर्ष कर रहा है। भाव यह है कि अपनी अंधी आँखों द्वारा अपने हृदय से जो ज्ञानामृत प्राप्त करूंगा उसका लाभ केवल वे ही उठा सकेंगे जो मेरी भाँति जीवन के दुखों से संघर्ष करेंगे।

मैं जीवन की इसी नवीन पहेली को ज्ञात कर रहा हूँ।

काबा

हुआ प्रकृत काबा धाम।

शब्दार्थ—प्रकृत = वास्तविक, निर्विकार। विध्वस्त=नष्ट। प्रशस्त=भाव्य, सुन्दर। अभिराम=सुन्दर। काबा धाम=मुसलमानों का धार्मिक स्थान।

भावार्थ—जिसका वास्तिविक या यथार्थ रूप नष्ट हो जाता है, उसे पुरुष ही पुनः भव्य और सुन्दर बना सकता है। अतएव नष्ट हुये काबाधाम को पुरुषों के हाथ पुनः सुन्दर और भव्य रूप प्रदान हुआ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसमें वह अरब समाज।

शब्दार्थ—असवद=असवद नाम का काला पत्थर जो मुसलमानों में अत्यंत पवित्र समझा जाता है। संस्थापित=स्थापना करना।

भावार्थ—उस कावा धाम में इस पवित्र असवद पत्थर को जिसका स्पर्श मात्र ही अत्यंत कल्याण प्रद था, कौन लगावे ? सभी उसकी स्थापना अपने हाथों से करना चाहते थे। इसी बात पर अरब समुदाय आपस में झगड़ने लगा।

जन जन

कुल नाश।

शब्दार्थ—वड़प्पन मार=अपने मुँह अपनी डींग मारना। जता उठा= बतलाने लगा। पथ प्रकाश=सच्चा मार्ग बतलाए। यादवों =श्रीकृष्ण की यादव जाति।

भावार्थ—वहाँ उपस्थित सभी जनसुदाय असवद पत्थर की संस्थापना का अधिकार जता कर अपने बल वैभव का बखान करने लगे। ऐसे कठिन समय में कौन सच्चा मार्ग वतला सकता था, जिससे यादवों की भांति भी उनके कुल का भी नाश न हो जाय।

"वीर बन्धुओं

था नाद।

शब्दार्थ—अधीर=व्याकुल। अशुभ=दुखदायी, अमङ्गल कारी। मान्य= आदरणीय। मुहम्मद=मुसलमानों के धार्मिक नेता। नाद=स्वर।

भावार्थ--इतने में अरबों में आदरणीय मुहम्मद साहब का गम्भीर स्वर गूंजने लगा कि है वीर वन्धुओं इतने अधीर मत बनो और इस अमङ्गलकारी पारस्परिक झगड़े को छोड़ दो।

प्रभु समक्ष

सभी समान।

शब्दार्थ -प्रभु समक्ष=प्रभु के सामने। टुक=थोड़ा। मौन=शांति। तने न भौंह।=क्रोधित नहीं बने।

भावार्थ- तनिक शांत बनकर विचार करो कि उस ईश्वर के सामने कौन बड़ा कोन छोटा है। उसके लिये तो समस्त जनसमुदाय एक समान ही है। तुम लोगों को परस्पर क्रोधित होकर युद्ध की ओर उन्मुख नहीं होना चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धीर, दिखाओ — पाओ त्राण।"

शब्दार्थ—धीर=गम्भीर। विवेक=बुद्धि, चातुर्य। पावन पाषाण=पवित्र पत्थर। त्राण=मुक्ति।

भावार्थ—हे वीर लोगों ऐसे अवसर पर अपनी गम्भीर चातुरी दिखलाओ। एक बड़ी सी चादर मंगवाकर उस पर इस पवित्र पत्थर को रखो। तदुपरान्त चादर को एक साथ उठा कर इस झगड़े से छुटकारा पाओ।

"साधु मुहम्मद — संस्थापन कार्य।"

शब्दार्थ—साधु=सज्जन। सुयुक्ति=सुन्दर उपाय। संस्थापन कार्य=स्थापना का कार्य।

भावार्थ—मुहम्मद साहब का ऐसा कथन सुनकर समस्त अरब समुदाय कह उठा, हे महात्मा मुहम्मद तुम्हारा उपाय निश्चय ही सुंदर है। इसने हमें आज संकट से उबार लिया। अब इस संस्थापन कार्य में सभी लोग अनिवार्य रूप से सहयोग देगें, परंतु यह संस्थापन का कार्य तुम्हें ही करना होगा।

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रियप्रवास (मालिनी छंद)

प्रिय पति — नेत्र तारा कहाँ ?

शब्दार्थ—दुख जल निधि=दुख रूपी समुद्र। लख=देख कर। आज लौं=आज तक। नेत्र तारा=आँखों की पुतली।

भावार्थ—(यशोदा नंद से कहती है) हे स्वामी मेरा प्राणों से भी अधिक प्रिय वह श्रीकृष्ण अब कहां चला गया है? इस दुखरूपी समुद्र में से मुझे उबारने का जो एकमात्र सहारा है, जिसके मुख को देखकर मैं आज तक जीवित रह सकी हूँ, वह मेरा हृदय, मेरे नैनों का तारा अब कहाँ है?

पल पल जिसके मैं — नेत्र वाला कहां है?

शब्दार्थ—पल पल=हर घड़ी, पथ=मार्ग, निशिदिन=दिन रात, उर=

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय। सोहती=शोभित होती। मुक्त-माला=मोतियों की माला। नव नलिनी=नए कमल।

भावार्थ--(जब कहीं वह बाहर घर से बाहर खेलने चला जाता था) तब जिसके आने के मार्ग को क्षण क्षण में निहारा करती थी। रात दिवस में जिसका ध्यान किया करती थी। जिसके हृदय पर मोतियों की माला शोभायमान होती थी वह नए कमल के समान नैत्रों वाला मेरा श्रीकृष्ण कहाँ है।

मुझ विजित जरा   बाला कहाँ है?

शब्दार्थ--जरा = वृद्धावस्था। निधनी = निर्धन, लोचनों=आँखों। सजल=जल से भरे। जलद=बादल। कांति=शोभा।

भावार्थ--मेरी वृद्धावस्था का जो एक मात्र सहारा है। जो कि बड़े ही अद्भुत अनौखे रत्न के समान है, जो कि मेरा सर्वस्व है। मुझ निर्धन का सबसे बड़ा धन है और जो मेरी आँखों की ज्योति है। जो जल से भरे हुए श्यामल बादलों के समान नील कांति वाला है वह मेरा श्रीकृष्ण कहाँ है?

प्रतिदिन जिसको   अंकवाला कहाँ है!

शब्दार्थ—अंक = गोदी, नाथ = स्वामी निज = अपने, सकल=समस्त। कुअङ्कों=दुर्भाग्यों, कीलती थी=नष्ट करती थी। किसलय=नव कोंपल। अंग-वाला=शरीर वाला।

भावार्थ—हे स्वामी प्रतिदिन जिसको अपनी गोदी में लेकर अपने समस्त दुर्भाग्यों को नष्ट करती हुई अपने जीवन को सौभाग्य शाली बनाती थी। जिसको कि पीत वस्त्र अत्यंत प्रिय था, तथा जिसका शरीर नव कोंपल के समान कांति वाला था वह श्री कृष्ण अब कहाँ है?

बर बदन   का कहाँ है?

शब्दार्थ :—वर-बदन--सुंदर मुख। विलोके=देखकर। फुल्ल=खिला हुआ, फूला हुआ, अंभोज=कमल। कर तल गत होता=हाथ के नीचे होता, वश में होता। व्योम—आकाश मृदु रव=मुधुर स्वर। मधु-मय-कारी=अमृत करने वाला। मानसों=हृदयों।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ :—कमल के समान खिले हुए जिससे सुन्दर मुख को देख कर आकाश का चंद्रमा की वश में हो जाता था। जिसका मधुर स्वर सूखी नसों में रक्त बन कर दौड़ता था (निष्प्राणों में स्पंदन करता था।) वह हृदयों में अमृत भरने वाला अब कहाँ है ?

रसमय वचनों   की कहाँ है ?

शब्दार्थ :—रसमय=रस से भरे। सदन=घर। बिच=बीच में। मंदाकिनी=आकाश गंगा। श्रुत=कान। सुधा=अमृत। नव खनि=नवीन खान। मंजुता=सुन्दरता।

भावार्थ :—जो सदैव अपने रसभरे मीठे वचनों से हे स्वामी इस घर के बीच स्वर्ग की मंदाकिनी बहाता था। हमारे कानों में जैसे वह अमृत की बूंदे टपकाता था। वह मनोहर सुंदरता की नव खान अब कहाँ है ?

स्वकुल जलज   राम आता कहाँ है ?

शब्दार्थ :—स्वकुल=अपने कुल का, जलज=कमल। समुत्फुल्लकारी=पूर्ण रूप से विकसित। मम=मेरा यामिनी=रात्रि, विनाशी=विनाश करने वाला। व्रज जन विहगों=व्रज के लोग रूपी पक्षियों, वृंद=समूह। मोददाता=प्रसन्नता प्रदान करने वाला। दिनकर=सूर्य।

भावार्थ :—जो हमारे कुल रूपी कमल को पूर्ण विकसित करने वाला है, (कमल सूर्य की किरणों से खिलता है।) मेरी महा निराशा से भरी रात्रि का जो विनाश करने वाला है, जो पक्षी रूपी व्रज निवासियों के समूह को आनंद प्रदान करने वाला है ऐसा सूर्य के समान शोभा पाने वाला श्रीकृष्ण कहाँ है ?

राधा रूप-वर्णन (शार्दूल विक्रीडित छंद)

रूपोद्यान   माधुर्य सन्मूर्त्ति थीं

शब्दार्थ—रूपोद्यान=रूप के उद्यान की, प्रफुल्ल=खिली हुई। कलिका=कली। राकेन्द्र=पूर्णिमा का चन्द्र। बिम्बानना=मुख की छवि। तन्वंगी=इकहरे शरीर वाली। कल हासनी = मधुर मुस्कराने वाली। सुरसिका = सरस सुन्दर। क्रीड़ा-कला = आमोद प्रमोद की कला। पुत्तली = पुतली। शोभा = सुन्दरता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वारिधि = सागर, समुद्र । अमूल्य = मूल्यवान कीमती । मणि = रत्न ।
समान । लावण्य लीलामयी =अत्यधिक सुन्दरता से युक्त । मृदुभाषिणी =
बोलने वाली । मृगदृगी = हिरन के से नेत्र वाली । माधुर्य सन्मूर्ति =
से सनी हुई मूर्त्ति ।

भावार्थ---श्री राधा की शोभा सौंदर्य के उपवन की विकसित होती
कली के समान है । उनके मुख का प्रतिबिम्ब पूर्णिमा के धवल चन्द्रमा
प्रकाश के समान है । वे इकहरे शरीर वाली, तथा अत्यन्त सरस सौंदर्य
सागर के अत्यन्त मूल्यवान रत्न के समान एवं हिरनी के समान नेत्र वाली
वे सुन्दरता में सनी हुई एवं आमोद प्रमोद में मग्न रहने वाली मूर्त्ति के
हैं । वे अत्यन्त मधुर वचन बोलने वाली और मधुर मुस्कराने वाली हैं ।

फूले कंज समान मानसोन्माद

शब्दार्थ :---कंज = कमल । मंजु = सुन्दर । दृगता = आँखों की
मत्तता कारिणी = उन्मत्त करने वाली । सोने सी = सोने के समान । कमनी
सुन्दर । काँति = चमक, सुंदरता । दृष्टिउन्मेषिणी = दृष्टि को खिला
वाली । मुग्धता-मूर्त्ति = मुग्ध करने वाली मूर्त्ति । कुंचित = घुंघराले
लम्बवान=लम्बी अलकें, केश । मानसोन्मादिनी=मन को उन्मत्त बनाने वा

भावार्थ---खिले हुए कमल के समान विकसित आँखों की शोभा हृद
उन्मत्त बनाने वाली है । सोने के समान उज्ज्वल राधा के शरीर की सु
दृष्टि को मोहने वाली है । उसकी मुस्कराहट की शोभा मन को विमुग्ध
वाली है । उसके लम्बे, काले, घुंघराले बाल मस्तिष्क में उन्माद करने वाले

नाना भाव विभाव आनन्द आँदोलि

शब्दार्थ---नाना-भाव-विभाव-हाव कुशला = भाँति भाँति के हाव भ
से पूर्ण शृंगार चेष्टाओं के करने में कुशल । आमोद आपूरिता = आ
और हर्ष से भरी हुई । लीला-लोल कटाक्ष पात निपुण = चंचल गति से
नचाने में अत्यन्त चतुर । भ्रू भंगिमा = भौंहों का संचालन । पंडिता =
वादित्रादि = विविध प्रकार के बाजे इत्यादि । समोद = आनन्द सहि
वादन परा = बजाने में चतुर । आभूषण भूषिता = विविध प्रकार के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आभूषणों से सजी हुई । सुमुखी=सुंदर मुख वाली । विशाल नयना = विशाल नेत्रों वाली । आनन्द आँदोलिता = आनन्द से तरंगित रहने वाली ।

भावार्थ—श्री राधा भाँति भाँति के हाव भावों द्वारा विविध प्रकार की शृंगार चेष्टाओं के करने में अत्यन्त कुशल हैं । आनन्द और हर्ष से वे भरी हुई हैं । चंचल गति से नेत्रों को नचाने में, भौंहों के संचालन में विविध प्रकार के सुंदर बाजे बजाने में वे अत्यन्त चतुर हैं । वे अत्यन्त सुंदर मुख वाली हैं । उनके नेत्र अत्यंत विशाल हैं । विविध प्रकार के आभूषणों से वे सजी हुई हैं ।

लाली थी करती कामांगना मोहिनी ।

शब्दार्थ—लाली=ललाईपन, लालिमा । सरोज पग=कमल के समान चरण । भूपृष्ठ=भूमितल । भूषित=शोभायमान बनाने वाली । बिम्बा=एक प्रकार का फल जो पकने पर लाल होता है । विद्रुम = मूंगा । निदरती = तिरस्कार करती थी । रक्तता=लालिमा, ललाई । ओष्ठ = होठ । हर्षोत्फुल्ल= हर्ष से खिली हुई । मुखारविन्द=कमल के समान मुख । गरिमा=महिमा, गौरव । सौन्दर्य=सुन्दरता । आधार=सहारा । कमनीय=सुन्दर । कांत=मनोहर । छवि=शोभा । कामांगना=कामदेव की पत्नी रति । मोहिनी=मोहने वाली, सुन्दरी ।

भावार्थ—कमल के समान चरणों की रक्तिम आभा भूतल को शोभायमान बना रही थी । होठों की अरुणिमा, लाल मूंगा और सुन्दर बिम्बाफल की शोभा का भी तिरस्कार कर रही थी । हर्ष से खिलते हुए कमल के समान सुन्दर मुख की महिमा आदर्श सुन्दरता की वस्तु थी । राधा की सुन्दर छबि सचमुच कामदेव की पत्नी रति के समान विमुग्ध बनाने वाली थी ।

सद्वस्त्रा सुदलंकृता रत्नोपमा ।

शब्दार्थ—सद्वस्त्रा=सुन्दर वस्त्रों से । सदलंकृता=आभूषणों से भली-भाँति सजी हुई । गुणयुता=गुणों से युक्त । सर्वत्र=सब जगह । सम्मानिता = आदर पाने वाली । जनोपकार-निरता=मानव समुदाय की भलाई में लगी हुई ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सच्छास्त्र=अच्छे शास्त्र। चिंतापरा=ध्यान में लीन रहने वाली। सद्भावाति
शुभ भावों से भरी हुई। अनन्य हृदया=एकनिष्ठ रहने वाली, एक
श्रद्धा रखने वाली। सत्प्रेम संतोषिका=उच्च प्रेम का पोषण करने वा
सुमना=अच्छे मन वाली। प्रसन्नवदना=प्रसन्न मुख वाली स्त्री। स्त्री जाति
पमा=स्त्री जाति में उत्तम रत्न के समान।

भावार्थ—श्री राधा सुन्दर वस्त्रों से सदैव भली भाँति सजी हुई र
वे समस्त गुणों से युक्त और प्रत्येक स्थान पर आदर पाने वाली थीं।
मानव समुदाय यहाँ तक कि रोगियों, वृद्धों की सेवा-सुश्रुषा और भल
रहने वाली थीं। अच्छे शास्त्रों के अध्ययन में वे मग्न रहने वाली थीं।
हृदय शुभ विचारों से भरा हुआ था। वे एकनिष्ठ रहने वाली थीं तथा
प्रेम का पोषण करती थीं। सुन्दर हृदय और हर्ष से उत्फुल्ल मुख वाली
सचमुच स्त्री जाति में अत्यन्त उत्तम रत्न के समान थीं।

वैदेही बनवास

शीतकाल था ... मुँह मुस

शब्दार्थ—वाष्पमय=भाप से भरा हुआ। व्योम=आकाश। अवनी
पृथ्वी पर। प्रभूत=बहुत अधिक मात्रा में। प्रकृति वधूटी=प्रकृति रूपी
मलिन वसना=मैले वस्त्रों से युक्त। प्राची=पूरब।

भावार्थ—पृथ्वीतल पर अत्यधिक कुहरा भरा होने से आकाश भ
भरा हुआ मालूम देता था। उस समय शीतकाल का समय था। प्रकृति
दुखी और मैले वस्त्रों के आवरण में लिपटी हुई किसी नव-वधू की भाँति
पड़ती थी। पूर्व दिशा मुँह खोलकर मुसकरा नहीं रही थी।

उषा आई ... उससे अ

शब्दार्थ—सूर्य निकलने से पूर्व आकाश पर जो लालिमा दृष्टिगत
है, उसे उषा कहते हैं। विहंस = हँसना। रागमयी = प्रेममयी। विरागमय
उदासीन। विकस=विकसित, फूटना। दिगगंना=दिशा रूपी स्त्री। वर-व
सुन्दर मुख।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ---उषा यद्यपि आकाश में छा रही थी, परन्तु वह शाँत थी। उसमें हास्य नहीं था। प्रेम के आनन्द से पूरित होकर भी वह उदासीन बनी हुई थी। दिशा रूपी स्त्रियों का सुन्दर मुख भी प्रफुल्लित नहीं हो पाया था। न मालूम उनसे ऐसी कौनसी (दुख भरी) बात किसी ने कह दी थी ?

ठण्डी साँस ... पहरा पड़ा।

शब्दार्थ—समीरण = हवा। वैभव = ऐश्वर्य, पाला पड़ना = तुषार पात होना, नष्ट भ्रष्ट होना। दिन नायक = सूरज। कुसमय = बुरे समय का।

भावार्थ—वायु भी दुख के कारण ठण्डी साँसें ले रही थी (शीतकाल में वायु ठण्डी होती है) प्रभात काल का जो अतुलनीय वैभव मय सौंदर्य था उस पर जैसे तुषारपात हो गया हो। ऐसे अवसर पर सूर्यदेव भी प्रगट होना नहीं चाहते थे, मानो उन पर भी आज के इस बुरे अवसर का प्रतिबन्ध लग गया हो।

हरे भरे तरुवर ... न निकालते।

शब्दार्थ—तरुवर = वृक्ष। मन भरी = उदासीन भाव से। कलरव = शोर। खगवृन्द = पक्षियों का समूह। खोतों = घोंसलों।

भावार्थ--हरे भरे वृक्षों के समूह उदासीन भाव से चुपचाप खड़े हुए थे। काँपते हुए पत्ते आँसू गिरा रहे थे। (शीतकाल में प्रातः काल के समय पत्ते जब काँपते हैं तब उनसे ओस की बूंदें गिरती हैं।) पक्षियों का समूह शोर नहीं कर रहा था और न वे घोंसलों से मुँह ही निकाल रहे थे।

कुछ उजियाला ... स्वच्छता की कही।

शब्दार्थ-- तिमिर = अंधकार। रवि = सूरज। किरणावलि = किरणों का समूह। दिवस स्वच्छता की कही = दिन का प्रकाश कर दिया।

भावार्थ—कभी थोड़ा प्रकाश होने लगता फिर अंधेरा घिरने लगता। यह अवस्था लगभग दो घण्टे तक रही। इसके उपरान्त सूर्य की किरणों के समूह ने शक्तिशाली बन कर चारों तरफ प्रकाश बिखेर दिया, मानो उन्होंने किरणों के द्वारा दिवस को स्वच्छ बनाने की सिफारिश की हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुहरा टला .... भर गई भव्यता

शब्दार्थ—दिन नायक = सूरज । निज दिव्यता = अपनी उत्तमता । कल-कल = सजन-समुदाय के सुन्दर स्वर से । आकलित = भर गया । कु नगर = समस्त नगर । भवन = घर । भूरि = अधिक, बहुत । भव्यता = सुन्दरता ।

भावार्थ—(सूर्य निकलने से) कुहरा हट गया । अवध की नगरी अनु शोभा से जगमगाने लगी । सूर्य ने अपनी उत्तमता का महान परिचय दिया जन समुदाय के मधुर स्वर से समस्त नगर भर गया । (सूर्य निकलने पर) घ घर में सुन्दरता भर गई ।

अवध-वर-नगर .... निमज्जित हुआ

शब्दार्थ—अवध-वर-नगर = अवधपुरी का सुन्दर नगर । अश्वमेध = ए बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बाँधकर उसे भू-मण्डल में घूमने लिए छोड़ देते थे, तदुपरान्त उस घोड़े को मारकर उसकी चर्बी से हवन कि जाता । समधिक = अत्यधिक । सज्जित हुआ = शोभायमान हुआ, सजा से भर गया । जनक-नंदिनी = जनक की पुत्री सीताजी । प्रमोद = प्रसन्नता पाथोधि = समुद्र । निमज्जित = डूबा हुआ ।

भावार्थ—अश्वमेध यज्ञ के उपलक्ष्य में सुन्दर नगर अयोध्या अत्यधि सुन्दरता से भर गया । जन समुदाय श्री सीताजी का शुभागमन सुनकर आनं में डूब गया ।

आँसू

बाढ़ में जो .... कढ़े आँसू

शब्दार्थ—बाढ़े = जल का आवेग । बढ़ बोले = तेजी से निकले । बां आँसू = अधिक निकले । कलेजा न काढ़ पाया = किसी की सहानुभूति न प्राप्त की ।

भावार्थ—यदि ये आँसू बाढ़ की भाँति तीव्र आवेग से निकले, फिर हृदय के मनोवेग को स्पष्ट न कर सके । तब इनका तेजी से आँखों में से नि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लना व्यर्थ ही हुआ। आंसुओं का आँखों से गिरने से लाभ ही क्या था यदि वे किसी की सहानुभूति ही नहीं प्राप्त कर पाए।

अड़ अगर बार निकल पड़े आँसू

शब्दार्थ—अड़ = हठ। अड़े = रुके। जी की कसर निकालना = क्रोध, शोक, दुःख आदि के आवेग को रोकर शाँत करना।

भावार्थ—यदि ये आँसू हठ के ही कारण निकलते हैं, तो फिर अपनी हठधर्मी से क्यों नहीं आँखों में रुके रहे। जब इन आँसुओं से मन का आवेग ही शान्त नहीं बना तब आँखों से इन आँसुओं का निकलना व्यर्थ ही रहा।

फेर में गिरे आँसू।

शब्दार्थ—फेर में = धोके में। फिराये = लौटाए। फिरे = लौटे।

भावार्थ—धोके में डालने वाले इन आँसुओं को पुनः हमने लौटाना चाहा। नीचे गिरने से रोका, परन्तु ये आँसू आँखों में पुनः लौट नहीं सके। समझ में नहीं आता कि किसी की नजरों से गिरने पर आँसू क्यों नीचे गिराये जाते हैं।

हैं छलकते भरे आँसू।

शब्दार्थ—छलकते = बूंद रूप में नीचे गिरना। उमड़ उमड़ पड़ते = घूम घूम कर छाना। तरह = प्रमुखता। बेतरह = बहुत अधिक मात्रा में!

भावार्थ—आँखों से उमड़ उमड़ कर छलकते हुए आँसू नीचे गिर रहे हैं, फिर भी उन्हें नीचे गिरने का डर नहीं है। न मालूम आँखें उन्हें क्यों नहीं प्रधानता देती, (क्योंकि वह उन्हें नीचे गिरा रही है।) जब कि आँखों में बहुत अधिक मात्रा में आँसू भरे हुए हैं।

तुलसी

बन राम रसायन तुलसी की कला।

शब्दार्थ—राम रसायन = संसार को भवसागर से पार करने वाली राम रूपी औषधि। रसिका = रस का आनन्द लेने वाली। रसना = जीभ, रसिकों=

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमीजनों । सफला = सफल हुई । अवगाहन = मग्न होना । मानस = तुलसी-दास जी द्वारा रचित रामायण । जन मानस = जनता का हृदय । मल = मैल कलुषिता । पावन = पवित्र । भाव = विचार । भावुक = भावना करने वाला भावुकता = भावना प्रधान । विलसे = आनंदित हुए । लसी = शोभायमान हुई ।

भावार्थ—(तुलसीदासजी कृत रामायण) राम रूपी रसायन का आनंद देने वाली है । जिसे पाकर रसिक जनों की जिह्वा सफल बनी है । जिसमें मग्न होकर जन समुदाय के हृदयों का कलुष धुल गया है । जो कि पवित्र विचारों का सुन्दर रूप है तथा जिससे शुभ विचार सोचने वाली भावुकता का भी भला हुआ है । ऐसी कविता करके तुलसीदासजी आनंदित हुए और कविता भी तुलसी की अमर कला को पाकर धन्य धन्य हो गई ।

जीवन मरण

(कवित्त)

पोर-पोर में तोड़ बैठी है

शब्दार्थ—पोर-पोर में है भरी = पोटुए-पोटुए में भरी हुई अर्थात् शरीर के प्रत्येक अङ्ग में भरी हुई । तोर-मोर = तेरा मेरा । बान = आदत । मुंह चोर = मुंह छिपाना । आन-बान = इज्जत, मर्यादा । मुँह की न खाते रहें = असफलता ही हाथ क्यों न रहे । मुँह मोड़ बैठी है=रूठ गई है । कस कमर=कमर कस के, बुरी तरह से । होड़ कर = होड़ करती हुई, हठ से । छूट चलती है आँख = आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगती है । दोनों ही गई फूट = भला बुरा कुछ नहीं सूझता । पांव तोड़ बैठी है = जम कर बैठ गई है ।

भावार्थ—(हिंदुओं के) शरीर के प्रत्येक अङ्ग अङ्ग में मेरे तेरे की भावना भरी हुई है । सब लोग अपनी मर्यादा को भूलकर अपना मुंह छिपाए बैठे हुए हैं । वे भला बार बार असफलता का मुंह क्यों न देखते रहें जब कि उनका पुरुषत्व उनसे रूठा हुआ है । 'हरिऔध' कवि कहते हैं कि उन्हें (हिंदुओं) बुरी तरह से क्यों नहीं सताया जायगा जब कि हठपूर्वक कायरता ने उनका नाता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपने से जोड़ लिया है। आज हिंदुओं की आँखें फूट गई हैं उन्हें कुछ भी भला बुरा नहीं सूझता, फूट भी उनमें जम कर बैठ गई है। यह सब देखकर आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगती है।

चोट के बचावेंगे।

'दाब मानते हैं'

शब्दार्थ—दाब मानते हैं = आधिपत्य मानते हैं, रोब समझते हैं। बार-बार = बारम्बार नीचे झुक कर। दाँत तले दूब दिखाना = दाँतों के नीचे तिनका दबाना, दया की भीख माँगना। आँख देखने की = आँख मिलाने की। ताब = सामर्थ्य, शक्ति। आँख मूंद मूंद = आँखें बन्द कर के, बिना कुछ सोचे विचारे। हार = पराजय। हार = गले में पहनने जाने वाली फूलों की माला। यूनिटी = एकता। पाँव चाट = दूसरों के पैरों पर गिरना।

भावार्थ—हम दूसरों का आधिपत्य मानते हैं, यह भाव वे बार बार दूसरों के सामने नीचे झुक कर प्रगट करते हैं। अपनी कायरता प्रगट करते हुए वे बड़ी भली प्रकार से अपने दाँतों में तिनका दबाते हुए दूसरों से दया की भीख माँगते हैं, और इस बात को बड़े गर्व के साथ बिना कुछ सोचे विचारे आँख मींच कर दुनियाँ को बतलायेंगे। हरिऔध कवि कहते हैं कि हिंदुओं में साहस तो नाम मात्र को भी नहीं रहा है। वे तो अपनी पराजय में ही अपना सौभाग्य समझ बैठे हैं और इसीलिए उसे अपने गले का हार अर्थात् सबसे प्रिय वस्तु बनाए हुए हैं। अपनी कायरतापूर्ण रक्षा के लिए वे चोटी कटवाकर हिंदुत्व से हीन होने का सच्चा प्रमाण देंगे और सङ्गठन के नाम पर दूसरों के पैरों पर गिरेंगे।

चौपदे

लड़कियाँ।

ओस की बूँदें

शब्दार्थ—कढ़ी = निकलीं। कमल दल = कमल के पत्ते। खंजन = एक पक्षी विशेष जो शीतकाल में दिखलाई पड़ता है।

भावार्थ—कमल के पत्तों से गिरती हुई ओस की बूंद ऐसी शोभायमान होती है जैसे दो मछलियाँ पानी की बूंदें निकाल रही हों अथवा वे चाँदी से मढ़ी हुई दो अनोखी गोलियाँ हैं जिनसे खंजन पक्षियों की बालिकाएं खेल रही हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक फफोला बनकर रह गया।

शब्दार्थ—फफोला = छाला। अरमान = हृदय की इच्छाएं।

भावार्थ—इन आँसुओं के रूप में जैसे हृदय का घाव फूट कर बह गया हो अथवा हृदय में जो इतने अरमान थे वे सब आँसुओं की बूंदें बन गए हों। भाव यह है कि सारे अरमान चूर चूर हो जाने से आंखों में से आंसू निकल पड़े।

श्री जयशंकरप्रसाद

कामायनी

जीवन निशीथ केश भार।

शब्दार्थ—जीवन-निशीथ=जीवन रूपी रात्रि। अन्धकार=तम, निराशा। तुहिन=कुहरा। जलनिधि=समुद्र। वारपार=एक छोर से दूसरे छोर तक। चेतनता=जीवन शक्ति। चेतनता की किरनें=जीवन को शक्ति प्रदान करने वाली सात्विक भावनाएँ। निर्विकार=पवित्र, विकार रहित। मादक=मस्त बना देने वाला। तम=अंधकार। निखिल=समस्त। भुवन=संसार। भूमिका=यहाँ गोदी से तात्पर्य है। अभंग=पूर्ण, पूरी। मूर्तिमान=साकार, आकार सहित। प्रतिपल=प्रत्येक क्षण। परिवर्तन=बदलता हुआ। अनंग=अप्रत्यक्ष रूप में। ममता=करुणा क्षीण=पतली। अरुण=सूर्य, लाल रंग की। रेखा=लकीर। ज्योति कला=प्रकाश सुहागिनी=सौभाग्यवती स्त्री। उर्मिल=लहराती। अलकों=केशों। कुंकुम चूर्ण=रोली या सिंदूर। चिर=सदैव। निवास विश्राम=रहने का स्थान। जलद=बादल उदार=विस्तृत।

भावार्थ—जीवन रात्रि के अंधकार के समान है। जिस प्रकार संध्या होते ही अंधेरी रात्रि में आकाश के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक अन्धकार नीले समुद्र के समान फैलता है, उसी प्रकार जीवन में निराशा का गहन समुद्र भर गया है। जिस प्रकार सूर्य की अरुणिम उज्वल किरणें उस अन्धकार में छिप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाती हैं उसी प्रकार जीवन में छाई हुई निराशा में चेतनाशक्ति की उज्ज्वल और पवित्र किरणें लुप्त हो जाती हैं।

रात्रि का अन्धकार जो कि अपनी पूरी गोद में सारे संसार को भरे हुए है अर्थात् सारे संसार पर जो छाया हुआ है, वह स्वभाव से ही प्राणों को मस्त बनाने वाला है। इसी प्रकार निराशा जो मनुष्य के समस्त जीवन पर छा जाती है, वह स्वभाव से ऐसी कालिमा मयी होती है कि जिस पर छाती है, उसे ही निष्क्रिय बना देती है। परन्तु अप्रत्यक्षरूप से धीरे धीरे उसका स्वरूप भी बदलता रहता है। अतः कुछ समय के लिये अन्धकार के समान मूर्तिमान बनकर निराशा हमारी आँखों के सामने आकर खड़ी हो जाती है, परन्तु समय आने पर धीरे धीरे वह छिपती जाती है।

जिस प्रकार प्रभात काल के होते ही रात्रि के गहन अंधकार में सूर्य की किरणों का प्रकाश फूट पड़ता है, उसी प्रकार निराशा के अन्धकार से भरे जीवन में भी ममता के प्रकाश की उज्ज्वल अनुराग मयी ज्योति खिलती है। यह करुणा की भावना निराशा से घिरे प्राणी को उसी प्रकार प्रिय लगती है जैसे सौभाग्यवती महिलाओं के लहराते हुए काले केशों के बीच मांग के सिंदूर की लाल रेखा भली मालूम देती है।

ये प्राण सदैव निराशा को ही अपना विश्रामस्थल बनाए हुए हैं अर्थात् ये प्राण सदैव निराशा से घिरे रहते हैं। हे निराशा, तुम मोह रूपी बादलों की विशाल छाया हो, क्योंकि मन में जितना अधिक मोह होगा, उतनी ही अधिक निराशा उत्पन्न होगी। हे निराशा, तुम्हें तो मायारानी के केश समूह कहना अधिक उपयुक्त होगा। क्योंकि जिस प्रकार नारी की शोभा उसके केशों में है, उसी प्रकार मायाकी शोभा भी निराशा है। यह सारा संसार माया के अधिकार में है और वह निराशा द्वारा ही अपना प्रभुत्व प्रकट करती है।

नोट—प्रसादजी ने संध्या से लेकर प्रभात काल तक का प्रकृति वर्णन निराशा रूप में किया है।

जीवन निशीथ
नभ अपार।

शब्दार्थ—अभिलाषा=इच्छा। ज्वलन धूम सा=आग से निकले हुए धुँए के समान। दुर्निवार=जिसका निवारण न हो सके, अनिवार्य। अपूर्ण=

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधूरी। लालसा=इच्छा। कसक=पीड़ा, दुःख, टीस। चिनगारी=आग की ज्वाला। मधुवन=वृन्दावन के पास यमुना के किनारे का वन जहाँ श्री कृष्ण रास रचाया करते थे। कालिंदी=यमुना नदी। दिगंत=दिशाएं। मन शिशु=मन रूपी बालक। क्रीड़ा-नौकाएं=बालकों द्वारा खेली जाने वाली कागज की नावें। अनन्त=जहाँ किनारा न हो, असंख्य। कुहुकि=मायावी। अपलक दृग=खुले नेत्र। अंजन=काजल। छलना=आकर्षण। धूमिल=धुंधली। नव कलना=नई सृष्टि। चिर-प्रवास=सदैव के लिए घर से दूर होना, सुख से दूर होना। श्यामल पथ=आमों के हरे-भरे वन में, अंधेरे से भरे मार्ग में। पिक=कोयल। प्रतिध्वनि=प्रति शब्द की गूंज। नभ अपार=विस्तृत आकाश।

भावार्थ—जीवन रात्रि के अन्धकार के समान है। ऐसी जीवन निशा में सुख का प्रकाश लुप्त हो जाता है और निराशा का दुख भर जाता है।

जिस प्रकार धुंए को आग से पृथक नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार हे निराशा तुम्हें भी जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। तुम भी कामनाओं की आग से उस धुंए के समान निश्चल रूप से हृदय में उमड़ती हो। तुमसे छुटकारा नहीं मिल सकता। जिस प्रकार आग से चिनगारियाँ निकलती हैं, उसी प्रकार तुम्हारे अन्दर से भी आग की ज्वाला के समान अतृप्त लालसाएं फूटती हैं। चिनगारियों की जलन की भाँति वे हृदय में टीस भरती है तथा अपनी शांति के लिए पुकार मचाती है।

यह यौवन काल मधुवन में बहने वाली यमुना नदी के समान है। जिस प्रकार यमुना नदी चारों दिशाओं को छूती हुई बहती है, उसी प्रकार यौवन जीवन की समस्त दिशाओं को प्रभावित करता हुआ आगे बढ़ता है। यमुना नदी में जिस प्रकार छोटे बालकों द्वारा क्रीड़ा निमित्त तैराई जाने वाली कागज की नावें कभी किनारा प्राप्त नहीं कर सकतीं, उसी प्रकार यौवन की इस नदी में भी मन द्वारा अनेक कामनाएं उठाई जाती हैं, जो सदैव अपूर्ण बनी रहती हैं।

जिस प्रकार मायाविनी रमणी की आँखों में काजल की रेखा काली होने पर भी सुन्दर प्रतीत होती है उसी प्रकार हे निराशा तुम भी अंधकार की काली रेखा के समान होते हुए भी अपने भीतर मायावी आकर्षण छिपाए हुए हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि किसी दिन तुममें ही आशा का जन्म होगा।

जैसे एक चित्रकार धुंधली और अस्पष्ट रेखाओं से ही सुन्दर व सजीव चित्रों का निर्माण करता है उसी प्रकार हे निराशा तुम्हारे अन्धकारमय धूमिल आवरण में भी आशा के सजीव और चंचल चित्र दृष्टिगत होते हैं।

जिस प्रकार हरे-भरे कुंजों में कोकिल कूकने लगती है और उसकी वह ध्वनि अनन्त आकाश में व्याप्त हो जाती है, उसी प्रकार हे निराशा तेरे अन्धकारमय मार्ग में ये प्राण भी कोयल की भाँति पीड़ा से कराह उठते हैं। यह आर्त्त स्वर अनन्त आकाश में अर्थात् सभी स्थानों में व्याप्त हो जाता है। भाव यह है कि पीड़ित जन को सभी स्थान दुख-प्रद जान पड़ते हैं।

मनु तुम श्रद्धा   चुभ गया शूल।

शब्दार्थ—मनु=प्रसाद की 'कामायनी' कृति के नायक, आदि पुरुष। श्रद्धा=मनु की पत्नी। आत्म विश्वासमयी=आत्मा पर विश्वास रखकर कार्य करने वाली। उड़ा दिया=उपेक्षा की, अवहेलना की। तूल=रुई। असत्= नाशवान्। जीवन धागे में रहा भूल=एक ही झटके में नष्ट हो जाने वाले धागे की भाँति जीवन। वासना तृप्ति=हृदय की लालसाओं की पूर्ति। स्वर्ग=प्रमुख सुख। उलटी मति=दुर्बुद्धि, कुमति। पुरुषत्व=पुरुष शक्ति, मर्दानगी। मोह= अहङ्कार। सत्ता=अस्तित्व, व्यक्तित्व। समरसता=समानता अधिकार=सेविका, दासी। अधिकारी=स्वामी। कम्पित करती=कंपाती हुई। अम्बर=आकाश। अकूल=जिसका कोई किनारा या अन्त न हो। शूल=काँटा।

भावार्थ—हे मनु, तुम श्रद्धा को भूल गए हो। अपनी आत्मा पर विश्वास रख कर कार्य करने वाली उस नारी की अवहेलना करते हुए उसको तुमने रुई की भाँति हलका समझा।

तुमने इस संसार को नाशवान समझा और जीवन को उस सूत के धागे की भाँति समझ लिया जिसे एक झटके में ही सरलता के साथ तोड़ा जा सकता है, अर्थात मृत्यु के एक झटके से किसी भी अवसर पर जीवन नष्ट किया जा सकता है।

तुमने उन क्षणों को ही वास्तविक समझा जो कि आनंद विलास के सुख-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साधनों में व्यतीत हुए। अपने हृदय की लालसाओं को तृप्त बनाना ही तुमने अपने जीवन का प्रमुख ध्येय बना लिया है। तुम्हारी दुर्बुद्धि ने व्यर्थ का यह ज्ञान तुम्हारे हृदय में पैदा किया है।

तुमने इस अहङ्कार में कि 'मैं पुरुष हूँ' नारी के अस्तित्व को भी भुला दिया। अधिकृत (नारी) और अधिकारी (पुरुष) वस्तु के बीच वास्तविक सम्बन्ध तो यह है कि उनमें पारस्परिक समानता का व्यवहार रहे। परन्तु तुमने यह सब कुछ भुलाकर नारी को सेविका मात्र और अपने को स्वामी समझा।

यह पीड़ा भरे विचार अनन्त आकाश को कम्पित करते हुए मनु के हृदय में शूल की तरह चुभ गए।

बिखरी अलकें गति भरी ताल।

शब्दार्थ—अलकें=केश। तर्कजाल=तर्क समूह। उज्ज्वलतम्=अत्यंत उज्ज्वल और प्रकाशमान। शशिखण्ड=चंद्रमा का अर्द्ध भाग। सदृश्य=समान। स्पष्ट=साफ नजर में आता हुआ। भाल=सिर। पद्मपलास=कमल के पत्ते। चषक=कटोरी। दृग=आखें। अनुराग-विराग=प्रेम और अप्रीति। गुंजरित=बोलते हुए मधुप=भौंरे। मुकुल=खिलती हुई कली। आनन=मुख। वक्षस्थल=छाती, सीना एकत्र धरे=इकट्ठे रखे हुए। संसृति=संसार। विज्ञान=भौतिक विज्ञान। ज्ञान=आध्यात्मिक ज्ञान। कर्म कलश=कर्म रूपी कलशा। वसुधा=पृथ्वी। जीवन रस-धार=जीवन में स्फूर्ति भरने वाली शक्ति। नभ=आकाश। अभय=भय रहित, निशङ्क। अवलम्ब=सहारा। त्रिवली=पेट पर पड़ी हुई तीन रेखाएं। त्रिगुण=सत्, रज, तम। आलोक=प्रकाश की भाँति उज्ज्वल। वसन=वस्त्र। अराल=तिरछा। गति=एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ताल=लय।

भावार्थ—उसके केश तर्क समूह की भाँति बिखरे हुए थे। जिस प्रकार विद्वान पुरुष अपने तर्कों के समूह से दूसरों को अपने मत में फाँस लेता है, उसी प्रकार ये बिखरे केश-जाल भी दूसरों के मन को अपने वश में कर लेते हैं।

संसार के शीश पर सुन्दर मुकुट के समान, शोभायमान होने वाले प्रभावान अर्द्ध चंद्र के समान उसका स्वच्छ ललाट था। उसके नेत्र कमल के पत्तों से बनी दो कटोरियों के समान थे। जिस प्रकार मधु के पात्र से मदिरा ढाली जाती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी प्रकार उन दृग रूपी मधु पात्रों से प्रेम और विराग दोनों ही टपकते हैं।

उसका सुन्दर मुख खिलती हुई कली के समान है। जब वह बोलती थी तब उसकी वाणी उसी प्रकार गूंजती थी जैसे भ्रमर गुंजन कर रहा हो। उसके वक्षस्थल के उरोजों में समस्त संसार के ज्ञान और विज्ञान एकत्र थे। भावार्थ यह है कि वे उरोज इतने सुडौल और मनोहर थे कि उनके सामने भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान से प्राप्त होने वाली समस्त सम्पदा तुच्छ थी।

उसके एक हाथ में पृथ्वी पर व्यतीत होने वाले जीवन के तत्व से भरा हुआ कर्म का कलश था। अर्थात् उसके एक हाथ का सहारा पाकर मनुष्य अपने जीवन को आनन्दमय बनाने की कर्मशक्ति प्राप्त कर सकता था। उसका दूसरा हाथ विचारों के आकाश को निर्भय रूप से सहारा देने वाला था। भाव यह है कि उसके दूसरे हाथ का सहारा जिसे प्राप्त हुआ वह असम्भव से असम्भव प्रतीत होने वाले विचारों को बड़ी सहज और सरल रीति से कार्य रूप में परिणित कर सकता है।

उसके पेट पर नाभि के ऊपर तीन बल पड़ते थे। ऐसा प्रतीत होता था मानो मनुष्य के हृदय में निहित सत्व, रज, तम आदि तीन गुण उन रेखाओं के रूप में बाहर उभर आए हों। उसने अपना प्रकाश की भाँति उज्ज्वल वस्त्र तिरछा करके धारण किया था। उसके चरणों की गति में भी संगीत की लय भरी हुई थी।

नोट—कवि ने यहाँ 'इड़ा' के रूप-सौन्दर्यका चित्रण किया है।कामायनी में 'इड़ा' बुद्धि का प्रतीक है। फलतः इस रूप वर्णन में इन दोनों ही रूपों का सुन्दर चित्रण है। बालों को कवि ने तर्कजाल के समान बतलाया है क्योंकि तर्क बुद्धि शास्त्र के प्रमुख अङ्ग हैं। 'उरोजों' को उसने ज्ञान-विज्ञान की उपमा दी है।

आँसू

जो घनी भूत .... बरसने आई।

शब्दार्थ—घनीभूत=गहरी। पीड़ा=दुख। स्मृति=याद। दुर्दिन=बुरे दिन।

भावार्थ—हृदय की जो गहरी पीड़ा मस्तक में स्मृति बनकर बसी हुई थी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वही पीड़ा आज जीवन के इन बुरे दिनों में आँसू बनकर बरस रही है। भ
यह है कि कोई वेदना पूर्ण स्मृति कवि के हृदय में जाग उठी है और कवि
आँसू उसी का प्रतीक है।

इस कारण   असीम गरजते

शब्दार्थ—करुणा=दुख। कलित=भरे हुए। विकल=व्याकुलता से भरी
रागिनी=संगीत। वेदना=दुख। असीम=सीमा रहित।

भावार्थ—इस दुख से भरे हृदय में न जाने क्यों व्याकुलता से भ
संगीत गूंज रहा है। हृदय के इन हाहाकारों में आज न जाने क्यों असी
वेदना समाई हुई है।

क्यों व्यथित   मृदुल हिलोरें

शब्दार्थ—व्यथित = दुखी। व्योम=आकाश। चेतना=ज्ञान। तरंगिनी
नदी। मृदुल=मधुर।

भावार्थ—आज आकाश गंगा के समान, अपने दोनों छोरों को स
रूप से प्रगट करती हुई मेरी ज्ञान रूपी नदी मधुर हिलोरें ले रही है।

कवि ने इन पंक्तियों में अपने मन के सुख और दुख दोनों ही भावों
स्पष्ट रूप से प्रगट किया है। अपनी चेतना को कवि ने व्यथित व्योम गंगा
उपमा दी है, तथा रात्रि काल का तारक समूह आकाश गंगा के श्वेत फेन
सदृश्य दिखलाई पड़ता है। दोनों छोरों से तात्पर्य नदी के उद्गम और अंत
है। चेतना के दोनों छोरों से यहाँ तात्पर्य स्मृति के उद्गम और अन्त से है।

अभिलाषाओं   का लगना

शब्दार्थ—अभिलाषाओं=इच्छायें। सुप्त व्यथा=सोया हुआ दुख
भीगी पलकों=आँसुओं से भीगी हुई आँखें।

भावार्थ—हृदय में अनेक प्रकार की इच्छाओं के उठने से पुराना दुख
जाग उठा है। सुख के दिन तो अब समाप्त हो गए हैं, अब तो रोते ही रो
आँखें बन्द हो जाती है सुख की नींद तो आती ही नहीं।

जीवन की जटिल   है ऐसी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ—जटिल=उलझन भरी। जटा=योगी के लम्बे केश। विभूति=कृपा, राख।

भावार्थ—मेरे जीवन की उलझन भरी समस्याएँ योगी की जटाओं के समान बढ़ रही है! हृदय में निराशा की धूल उड़ रही है। न मालूम यह सब किसकी कृपा का फल है अर्थात् किसने मेरे जीवन को इतना जटिल बना दिया है। विभूति का अर्थ यहाँ राख से भी हो सकता है। अर्थात् यह निराशा की धूल किसी योगी की भस्म की भांति मेरे जीवन से लिपटीहुई है। वास्तव में विरही की अवस्था योगी की भांति ही होती है।

झंझा झकोर डेरा डाला।

शब्दार्थ—झंझा=वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी होती है। झंझा झकोर गर्जन=यहाँ भावनाओं की तेज आंधी के गर्जन से तात्पर्य है। बिजली=यहाँ बिजली से अभिप्राय हृदय में रह रह कर उठने वाली पीड़ा से है। नीरद माला=बादलों का समूह, यहाँ यह विरहाकुल हृदय की निराशा का प्रतीक बन कर आया है। शून्य=आकाश। डेरा डाला=अपना घर बनाया।

भावार्थ—कवि कहता हैं कि मेरे हृदय में झंझा के गर्जन की भांति भावनाओं की आँधी चल रही है। बिजली की भांति हृदय की सोई हुई पीड़ा रह रह कर जाग उठती है। बादलों के समूह की भांति निराशा छाई हुई है। इन सबने आज मेरे आकाश रूपी हृदय को अपना घर बना लिया है। भाव यह है कि आज मेरे शून्य हृदय की भी वही दशा हो गई है जो वर्षा में बादलों से भरे आकाश की होती है।

शशि मुख तुम आए।

शब्दार्थ- शशि मुख=चन्द्रमा के समान मुख। घूंघट=पर्दा। अंचल=शरीर पर पहिने जाने वाले वस्त्र का छोर। गौधूली=संध्या कालीन समय। कौतूहल=आश्चर्यमय।

भावार्थ—जीवन दिवस बीतने पर संध्या कालीन के समय जिस प्रकार चन्द्रमा आकाश के पर्दे में छिपता हुआ आता है, उसी प्रकार मेरे जीवन के संध्याकाल अर्थात् वृद्धावस्था में तुम आश्चर्य के समान अपने चंद्रमुख को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घूंघट में, तथा अंचल में पूजा के दीपों को छिपाए हुए कहाँ से आ गं
आँसू कवि का प्रेम काव्य है। कवि ने यौवन के काल में जिससे प्रेम कि
था, उसी की स्मृति वृद्धावस्था में कवि को विरहाकुल कर रही है। प्रस्
पंक्तियों में कवि ने जो नारी चित्रण किया है, कवि की प्रेयसि की स्मृति
प्रतीक है जो एकाएक जीवन की वृद्धावस्था में जाग उठी है।

लहर

बीती विभावरी ... ऊषा नागरी।

शब्दार्थ—विभावरी=रात्रि काल। अम्बर=आकाश। पनघट=वह स्
जहाँ नारियाँ जल भरती हैं। ताराघट=तारारूपी घड़े। ऊषा=प्रभात काल
पूर्व का समय। नागरी=चतुर स्त्री।

भावार्थ—रात्रि व्यतीत हो गई है, हे सखि अब तो जाग। देख
आकाश रूपी पनघट में ऊषा जैसी प्रवीण स्त्री तारा रूपी घड़ों को डुबो
है। इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के रूप का बड़ा सुन्दर मानवीकरण कि
है। प्रकृति का नारी चित्रण इन शब्दों में बड़ा उत्कृष्ट बन पड़ा है। प्रभात हे
ही तारे छिपने लगते हैं। कवि ने प्रकृति के इस व्यापार को ऊषा द्वारा अ
रूपी पनघट में जल भरने के समान बताया है।

खग कुल कुल ... रस गागरी।

शब्दार्थ—खग-कुल=पक्षियों का समूह। कुल कुल=पक्षियों का
विशेष। किसलय=कोमल पत्ता। अंचल=किनारा। लतिका=बेल, लता
मधु=पराग। मुकुल=कलियाँ। नवल=नए। रस=मधुर। गागरी=घड़ा, कलश

भावार्थ—प्रभात काल में पक्षी मधुर स्वर से बोल रहे है। हवा के झों
से नई कोंपलें हिल रही हैं। अब तो ये लताएँ भी मधुमय पराग के नए रस
भर गई हैं। (अथवा लताओं पर प्रभात काल में ओस की बूँदें छा गई हों

अधरों में राग ... विहाग री।

शब्दार्थ—अधरों=होठों। राग=प्रेम का लाल रंग! अमंद=क
धीमा न पड़ने वाला। अलकों=केशों। मलयज=मलय पर्वत से बहने वाल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुगन्धित पवन । आली = सखी । विहाग=एक गीत विशेष ।

भावार्थ—अपने लाल होठों को कभी न फीके पड़ने वाले प्रेम के लाल रंग से रंग कर और अपने केशों में सुगन्धित मलय पवन को छिपाये हुए हे सखि तू कब तक अपनी आँखों में विरह के गीत भर कर सोती रहेगी ?

प्रलय की छाया

"थके हुए रंग-रलियाँ ।"

शब्दार्थ—धूसर=धूल से भरा । क्षितिज=वह स्थान जहां आकाश और पृथ्वी मिले हुए जान पड़ते हैं । निर्जन=जन रहित, जहाँ कोई मानव समुदाय न हो । जलधि-वेला = लहर । रागमयी=लाल रंग से रंगी हुई । सौरभ=वायु । रंग-रंलियाँ=आनन्द केलि ।

भावार्थ—थके हुए दिवस की भांति आज तो जीवन निराशा से भर गया है । धूल से भरे हुए क्षितिज पर भी संध्या का आवरण पड़ा हुआ है । परन्तु उस दिन संध्या काल में तो जनरहित समुद्र की शांति लहरें संध्या की लालिमा और सुगन्ध से भरी वायु से आनन्द क्रीड़ा करना सीख रहीं थीं ।

दूरागत कस्तूरी मृग जैसी ।

शब्दार्थ—दूरागत=दूरी से आता हुआ । वंशीरव=बाँसुरी का स्वर । धीवरों = मल्लाहों । मालती-मुकुल = मालती लता की कलियाँ । रंध्र=छिद्र त्रुटियाँ । रजनी=रात्रि । मृदुगन्ध = मधुर सुगन्ध । कस्तूरी मृग=एक हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है । कस्तूरी की तलाश में इधर उधर भटकता फिरता है, परन्तु यह नहीं जान पाता कि किस्तूरी स्वयं उसकी ही नाभि में है ।

भावार्थ—मल्लाहों की छोटी छोटी नावों से दूर से आता हुआ वंशी का स्वर गूँजा करता था ।

मेरे मालती लता की कलियों के समान विकसित यौवन के सौन्दर्य में रजनी की श्यामल किरणें कुछ त्रुटियाँ ढूढ़ाँ करती थीं । उस समय रजनी की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किरणों को चिढ़ाने और गुदगुदाने में मुझे बड़ा आनन्द आता था। जिस प्रकार हिरन कस्तूरी की सुगन्ध से पागल बनकर इधर उधर फिरा करता है, उसी प्रकार मेरे सौन्दर्य की मधुर गंध ने मुझे पागल बना दिया था।

परिचय जलिधि नत शिर देख मुझे।

शब्दार्थ—जलधि=समुद्र। अलकावली=बालों का समूह। समीर=हवा। नृत्यशीला=नृत्य में तल्लीन। शैशव=बचपन। स्फूर्तियाँ=तेजी, फुर्ती, स्फुरण। बिजड़ित=जकड़ा हुआ। मधुभार=मधुरता का भार। अनंग=शरीर रहित। अन्तरिक्ष=आकाश। क्रीड़ा=आमोद प्रमोद। अभिषेक=जल से सींचना, नत शिर=झुका हुआ मस्तक।

भावार्थ—मेरे काले केशों के समान, पश्चिमी समुद्र की उठती हुई नीली लहरें ऐसी प्रतीत होती थीं जैसे मेरे सौन्दर्य को स्पर्श करने लिये तरंगित हो रही हों (समुद्र की लहरें चन्द्रमा के आकर्षण से ऊपर उठा करती हैं कवि का भाव यह है कि रानी के चन्द्रमुख के आकर्षण से पश्चिमी समुद्र की लहरें तरंगित होती थीं।) मेरे स्पर्श से ही वायु संजीवन बनी हुई थी। अन्यथा बिना मेरे स्पर्श के वह निष्प्राण थी।

योवन के विकास के कारण अब मुझ में बचपन की चंचलता नहीं रह गई थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे नृत्य के समान शैशव की स्फूर्तियाँ मुझ से दूर हट कर मेरे यौवन पर हँस रही हों। शैशव की चंचलता से रहित मेरे पैर यौवन के मधुभार से जकड़ गये थे। बाल सुलभ क्रीड़ाओं में मुझे नत शिर अर्थात् सामर्थ्य हीन देखकर आकाश की अनंग बालिकाएँ मुझ पर [illegible]ने लगी।

कमनीयता झुक [illegible] पड़ेतीं।

शब्दार्थ—कमनीयता=सुन्दरता। अंगलतिका=शरीर रूपी लता। पलकें=आँखें। मदिर=मत्त बनाने वाली।

भावार्थ—गुजरात का जो समस्त सौन्दर्य था वह मेरी अंग रूपी लता में एकत्रित हो गया था। भाव यह है कि गुजरात के समस्त सौन्दर्य की मैं केन्द्र बनी हुई थी। उन्मत्त बनाने वाला सौन्दर्य मेरी आँखों में छिपा हुआ था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

राम की शक्ति पूजा

है अमा निशाः जलती मशाल।

शब्दार्थ—अमा=अमावश। निशा=रात्रि। घन अन्धकार=घना अन्धकार स्तब्ध=मौन, शान्त। अप्रतिहत=अबाध, जो किसी प्रकार रोका न जा सके। अम्बुधि=सागर। भूधर=पहाड़।

भावार्थ—अमावश की काली नीरव रात्रि के आकाश में घना अन्धकार छाया हुआ था। वायु बिल्कुल शान्त और थमी हुई थी तथा अन्धकार के कारण दिशाएं भी नहीं दिखलाई पड़ती थीं। पीछे की ओर विशाल समुद्र विविध रूप से गर्जन कर रहा था। ऐसे अन्धकार में केवल मशालें जल रही थीं। भगवान रामचन्द्र पर्वत की भांति स्थिर और किसी गहन चिन्ता में लीन थे।

स्थिर राघवेन्द्र दुराक्राँत।

शब्दार्थ—स्थिर = शान्ति। रामचन्द=रामचन्द्र जी। संशय = आशंका। जग=संसार। रावण जय-भय=रावण की विजय का डर। रिपु=दम्य-श्रान्त=शत्रु के दमन से थका। अयुत=दस हजार की संख्या। लक्ष =शस्त्र संहार। दुराक्रान्त=निर्भीक, साहसी।

भावार्थ—शान्त और ध्यान मग्न रामचन्द्र जी की स्थिरता को एक आशंका बार बार तोड़ देती थी। वह आशङ्का संसार में रावण की विजय की थी, जो रह रहकर उनके हृदय को व्याकुल बनाए हुए थी। जिन रामचन्द्र जी का हृदय अबतक शत्रुओं के विनाश से कभी नहीं थका था, जो लाखों शस्त्रों के घेरे के बीच भी निर्भीक और निडर बने रहते थे वे ही रावण की विजय की आशंका से व्याकुल हो रहे थे।

कल लड़े कुमारिका छवि।

शब्दार्थ—विकल=व्याकुल, अधीर। असमर्थ=सामर्थ्य हीन। उद्यत= प्रस्तुत, तैयार। पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि=पृथ्वी की पुत्री सीता जी की कौमार्य अवस्था की छवि।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—कल तक रामचन्द्र जी का जो हृदय रावण से युद्ध करने के लिए बार बार अधीर हो रहा था वही आज रावण से युद्ध की तैयारी करने में अपने को सामर्थ्य हीन पा रहा था। ऐसे ही अवसर पर जिस प्रकार अन्धकार में बिजली चमकती है उसी प्रकार रामचन्द्र जी के निराशा रूपी अन्धकार से भरे हृदय में बिजली की भांति पृथ्वी-पुत्री श्री सीताजी की कौमार्य छवि की स्मृति चमक उठी।

अच्युत **प्रथमोत्थान-पतन।**

शब्दार्थ—अच्युत=अचल। निष्पलक=अपलक, खुली आंखें। विदेह=जनक। लतान्तराल=लता के नीचे। प्रथम स्नेह=प्रथम प्रेम। नयनों=आँखों। गोपन=छिपाना। सम्भाषण=बात चीत। प्रथमोत्थान-पतन=पहले ऊपर चढ़ाना फिर नीचे गिराना।

भावार्थ—रामचन्द्र जी को जनक का वह उपवन याद आया जहाँ लता के नीचे उनका सीता जी से प्रथम स्नेह मिलन हुआ था। जहाँ उन्होंने सीताजी को अपलक नयनों से देखा था। आँखों ही आंखों में जहां प्रेम का अज्ञात मौन वार्त्तालाप हुआ था। उन्हें सीताजी के वे लजीले पलक याद आए, जो उन्हें देखने के लिए पहले कुछ ऊपर उठे थे, फिर नीचे गिर गए थे।

काँपते हुये किसलय **कम्पन तुरीय।**

शब्दार्थ—किसलय=नए पत्ते। पराग-समुदाय=मकरंद का समूह। खग=पक्षी। तरु=वृक्ष। मलय=मलय पर्वत की सुगन्धित पवन। वलय=मण्डल, समूह। ज्योति=प्रकाश, प्रपात=नीचे गिराना। ज्ञान=अनुभव। छवि=सौन्दर्य। स्वयं=अपना। जानकी=सीता जी। नयन=आँखें। कमनीय=सुन्दर। कम्पन = सिहरन हिलना। तुरीय=वह अवस्था जब वाणी मुंह में आकर उच्चरित होती है।

भावार्थ—(रामचंद्रजी के नेत्रों के सम्मुख उपवन का वह चित्र खिंच गया)। जब नए कोमल पत्ते पवन के झोंकों से हिल रहे थे। फूल से मकरंद का समूह झर रहा था। पक्षी नए स्वर में नए जीवन का राग अलाप रहे थे। मलय वृक्षों के घेरे में सीताजी ऐसी शोभायमान हो रही थीं मानों धरती पर कोई स्वर्गीय ज्योति उतर आई हो। सीता जी के सुन्दर नयन से इनके शरीर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

में पहली बार सिहरन हुई। उसी समय सीता जी को अपने सौंदर्य का प्रथम वार ज्ञान हुआ था।

सिहरा तन ... आई भर।

शब्दार्थ—सिहरा तन=शरीर में कम्पन हुआ। धनुर्भङ्ग=धनुष को तोड़ना पुनर्वार=दूसरी बार। हस्त=हाथ। फूटी स्मिति=मुस्कान खिल उठी। अधर= होठ।

भावार्थ—इन पुरानी स्मृतियों के हृदय में जागते ही रामचन्द्रजी का शरीर सिहर उठा। क्षणभर के लिए वे अपने को भूल गए। जिन हाथों ने एक बार धनुर्भङ्ग किया था वे ही हाथ पुनः दूसरी बार धनुष तोड़ने के लिए उठ गए। श्री सीताजी के ध्यान में मग्न रामचन्द्रजी के होठों पर मुस्कान खिल उठी और उनके हृदय में (सीता की स्मृति की प्रेरणा से) विश्व को विजय करने की उत्कंठ अभिलाषा भर गई।

वे आए ... दूषण, खर।

शब्दार्थ—दिव्य शर=अलौकिक बाण। अगणित=असंख्य। मंत्रपूत = मंत्रों द्वारा पवित्र किए गए। फड़काकर=पाँव फैलाते हुए। नभ=आकाश। सकल=समस्त। देवदूत=देवताओं का संदेश वाहक। ताड़का, सुबाहु, विराध, शिरस्त्र, दूषण, खर=ये रामचन्द्र के हाथों विनाश को प्राप्त होने वाले विविध राक्षसों के नाम हैं। शलभ=पतंगा। रजनीचर=राक्षस।

भावार्थ—उसी समय रामचन्द्रजी को अपने अलौकिक असंख्य बाणों का ध्यान आया जो मंत्रों द्वारा पवित्र किए गए थे। देवदूत की भाँति जो अपने पंख फैलाते हुए आकाश में उड़ गए थे। ताड़का, सुबाहु, विराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर आदि विविध राक्षस समुदाय का पतन अपने हाथों रामचन्द्रजी उसी प्रकार देख रहे थे, जैसे दीपक की लौ पर पतंगे जल कर भस्म हो जाते हैं।

फिर देखी ... हुए लीन।

शब्दार्थ—भीमामूर्ति=भयङ्कर मूर्ति। आच्छादित=ढका हुआ, आवृत्त। समग्र=समस्त। ज्योतिर्मय=प्रकाशवान। महानिलय=विशाल स्थान। तन = शरीर। लीन=छिप गए।

भावार्थ—फिर एकाएक रामचन्द्रजी के सम्मुख आज की रणदेवी की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भयङ्कर मूर्ति नाच उठी जो कि अपनी भयङ्करता और बीभत्सता से समस्त नभ को आच्छादित किए हुए थी। उस रण के बीच रामचन्द्रजी द्वारा चलाए गए अनेक ज्योतिर्मय अस्त्र बुझकर शांत बन गए थे। रणदेवी की विशाल मूर्ति के तन में जाकर वे छिप गए। भाव यह है कि रामचन्द्रजी के शस्त्र शत्रु का दमन करने में असमर्थ रहे। उनके अनेक ज्योतिर्मय दिव्य शर भी युद्ध को समाप्त न कर सके।

लख शंकाकुल ... दो मुक्तादल।

शब्दार्थ—शंकाकुल=आशंका से व्याकुल, अधीर। अतुल बल=असीम बल धारी। शेष-शयन=शेष नाग की शय्या पर सोने वाले रामचन्द्रजी। दृगों=आँखों। राम-मय=राम रूप। नयन=नेत्र। अट्टहास=विकट हास्य, खूब जोर से हँसना। भावित=चिन्तित, उद्विग्न। अजल=जल रहित। मुक्ता दल=मोतियों का समूह।

भावार्थ—यह देखकर असीम बलधारी रामचन्द्रजी रावण की विजय की आशङ्का से अधीर हो उठे। उनकी आँखों में सीताजी के 'राम-मय' नेत्र भी नाच उठे। फिर उन्हें जैसे ज्ञात हुआ कि रावण उनकी असफलता पर खल-खल करता हुआ विकट हास्य कर रहा है। इससे रामचन्द्रजी के चिंतित नेत्रों से दो बूँद आँसू गिर पड़े। वे आँसू नहीं थे मानो जल रहित दो मोती थे।

तुम और मैं

(इस कविता में कवि ने आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को कवित्वपूर्ण प्रतीकों द्वारा स्पष्ट किया है। जीवात्मा के जितने भी प्रकार के सम्बन्ध परमात्मा से हो सकते हैं, सबका प्राकृतिक, मनोवैज्ञानिक और पौराणिक आलम्बनों द्वारा कवि ने स्पष्टीकरण किया है। जीवात्मा अपने ही मुख से ब्रह्मात्मा के साथ अपने सम्बन्ध को बतलाती है)।

तुम तुङ्ग ... मैं शांति।

शब्दार्थ—तुंग=ऊंचा। शृंग=चोटी। चंचल गति=चंचल चाल वाली। सुर सरिता=गंगा नदी। विमल=स्वच्छ। उच्छ्वास=उसासें। कांत-कामिनी कविता=सुंदर स्त्री की भाँति कविता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ---हे भगवान् यदि तुम हिमालय की अत्यन्त ऊँची चोटी के समान हो तो मैं चंचल चाल से वहने वाली गंगा नदी के समान हूँ। यदि तुम सांसारिक प्रपंचों से दूर कवि के स्वच्छ हृदय की गहरी अनुभूतियाँ हो तो मैं इन अनुभूतियों से निर्मित की गई सुन्दर कविता के समान हूँ। यदि तुम प्रेम के प्रतिरूप हो तो मैं उस प्रेम द्वारा उत्पन्न शांति के समान हूँ। (गंगा हिमालय से निकलती है, कविता हृदय की अनुभूतियों से प्रकट होती है, तथा शांति प्रेम द्वारा उत्पन्न होती है, उसी प्रकार कवि के दृष्टिकोण के अनुसार हमारी जीवात्मा भी परमात्मा द्वारा उत्पन्न होती है)।

तुम सुरापान सिद्धि।

शब्दार्थ---सुरा पान=मदिरा पान, शराब पीना। घन अंधकार=अत्यधिक गहरा अंधकार। मतवाला=मत्त, पागल। भ्रांति=भ्रम, शंका। दिनकर=सूर्य। खर=तेज, तीक्ष्ण। किरण-जाल=किरणों का समूह। सरसिज=कमल का समूह। वियोग=बिछुड़ना। योग=साधना। सिद्धि=प्राप्ति।

भावार्थ- यदि तुम मदिरा पान के नशे से चूर घने अंधकार के समान हो तो मैं उस घने अंधकार में भटकने वाली पागल भ्रांति के समान हूँ। हे प्रभु मैं कमलों पर खिलने वाली उस मधुर मुस्कराहट के समान हूँ जो सूर्य की किरणों के समूह को पाकर खिलती है। यदि तुम वर्षों के बीते हुए वियोग हो तो मैं वह पहिचान हूँ कि जिसके कारण वियोग की उद्भावना हुई है। यदि तुम साधना हो तो मैं उस साधना की प्राप्ति हूँ।

तुम हो रागानुराग काया।

शब्दार्थ—रागानुग=प्रेम का अनुगमन करते हुए। निश्चल तप=एकनिष्ट तपस्या, स्थिर साधना। शुचिता=पवित्रता। समृद्धि=सम्पदा, वैभव। मृदु= कोमल। मानस-हृदय=मन। भाव=विचार। मनोरंजनी=मन को प्रसन्न करने वाली। नन्दनवन=स्वर्गीय उपवन। घन-विटप=घने वृक्षों का समूह। तल= नीचे। काया=शरीर।

भावार्थ--तुम प्रेम की साधना के एक निष्ट तपस्वी हो, मैं उस साधना से प्राप्त होने वाली पवित्र सम्पदा हूँ। तुम यदि हृदय के कोमल भाव हो तो मैं उन भावों को व्यक्त करने वाली मनोरंजक भाषा हूँ। हे प्रभु यदि तुम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वर्गीय बन के घने वृक्ष समूह के समान हो तो मैं उनकी शाखाओं के नीचे मिलने वाली सुखदायी शीतल छाया के समान हूँ। यदि तुम प्राण हो तो मैं वह शरीर हूँ जिसमें तुम निवास करते हो।

तुम शुद्ध .... मैं हूँ रेणु।

शब्दार्थ—सच्चिदानन्द=सत् चित् तथा आनन्द अर्थात् चिर सत्य और आनन्द का प्रतिरूप। ब्रह्म=ईश्वर। मन मोहिनी=मन को मोहित करने वाली। माया=ईश्वर की वह कल्पित शक्ति जो उसकी आज्ञा से सब कार्य करने वाली मानीगई है। प्रेममयी=प्रेमपूर्ण। कण्ठहार=गले का हार। वेणी=चोटी। काल-नागिन=काल रूपी सर्पिणी। कर पल्लव=नए निकले हुए कोमल पत्तों के समान झंकृत=बजते हुए। व्याकुल=बेचैन। विरह-रागिनी=वियोग के गीत।

भावार्थ—यदि तुम चिर सत्य और आनन्द के प्रतिरूप शुद्ध ब्रह्म हो तो मैं माया के रूप में तुम्हारी वह कल्पित शक्ति हूँ जो कि तुम्हारी आज्ञा से सब कार्य करती है। यदि तुम किसी प्रेम से मदमाती युवती के सुन्दर गले के हार हो तो मैं काल-रूपिन साँपिन के समान उसकी लहराती हुई चोटी हूँ। यदि तुम किसी के कोमल हाथों से बजते हुए सितार हो तो मैं इस सितार से निकलते हुए वियोग के गीत हूँ। यदि तुम मार्ग हो तो मैं उस मार्ग की धूल हूं।

तुम हो राधा के .... नीलिमा।

शब्दार्थ—मनमोहन=मन को मोहने वाले श्री कृष्ण। राधा=श्रीकृष्ण की प्रेमिका। अधरों=होठों। वेणु=बाँसुरी। पथिक=पथ पर चलने वाला, राही। श्रांत=थका हुआ। बाट जोहती=मार्ग देखती। भवसागर=संसार रूपी समुद्र। दुरतर=कठिन। अभिलाषा=इच्छा। नभ=आकाश। नीलिमा=नीला रंग।

भावार्थ—यदि तुम राधा के प्रिय मनमोहन हो तो मैं उस मनमोहन के होठों पर बजने वाली बाँसुरी हूँ। यदि तुम दूर से आते हुए कोई पथिक हो तो मैं तुम्हारा इन्तजार करती हुई तुम्हारी राह देखने वाली आशा के समान हूँ। यदि तुम कठिन भवसागर हो तो मैं उस भवसागर से पार उतरने की अभिलाषा हूँ। यदि तुम विस्तृत नभ के समान हो तो मैं उस आकाश पर छाई हुई नीलिमा के समान हूँ।

तुम शब्द .... मैं हूँ शक्ति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ—शरद्-सुधाकर=शरद् ऋतु का चन्द्रमा। कलहास=चाँदनी। निशीथ मधुरिमा=रात्रि काल का सौन्दर्य। गन्ध कुसुम=फूलों की सुगन्ध। पराग=फूलों की रज। मृदुगति=धीमी चाल वाला। मलय समीर=मलय पर्वत से बहने वाली वायु। स्वेच्छाचारी=स्वच्छंद, अपनी इच्छा से कार्य करने वाला। मुक्त=जिस पर कोई बंधन न हो। प्रेम जंजीर=प्रेम का वन्धन।

भावार्थ—हे प्रभु यदि तुम शरद् ऋतु के चन्द्रमा की खिलने वाली चाँदनी हो तो मैं उस चाँदनी की शोभा से प्रभासित रात्रिकाल की सुन्दरता हूँ। यदि तुम कोमल फूलों के सुगन्धित पराग हो तो मैं मंद-मंद गति से बहने वाली मलय पर्वत से आती हुई पवन के समान हूं। यदि तुम स्वच्छन्द प्रकृति के मुक्त पुरुष हो तो मैं तुम्हें वन्दी बनाने वाली प्रकृति रूपी प्रेम की शृंखला हूँ। यदि तुम साक्षात् शिव हो तो मैं तुम्हारी शक्ति (पार्वती) हूँ।

तुम रघुकुल ... दिग्वसना।

शब्दार्थ—रघुकुल गौरव=रघुवंशकी प्रतिष्ठा। अचला=अटल। मधुमास= बसंत। पिक कुल कूजन तान=कोयल के सुंदर गायन की तान। मदन=कामदेव पंचशर हस्त=फूलों के पाँच बाँण हाथ में लिए। कामदेव के पाँच बाँणों के नाम ये हैं :—कमल, अशोक, आम्र, नव मल्लिका, नीलोत्पादन। मुग्धा=किशोरी, नव युवती। अनजान=भोली। अम्बर=आकाश। दिग्वासना=दिशाएँ ही जिसकी शस्त्र हैं ऐसी पृथ्वी।

भावार्थ—हे प्रभु यदि तुम रघुकुल गौरव रामचन्द्र हो तो मैं उसके प्रति सीताजी द्वारा की जाने वाली अटल भक्ति के समान हूं। यदि तुम आशा के बसन्त हो तो मैं उस बसंत ऋतु में कोयल के मधुर कण्ठ से गाए जाने वाले सुंदर गीत हूँ। यदि तुम पुष्प बाणों को धारण करने वाले कामदेव हो तो मैं तुम्हारे उन बाणों से पीड़ित किसी भोली किशोरी के समान हूँ। यदि तुम आकाश हो तो मैं उसकी उस पृथ्वी के समान हूं जिसकी दिशाएँ ही वस्त्र हैं।

तुम चित्रकार ... निर्मल व्याप्ति।

शब्दार्थ—चित्रकार=चित्र बनाने वाला। घनपटल श्याम=काले बादलों के पर्दे पर। तड़ि-तूलिका=विजली की लेखनी। रचना=बनाना। रण ताण्डव= प्रलय मचाने वाला, शिव का नृत्य। उन्माद नृत्य=मस्ती से भरा हुआ नृत्य।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुखर=बोलती हुई। मधुर=सुंदर। नूपर ध्वनि=बिछुओं की आवाज। नाद=स्वर। वेद ओंकार सार=परमात्मा संबंधी ज्ञान तत्व। शृंगार शिरोमणि=अत्यधिक शृंगारी। यश=खयाति। कुन्द=श्वेत, उज्ज्वल। इंदु=चन्द्रमा। अरविंद=कमल। शुभ्र=उज्ज्वल। निर्मल=स्वच्छ। व्याप्ति=फैलाव, विस्तार।

भावार्थ--यदि तुम काले बादलों के पर्दों पर सुंदर चित्र बनाने वाले चित्रकार हो तो मैं वह बिजली की तूलिका हूँ जिसकी सहायता से तुम चित्र बनाया करते हो। यदि तुम मस्ती से भरे हुए शिव के प्रलयङ्कारी नृत्य हो तो मैं दूसरी ओर नृत्य के अवसर पर नूपुरों से निकलने वाले मधुर स्वर के समान हूँ। यदि तुम अनहद ज्ञान, वेदों का तत्व और ओंकार हो तो मैं इन वेदों का रचयिता अत्यधिक शृंगारिक कवि हूं। यदि तुम यश हो तो मैं उसकी प्राप्ति हूँ। यदि तुम श्वेत चन्द्रमा के समान उज्ज्वल कमल हो तो मैं उस कमल की सुंदर सुगंध का विस्तार हूँ।

तुलसीदास

भारत के नभ ... दिङ् मण्डल।

शब्दार्थ- नभ=आकाश। प्रभापूर्य=तेज से भरा हुआ। शीतल च्छाय=शीतल छाया देने वाला। सांस्कृतिकसूर्य=संस्कृति का सूर्य। अस्तमित=छिपा हुआ। तमस्तूर्य=अंधकार से भरा हुआ। दिङ्मण्डल=दिशाएँ।

भावार्थ—भारतीय आकाश में चमकने वाला हमारी संस्कृति का सूर्य जो ज्ञान के तेजस्वी आलोक से भरा हुआ तथा संसार को सुख की शीतल छाया प्रदान करने वाला था, आज लुप्त प्राप्त बन गया। इसीलिए चारों दिशाओं में अंधकार छा गया। भाव यह है कि भारतीय संस्कृति के लोप हो जाने से भारत में ज्ञान का सच्चा प्रकाश मिट गया और अज्ञान का अँधेरा चारों ओर छा गया।

उर के आसन ... पर शत दल।

शब्दार्थ—शिरस्त्राण=सिर पर धारण किए जाने वाली लोहे की टोपी। उर्मिल=पीड़ा से भरी लहरें। निश्चलत्प्राण=निर्जीव प्राण। शतदल=कमल।

भावार्थ—आज हम पर मुसलमान शासन कर रहे हैं। हमने अपनी शक्ति खोदी है और उनसे अपनी रक्षा करने में हम असमर्थ हैं। सिर पर धारण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किए जाने वाले लोहे के टोप को हमने अपने हृदय पर धारण कर लिया है। अर्थात् मुसलमानों के डर से हमारे हृदय इतने भयभीत बन गए है कि हमने सिरस्त्राण को वजाय सिर पर रखकर युद्ध करने के, हृदय पर धारण कर लिया है, जिससे कि हम हृदय को भयभीत होने से बचा सकें। चारों ओर दुख भरा जल लहरा रहा है। इस दुख भरे जल में हमारे प्राण निर्जीव कमल की भांति निश्चेष्ट और निष्क्रय बने हुए हैं। क्योंकि सूर्य के अस्त होने पर कमल मुरझा जाता है उसी प्रकार भारतीय सांस्कृतिक सूर्य के अस्त हो जाने के कारण भारत के कमल रूपी प्राण भी मुरझा गए हैं।

शत शत ज्यों दुस्तर।

शब्दार्थ—शत-शत=सौ सौ। अब्दों=वर्षों, सालों। आकुंचित=कुटिल, टेढ़ी। भ्रू=भौंहें। कुटिल=टेढ़ा। भाल=मस्तक।

भावार्थ—उन शासकों की भौंहों का टेढ़ापन और मस्तक की चालों का वक्र पन सौ सौ वर्षों की संध्या के समान अंधकार बनकर भारतीय नभ पर छा गया। अंधकार यह आकाश पर छाये हुए काले मेघ समूह के समान विकट था।

आया पहले घिर घिर कर।

शब्दार्थ—तदनंद=उसके वाद, अंत में। क्राँत=जिस पर आक्रमण हुआ हो। भ्राँत=व्याकुल, विकल।

भावार्थ—उन मुगलों ने सबसे प्रथम पंजाब प्राँत को विजय किया। तदुपराँत कोशल विहार आदि देशों को अपने आक्रमण का लक्ष्य बनाया फिर तो एक के बाद एक सभी देश उनके आक्रमणों से व्याकुल बन उनके अधीन बन गए।

मोगल दल स्वर तर।

शब्दार्थ—मोगल-दल=मुगल समुदाय। जलद-यान = बादलों के जहाज। दर्पित पद = गर्व से भरा कदम। उन्मदनद = मस्ती से बहती हुई नदी, बाढ़ के समान तेज गति से बहने वाली नदी। दिग्देश = देश की सभी दिशाएँ। शर = बण स्वर = आवाज। तर = नीचे।

भावार्थ—जिस प्रकार आकाश में काले बादल उमड़ पड़ते हैं उसी प्रकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भारत में मुगलों का समुदाय उमड़ पड़ा है। मस्ती से बहती हुई बाढ़ की सी गति लिए नदी के समान पठान लोग अपने गर्व से भरे कदम भारत में उठा रहे हैं। शस्त्रों के जोर से अपने ज्ञान का प्रचार भारत की सभी दिशाओं में कर रहे हैं। (इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि मुसलमानों के डर से भारतीय ज्ञान बहा जा रहा है अर्थात् नष्ट हो रहा है।)

छाया ऊपर ध्वनि हर हर।

शब्दार्थ—दह = जलन। दुर्निवार = जिसका निवारण करना कठिन हो, अनिवार्य। प्लावन = बाढ़। प्रलयधार = बहुत तेज गति।

भावार्थ :—हिन्दुओं को बचने के लिये कोई स्थान नहीं है उनके ऊपर अज्ञान का घना अंधकार छाया हुआ है। वज्र के समान मुसलमानों के अत्याचार उन्हें दुख की आग में जला रहे हैं। इन अत्याचारों को रोका नहीं जा सकता। पैरों के नीचे हर हर की ध्वनि करता हुआ प्रलय की धार के समान मुगलों की शक्ति का तूफान चल रहा है।

रिपु के समक्ष आभागत।

शब्दार्थ :—रिपु = शत्रु। समक्ष = सामने। प्रचण्ड=शक्ति शाली। आतप=धूप, प्रकाश। तम=अन्धकार। करोद्दंड=तेज किरणें, निश्चल=निश्चेष्ट निष्क्रिय। आभागत=तेज से हीन।

भावार्थ :—शत्रु के लिए जो अत्यन्त भयंकर था, शत्रु रूपी तिमिर पर जो धूप की प्रखर किरणों के समान था। अर्थात् प्रकाश की तेज किरणें जिस प्रकार अन्धकार को विनिष्ट कर देती हैं; उसी प्रकार जिन्होंने शत्रु को छिन्न-भिन्न कर दिया वही बुन्देलखण्ड प्रदेश आज मुगल सैन्य के सामने निश्चेष्ट और निष्क्रय बना हुआ है। उसका तेज आज नष्ट हो गया है।

निःशेष छाया श्लथ।

शब्दार्थ :—निःशेष=समाप्त। सुरभि=सुगन्ध। कुरवक=एक फूल विशेष संलग्न वृत्त=डाल से लगी हुई। चिंत्य प्राण=संदिग्ध। चिन्ह म्लान=मलिन चिन्ह। श्लथ=दुर्बल।

भावार्थ :—बुदेलखण्ड की दशा अब उस कुरवक फूल की तरह हो गई है जिसकी समस्त सुरभि नष्ट हो गई है (भाव यह कि बुन्देलखण्ड की समस्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शक्ति नष्ट भ्रष्ट हो गई हैं) यह बुंदेलखंड रूपी फूल डाल से तो चिपका हुआ है परन्तु उसके प्राण संदिग्ध हैं, अर्थात् वह जीवित है अथवा मृत्यु को प्राप्त हुआ, कुछ कहा नहीं जा सकता। किसी भी क्षण टूट कर वह फूल नीचे गिर सकता है। (भाव यह है कि बुन्देलखण्ड यद्यपि अभी तक स्वाधीन है, परंतु उसकी स्वाधीनता संदिग्ध है। किसी भी क्षण वह पराधीन बनाया जा सकता है।)

जैसे किसी उत्सव के बीत जाने पर उसके मलिन चिन्ह और उसकी दुर्बल छाया बच रहती है, उसी प्रकार की दशा बुन्देलखण्ड की हो गई है। उसका विगत वैभव नष्ट हो चुका है और खंडहर रूप उसके मलिन चिन्ह शेष बच रहे है।

तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती ... तोड़ती पत्थर।

शब्दार्थ--सरल है।

भावार्थ--वह पत्थर तोड़ने वाली थी। मैंने उसे इलाहाबाद जाने वाले मार्ग पर पत्थर तोड़ते हुए देखा था।

कोइ न छाया दार ... अट्टालिका ; प्राकार।

शब्दार्थ—तले=नीचे। श्यामतन=साँवला शरीर। भरबँधा यौवन=पूर्ण रूप से भरा पूरा यौवन। नतनयन=झुकी हुई आँखें। प्रिय कर्म रत मन=रुचिकर कार्य में लगा हुआ मन। गुरु=भारी। प्रहार=चोट। तरु-मालिका = वृक्षों का समूह। अट्टालिका = ऊंचे ऊंचे भवन। प्रकार=दीवालें।

भावार्थ—जिस स्थान पर वह पत्थर तोड़ रही थी वहाँ कोई छाया दार वृक्ष नहीं था, जिसके नीचे बैठकर वह पत्थर तोड़ सकती। उसका श्यामल शरीर भरे हुए यौवन से गदराया हुआ था। आँखें नीचे की ओर झुकी हुई थीं। मन अपने प्रिय कार्य पत्थर तोड़ने में लगा हुआ था। उसके हाथ में भारी हथौड़ा था जिससे बार बार वह पत्थर पर चोट कर रही थी। जहाँ वह पत्थर तोड़ रही थी उसके सामने ऊंचे ऊंचे भवन दीवालें और वृक्षों की पंक्तियाँ खड़ी हुई थीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चढ़ रही तोड़ती पत्थर।

शब्दार्थ—दिवा=सूर्य । तमतमाता = क्रोधित । भू=पृथ्वी । चिनगी= चिनगारी ।

भावार्थ—गर्मियों के दिवस थे। धूप बढ़ती जा रही थी। दुपहर होने पर तो सूर्य बहुत तेजी से चमकने लगा, मानो वह क्रोध से तमतमा रहा हो। शरीर को झुलसाने वाली लुएं चलने लगी। गर्मी की जलन से पृथ्वी इस प्रकार जलने लगी मानों आग में रुई जल रही हो। पृथ्वी पर धूल की गर्द छा गई हो और वह आग की चिनगारी के समान प्रतीत होने लगी।

ऐसी कठिन दुपहरी में भी वह पत्थर तोड़ रही थी।

देखते देखा मैं तोड़ती पत्थर।

शब्दार्थ—छिन्नतार=उदास दृष्टि से। सितार=वीणा। छन=पल। सुघर= सुगठित शरीर वाली। सीकर=पसीना। लीन=लग कर। कर्म=कार्य।

भावार्थ—उसने मुझे अपनी ओर एक बार निहारते हुए देखा। उसने सामने खड़े ऊंचे भवन की ओर उदास भरी दृष्टि से देखा। यह जानकर कि उसे कोई देख नहीं रहा है, उसने मेरी ओर देखा। उसकी दृष्टि ऐसी दयनीय थी जो प्रायः उस व्यक्ति की आँखों में दिखलाई पड़ती हैं, जिसने कि मार खाई हो परन्तु जो रो न सका हो। भाव यह है कि उसकी आँखों से उसके जीवन की करुण दशा झाँक रही थी। जैसे कोई सितार से सधा हुआ स्वर निकालता है वैसे ही उस स्त्री के मुख से कुछ शब्द निकले। उन शब्दों की ध्वनि ऐसी थी जो मैंने आज तक नहीं सुनी थी। कुछ ही क्षण बाद उसका शरीर सिहरन से भर गया। माथे से पसीने की बूंदें गिर पड़ीं और वह पुनः अपने पत्थर तोड़ने के कार्य में मग्न हो गई। मानो इस प्रकार उसने मुझे मौन भाव से बतला दिया कि मैं पत्थर तोड़ने का कार्य करती हूँ।

× × ×

भारति जय अर्थ भरे।

शब्दार्थ—कनक=स्वर्ण, सोना। शस्य=धान्य। पदतल=पैरों के नीचे। शतदल=कमल। गर्जितोर्मि=गरजती हुई लहरें। शुचि=पवित्र। चरण युगल= दोनों पैरों। स्तव=स्तुति। बहु अर्थ भरे=अनेक अर्थों से भरे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ-भारत संसार में विजयी बने। सुवर्ण, धान्य और कमल से उसका आँचल भर उठे। भाव यह है कि भारत धन, धान्य, अन्न, वैभव और कला सभी में उन्नतिशील बने।

भारत के पैरों के नीचे लंका शतदल कमल के समान शोभित है, मानो भारत शतदल कमल के ऊपर खड़ा हुआ हो। भारत के पवित्र युगल चरणों को सागर की गर्जन करती हुई लहरें धोया करती हैं, मानो वे भारत की अनेक अर्थों से भरी हुई स्तुति कर रही हों।

तरु-तृण ... हारे गले।

शब्दार्थ—तरु=वृक्ष। तृण=घास। बन लता = बन की लताएं। वसन= वस्त्र। खचित = भरे हुए। सुमन = फूल। ज्योतिर्जल=प्रकाश की भाँति सफेद जल। धवलधार=उज्ज्वल गति। हार गले = गले का हार।

भावार्थ—विविध प्रकार के वृक्ष और लताएं भारत के वस्त्र के समान हैं। वृक्ष और लताओं पर छाए हुए विविध प्रकार के फूल ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे भारत ने अपने आँचल में फूलों को भर लिया हो। (भारत के उर पर बहने वाली) गंगा की, उज्ज्वल प्रकाश के समान प्रभासित जलधारा ऐसी सुशोभित होती है, जैसे वह भारत के गले का उज्ज्वल हार हो।

मुकुट ... मुखरे।

शब्दार्थ—मुकुट = ताज। शुभ्र = उज्ज्वल, सफेद। हिम तुषार = बर्फ। ध्वनित = आवाज करती हुई। प्रणव = ओंकार मंत्र, ओंकार = परमात्मा सूचक शब्द। उदार=विस्तृत। शतमुख = सौ मुखों से। शतरव = सौ स्वरों से। मुखरे = बोले।

भावार्थ—शुभ्र हिमालय भारत के मस्तक पर मुकुट के समान सुशोभित है। भारत के प्राणों में ओंकार ध्वनि गूंज रही है। भारत की फैली हुई विस्तृत दिशाएं सौ मुखों और सौ स्वरों से इसी ध्वनि का गान कर रही हैं। भाव यह है कि समस्त भारत में धर्म की ध्वनि गूंजने लगी है।

कैसी बजी ... तू क्यों रही क्षीण।

शब्दार्थ—बीन=वीणा। दिन=दिनों से। दीन=दुर्बल। ज्योत्स्नामयी =

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशमयी। अखिल=समस्त। मायापुरी=इन्द्रपुरी। लीन स्वर=स्वर में मग्न। सलिल=जल। मीन=मछली। स्पष्ट=साफ। ध्वनि=आवाज। धनि=युवती। यामिनी=रात्रि। मंद पद=धीमी चाल। कुंज=वह स्थान जो वृक्ष-लताओं से ढका रहता है। उर की गली=हृदय रूपी गली। मंजु=सुंदर। मधु गुंजरित=पराग पर गुंजारते हुए। अलिदल=भौंरों का समूह। समीचीन=भली-भाँति आसीन। आरक्त=लाल रंग वाले। पाटल=एक पुष्प विशेष। पटल=समूह। माधवी=एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं। मलिन=उदास दिवस निशि=रात्रि दिन। क्षीण=दुर्बल।

भावार्थ—यह ऐसी कौन सी बीन बज रही थी जिसके स्वरों से बहुत दिनों की हृदय हीन को प्रसन्न होने की प्रेरणा मिल रही है। यह हृदय में बाँसुरी का कैसा मधुर स्वर गूंज रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो इन्द्रपुरी के समान मेरा हृदय इसकी ज्योति से प्रकाशमान हो गया। जिस प्रकार मछली जल में मग्न रहती है, उसी प्रकार मेरा हृदय उस स्वर में ध्यान मग्न हो गया है।

एक स्पष्ट स्वर मेरे कानों में गूंज रहा है कि इस सुन्दर सजी हुई रात्रि काल में हे तरुणी पास आ। धीमी चाल से चलती हुई मेरे हृदय की गली में बन्द होजा।

सुन्दर फूलों के पराग के लिए भौंरों के समुदाय को गुंजारते हुए देखकर पाटल पुष्प की लाल पंखड़ियाँ खिल उठी हैं। माधवी लता की नवीन कलियों का समूह प्रस्फुटित हो गया है। ऐसे मधुमय क्षणों में तू रात्रि दिवस उदास मन और क्षीण क्यों बनी हुई है।

श्री सुमित्रानन्दन पंत

प्रार्थना

जग के उर्वर   चिर नूतन।

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ—उर्वर=उपजाऊ। ज्योतिर्मय=प्रकाशमान। लघु-लघु=छोटे छोटे

तृण=तिनके। तरु=वृक्ष । अव्यय=निर्विकार, अक्षय। चिर-नूतन=सदैव नया होने वाला।

भावार्थ -कवि कहता है कि हे जीवन तुम प्रकाशमान बन कर संसार के उर्वर प्रदेश पर बरसो। (संसार को कवि ने उर्वर माना है, क्योंकि अपने कर्मों द्वारा वह उसे अधिक उज्ज्वल, आकर्षक और उपयोगी बना सकता है। ऐसे संसार में सदैव महापुरुषों ने जन्म लिया है। जीवन को ज्योतिर्मय इसलिए सम्बोधित किया गया है क्योंकि शुभ कार्यों द्वारा हम जीवन को उज्ज्वल और प्रकाश मान बना सकते हैं। अतएव इन दो पंक्तियों का सांकेतिक अर्थ है कि इस विश्व की धरती पर उज्ज्वल और प्रकाशमान जीवन धारक महापुरुष उत्पन्न हों।)

हे जीवन रूपी सावन के बादलों तुम संसार के सभी क्षेत्रों में छोटे छोटे पौधों, तिनकों से लेकर वृक्षों पर कभी नष्ट न होने वाले और सदैव नए बने रहने वाले प्रकाश और ज्ञान की वर्षा करे। (कवि ने जीवन को सावन के मेघ की उपमा दी है। मेघ अव्यय होते हैं। उनमें बाह्य परिवर्त्तन हो सकता है, परन्तु उनका आंतरिक स्वरूप नहीं बदलता। क्षण क्षण में विविध रूप धारण करके मेघ चिर नूतन भी रहते हैं। इसी प्रकार जीवन भी ऐसे ही चिर अव्यय और चिर नूतन मेघों के समान बदले। अर्थात् आंतरिक रूप से अपरिवर्त्तन शील होते हुए भी जीवन का स्वरूप सदैव नया ही रहे।)

बरसो कुसुमों   सुख यौवन।

शब्दार्थ—कुसुमों=फूलों। मधुवन=पराग बन कर। प्रणय=प्रेम। स्मित=मुसकान। स्वप्न=सपनें। अधर=होठ। पलकों=आँखों। उर=हृदय।

भावार्थ—हे प्रकाशमान जीवन तुम फूलों में मधु बनकर बरसो। (भाव यह है कि तुम विश्व के प्रत्येक अंग को उसकी विशेषता के अनुसार जीवन दान दो। फूलों को पराग की आवश्यकता होती है, अतएव फूलों में तुम मधु बनकर समा जाओ।) इसी प्रकार तुम मानव के प्राणों में चिरन्तन प्रेम की रस धार भर दो। जिससे मनुष्य का जीवन प्रेम से आप्लावित हो जाय। तुम्हारे द्वारा मानव के होठों पर मुस्कराहट और पलकों में नए जीवन के मधुर सपनें जाग

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उठें । तुम मानव के हृदय में सुख पूर्ण यौवन का उल्लास जगाओ । भाव यह है कि प्रकाश पूर्ण नए जीवन को धारण कर मनुष्य पूर्णता को प्राप्त कर ले। मनुष्य का दुख दर्द समाप्त हो जाय । उसके चेहरे पर हास्य खिल उठे और वह सुख यौवन के उल्लास तथा चिरन्तन प्रेम से भर जाय ।

छू छू जग .... आलिंगन ।

शब्दार्थ—मृत=मरे हुए । रजकण = मिट्टी के कण । तृण=पौधे, तिनके। चेतन=प्राण । मृन्मरण=मृत्यु को प्राप्त । प्राणों का आलिंगन = प्राणों का स्पर्श ।

भावार्थ—कवि कहता है कि हे ज्योतिर्मय जीवन संसार के निर्जीव पदार्थों को अपने स्पर्श से प्राणवान बना दो । छोटे छोटे वृक्षों, पौधों और तिनकों में नई चेतना शक्ति भर दो। (भाव यह है कि तुम उस धूल को जिसमें अब उर्वर बनने की शक्ति नहीं है, जो मृतप्राय हो गई है उसे नई चेतना से प्राणवान बना दो । कवि चाहता है कि संसार के जिन पदार्थों की सार्थकता, उपयोगिता नष्ट हो गई है, जो मृत प्राय और जड़ बन गए हैं, वे पुनः सार्थक और उपयोगी बन जाँय । उनमें पुनः नया जीवन जाग उठे ।)

यही नहीं तुम अपने प्राणों के मधुर स्पर्श से साक्षात् मरण को भी प्राणवान बना दो। अर्थात् मृत्यु को प्राप्त पदार्थों को भी नया जीवन प्रदान करो ।

बरसो सुख .... के सावन ।

शब्दार्थ—सुखमा = शोभा । घन=मेघ, बादल । दिश-दिश=दिशा-दिशा । पल-पल में=क्षण क्षण में । संसृति=संसार ।

भावार्थ—सावन की ऋतु के समान संसार को उल्लास प्रदान करने वाले, हे संसृति के सावन, ऐ जग जीवन के बादलों तुम संसार में सुख बनकर बरसो। संसार को सुख की शोभा से भर दो । संसार की प्रत्येक दिशा में प्रत्येक क्षण बरसो । जीवन को नवीनता और नए रस से अनुप्राणित करो । मृत प्राय संसार को नई चेतना शक्ति से भरो ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Jangamawadi Math, Varanasi
(Acc. No.).........3323.........

मौन निमंत्रण

स्तब्ध ज्योत्सना मुझ को मौन ।

शब्दार्थ—स्तब्ध=शान्त, मौन । ज्योत्सना=चाँदनी । शिशु=बालक । नादान=भोला, अनजान । पलकों=आँखों । सुकुमार=कोमल । विचरते=चलते । अजान=अज्ञान, अनजाने । स्वप्न अजान=वे स्वप्न जिनका पूर्व ज्ञान नहीं है । निमंत्रण=बुलाना ।

भावार्थ—जिस प्रकार एक अनजान बालक संसार के विविध क्रिया-कलापों के बीच आश्चर्य से भर जाता है उसी प्रकार रात्रि के शान्त वातावरण में अपने को चाँदनी के बीच पाकर भोले शिशु की भांति संसार चकित रह जाता है ।

रात्रि में विश्व की कोमल आँखों में जब अनेक अनजान स्वप्न विचरते हैं । ऐसी परिस्थित में न जाने कौन, चुपचाप नक्षत्रों के माध्यम से मुझे अपने पास बुलाता है । भाव यह है कि जब सारा संसार नादान शिशु की भांति स्तब्ध चाँदनी में सोया रहता है, उसकी आंखें सपनों में डूबी हुई रहती हैं, ऐसे शान्त वातावरण में ये नक्षत्र क्यों जग रहे हैं । कवि सोचता है कि ये नक्षत्र मुझे उस चिरंतन सत्ता का आभास दे रहे हैं । इनके द्वारा मुझे परम ब्रह्म का निमंत्रण प्राप्त हो रहा है ।

सघन मेघों तब मौन ।

शब्दार्थ—सघन=अन्धकार के समान काले । मेघों=बादलों । भीमाकाश=विशाल आकाश । तम साकार=अन्धकार का साक्षात रूप । दीर्घ=लम्बी । समीर=वायु । निश्वास=साँसें । प्रखर=तेज । पावस=वर्षा । तपक=चमक । इंगित=इशारा । मौन=चुपचाप ।

भावार्थ—जब कि काले काले बादलों से घिरा हुआ विशाल आकाश भयंकर गर्जना करता है, अन्धकार का साक्षात रूप लिए आकाश अपनी गर्जना से संसार में भयंकर वातावरण का सृजन करता है, जब वायु तेज गति से बहने लगती है मानो जैसे वह आँतरिक दुख के कारण लम्बी साँसें भर रही हो, जब कि घनघोर वर्षा हो रही हो, ऐसी भयानक स्थिति में बिजली की चमक के माध्यम से कौनसी अनजान सत्ता मुझे अपनी ओर बुलाने का संकेत कर रही

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। वह अनजान सत्ता कौन है।

देख वसुधा का ... भेजता मौन।

शब्दार्थ—वसुधा=पृथ्वी। यौवन भार=भरा पूरा यौवन। मधुमास=बसंत ऋतु। विधुर=वह व्यक्ति जिसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी हो। मृदु उद्‌गार= मधुर भावनाएं। कुसुम=फूल। सोच्छ्‌वास = उच्छ्‌वास सहित। सौरभ=सुगन्ध। मिस=बहाना।

भावार्थ—जब पृथ्वी के भरे पूरे यौवन को देखकर वसंत आनन्द से झूम उठता है। (भाव यह है कि बसंत आने पर पृथ्वी पुष्पों से लद जाती है। प्रकृति में अनुपम सौन्दर्य आ जाता है। इस प्रकार कवि ने बसन्त की शोभा को पृथ्वी का यौवन माना है। यहाँ कवि ने वसुधा को नायिका के रूप में तथा मधुमास को नायक के रूप में प्रगट किया है।)

जब फूल उसी प्रकार उच्छ्‌वास के साथ खिलने लगते हैं, जैसे किसी विधुर के हृदय से उच्छ्‌वास पूर्ण कोमल भावनाएँ निकलती हैं, (यहाँ कवि ने फूलों को विधुर केहृदय के उद्‌गारों का रूप दिया है। जिस प्रकार पत्नीहीन वियोगी के उद्‌गारों में उसकी आन्तरिक आह छिपी हुई रहती है, उसी प्रकार फूल में भी सुगन्धि भरी रहती हैं, इसलिए कवि फूलों के विकसित होने को उच्छ्‌वास सहित बतलाता है।) तब उन फूलों की सुगन्धि से बहाने कौन मुझे अपना संदेशा चुपचाप भेजता है।

क्षुब्ध जल ... बुलाता मौन?

शब्दार्थ—क्षुब्ध=असंतुष्ट, व्याकुल। जल शिखरों=जल में स्थित चट्टानें। वात=वायु। सिंधु=समुद्र। फेनाकार=फेन के समान। व्याकुल=दुखी। विथुरा= बिखरा देना, नष्ट-भ्रष्ट कर देना। लहरों के कर=लहरों के हाथ।

भावार्थ—जब प्रचण्ड वायु सागर की लहरों को समुद्र में स्थित चट्टानों से टकराकर फेनाकार बना देती है, जिससे कि समुद्र के जल में बुलबुले ही बुल-बुले पैदा हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे इन बुलबुलों में समुद्र की व्याकुलता प्रकट हो रही हो। इन बुलबुलों को भी वायु अपनी शक्ति से नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं। ऐसी स्थित में, सागर की लहरों के रूप में अपने हाथ उठा कर कौन मुझे अपने पास बुलाता है। (सागर में जो लहरें उत्पन्न होती हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें देखकर ही कवि सोचता है कि सागर के हृदय में कोई शक्ति छिपी हुई है जो हाथ उठा उठाकर मुझे अपनी ओर बुला रही है)।

मेरे मौन ।

स्वर्ण सुख

शब्दार्थ--स्वर्ण=सोना । श्री=विभूति, सम्पदा । सौरभ=सुगन्धि । भोर=प्रातःकाल । बोर=डुबोना । विहगकुल=पक्षियों का समुदाय । कलकण्ठ=मधुर कण्ठ । भू=पृथ्वी । अलस्य=आलस्य से भरे । पलक दल=आँखों के दल ।

भावार्थ--जब प्रभात की बेला (सूरज की सुनहली किरणों से) सारे संसार में सोना बिखेरती है । उसे सुख,विभूति और सौरभ से परिपूर्ण बनाती है । (सूरज उदय होने पर जन समुदाय कर्म रत बनता है और सुगंध लुटाते हुए फूल खिलते हैं !) सब प्राणी सुख मग्न बनते हैं । पक्षियों का समुदाय अपने मधुर कण्ठ की संगीत लहरी से आकाश और पृथ्वी को मिला देता है अर्थात् जब क्षितिज तक पक्षियों की स्वर लहरी फैल जाती है तब कौन सूर्य की किरणों में आकर मेरी नींद से अलसाई पलकों को खोल देता है ।

तब मौन ।

तमुल तम

शब्दार्थ---तुमुल=घना । तम=अंधकार । एकाकार=एकमय होना, एक में मिल जाना । ऊँघना=नींद लेना । भीरु=डरे हुए । झींगुर कुल=झींगुर समुदाय । तंद्रा=नींद । खद्योतों=नक्षत्रों ।

भावार्थ---जब समस्त संसार एक साथ ही घने अंधकार में एकाकार होकर ऊँघता रहता है । (रात्रि हो जाने पर सभी पदार्थ अपने वास्तविक रंग को छोड़कर काले रंग से ढक जाते हैं, इसलिए अंधकार के कारण उनका वस्तु भेद मिट जाता है और वे एकाकार बन जाते हैं) । उस अंधकार से भयभीत होकर झींगुरों का समुदाय अपनी झनकार से वातावरण को भर देता है । ऐसा लगता है जैसे उस झनकार से जन समुदाय की आँखों में समाई नींद की अलसता भय से काँप गई हो, ऐसी स्थिति में वह कौन सी अज्ञात शक्ति है जो नक्षत्रों की चमक के माध्यम से मेरा पथ प्रदर्शन करती है ।

कनक छाया

दृग मौन !

शब्दार्थ---कनक छाया=सुवर्ण छाया, सूर्य की स्वर्णिम किरणें । सकाल=उषा काल । कलिका=कली । सुरभि पीड़ित=सुगंध से व्याकुल, विह्वल ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मधुपों=भौंरों । दृग=आखें, दृष्टि ।

भावार्थ– उषा की स्वर्णिम छाया में जब कि कलियाँ अपने हृदय को खोल देती हैं, अर्थात् वे पूर्ण रूप से खिल उठती हैं, तब उनकी सुगन्ध से पागल बनकर बाल मधुप प्रेमाधिक्य के कारण तड़प उठते हैं। उनके हृदय की प्रेमविह्वलता, उनके गुंजार का रूप ले लेती है।

ऐसे समय में आँसू की बूँदों के रूप में नीचे ढुलक कर कौन सी अज्ञात सत्ता मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

विद्या कार्यों   जग में मौन।

शब्दार्थ –गुरुतर=भारी । दिवस=दिन । सुवर्ण=सोने के रंग का। अवसान=सन्ध्याकाल । शून्य=खाली । अमित=बहुत अधिक । अपार=विशाल। आकुल प्राण=दुखी प्राण । छायाजग=स्वप्नलोक की छाया ।

भावार्थ--दिनभर संसार के विविध कार्य कलापों में व्यस्त रह कर जब मैं थक जाता हूँ, तब दिवस की समाप्ति पर सोने के रंग वाली संध्या के होने पर शय्या पर विश्राम करता हुआ अमित सुख और शांति अपने दुखी प्राणों को प्रदान करता हूँ। उस समय यह संसार मेरे लिए छाया मात्र हो जाता है, और मैं स्वप्न लोक में विचरण करने लगता हूँ। तब न जाने कौन चुपचाप मुझे इस स्वप्न लोक के छाया जग में विचरण कराता है।

न जाने कौन   हो कौन ।

शब्दार्थ—द्युतिमान=छविमान, प्रकाशमान । अबोध=ज्ञान रहित, नादान अज्ञान=अजान । अनजान=अज्ञात । छिद्रों=छेदों । सहचर=साथी ।

भावार्थ—कवि कहता है कि हे प्रकाशमान छवि तुम कौन हो ? मुझे अजान, अबोध प्राणी समझकर तुमने सदैव मेरा पथ प्रदर्शन किया है। जिस प्रकार बाँसुरी के छिद्रों में श्वांस भर कर संगीत उत्पन्न किया जाता है, उसी प्रकार तुम मेरी अन्तरात्मा को संगीत मय बनाते हो।

मेरे जीवन के सुख-दुख आदि सभी अवसरों पर तुम मेरे अज्ञात साथी हो। मैं नहीं कह सकता कि तुम कौन हो ?

(कवि का अभिप्राय है कि परम ब्रह्म की अज्ञात सत्ता सर्वत्र व्याप्त है। प्रकृति के प्रत्येक उपादान में उसकी सत्ता निहित है। मानव प्राणों के विविध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कार्य कलाप उसी की प्रेरणा के फल हैं। यह अज्ञात सत्ता सदैव जीवात्मा के निकट रहती है, परन्तु कवि के शब्दों में जीवात्मा उस अज्ञात सत्ता के साहचर्य से सदैव अनभिज्ञ बनी रहती है। उस अज्ञात सत्ता के प्रति उसके हृदय में सदैव एक कौतूहल की भावना रहती है, क्यों कि प्रकृति के रूप में उस अज्ञात सत्ता का छायाभास मात्र ही उसे होता है)।

संध्या

कौन तुम ... भ्रू चाप।

शब्दार्थ—रूपसि=सुन्दरि। व्योम=आकाश। छवि=शोभा। केश-अलाप=बालों का समुदाय। मधुर=कोमल। मंथर=धीमा। मृदु = मधुर। मौन=शांत। अधरों = होठों। मधुपालाप = भौंरों की गुंजार। पलक=आँख। निमिष = पलक का गिरना। पदों=पैरों। चाप=पैरों की आहट। संकुल=घना, भरा हुआ बंकिम = कुटिल, टेढ़ी। भ्रू चाप=धनुषाकार भौंहें।

भावार्थ—संध्याकाल का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि हे सुंदरि तुम कौन हो ? आकाश मार्ग से शांत भाव से तुम धरती पर उतर रही हो। अपनी छाया की शोभा में ही तुम छिपी हुई प्रतीत होती हो, अर्थात् तुम्हारा वास्तविक स्वरूप दिखलाई नहीं देता वरन् तुम्हारी छाया मात्र ही दृष्टिगत होती है। (संध्या का रंग काला होने से कवि के शब्दों में वह अपनी छाया में ही छिपी हुई जान पड़ती है)। तुम्हारे सुनहरे बालों का समुदाय चारों ओर फैला हुआ है। (संध्या समय सूरज डूबने पर उसकी पीली किरणें चारों ओर छा जाती हैं। इन सुनहरी किरणों से कवि ने संध्या के केशों का रूपक बाँधा है)।

तुम्हारा रूप बड़ा सुंदर, चाल बड़ी धीमी और तुम्हारा स्वभाव अत्यंत कोमल है और तुम बिल्कुल शांत बन गई हो। अपने होठों में तुमने भौंरों की मधुर गुंजार छिपाली है। (संध्याकाल होते ही कमल आदि पुष्प बन्द हो जाते हैं। फलतः उन पर मँडराने वाले भौंरे भी उन पर गुंजारना बन्द कर देते हैं)। कवि ने इसी भाव को इस रूप में प्रकट किया है कि संध्या ने भौंरों के गान अपने होठों में बन्द कर लिए हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तुम्हारी आँखें अलसाई हुई हैं। पैरों से हलकी आहट हो रही है। तुम्हारी धनुषाकार भौंएं टेढ़ी बनी हुई हैं और तुम घने भावों की प्रतिमूर्ति बनी हुई हो।

मौन केवल

तुम कौन ?

शब्दार्थ—मौन = चुप, शांत। ग्रीव=गर्दन। तिर्यक = टेढ़ी, तिरछी। चम्पक=चम्पे का फूल। द्युति = छवि। गात = शरीर। नयन = आँखें। मुकुलित = खिले हुए। नतमुख = नीचा मुख। जलजात=कमल। देह=शरीर।

भावार्थ—तुम बिल्कुल शांत बनी हुई हो। तुम्हारी तिरछी गर्दन है, चम्पा की कली के समान शोभायमान तुम्हारा शरीर है। नेत्र कलियों के समान खिले हुए है। नीचे की ओर झुका हुआ मुंह चन्द्रमा के समान है। प्रत्येक पल तुम्हारे शरीर की शोभा तुम्हारी छाया में ही समाई रहती है। हे ऐसी सुन्दरी तुम कहाँ रहती हो ?

अनिल पुलकित

में मौन।

शब्दार्थ—अनिल=वायु, हवा। स्वर्णाचल=सोने का पर्वत सुमेरु पर्वत। लोल=चंचल। मधुर=कोमल। नूपर ध्वनि=घूंघरों का स्वर। खगकुल रोल= पक्षियों के समुदाय की आवाज। से=समान। जलदों=बादलों। पर = पङ्ख।

भावार्थ—वायु के रूप में तुम्हारे जो उच्छ्वास निकल रहे हैं, तब ऐसा प्रतीत होता है जैसे स्वर्ण गिरि सुमेरु ही चंचल हो उठा हो (संध्या का रंग सूर्य डूबने के अवसर पर स्वर्ण रंग का होता है। यहाँ कवि ने वायु को संध्या के हृदय से निकलने वाले उच्छ्वासों का रूप दिया है। जब वायु चलती है तब कवि के शब्दों में ऐसा प्रतीत होता है मानों संध्या के रूप में सुमेरु पर्वत ही चंचल हो उठा हो।) पक्षियों का समुदाय मधुर ध्वनि कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानों यह तुम्हारे नूपरों की मधुर ध्वनि है। सीप के समान सफेद बादलों के पंख खोलकर तुम आकाश में शांत भाव से उड़ी जा रही हो। (भाव यह है कि संध्या समय आकाश का रूप श्यामल पड़ता जाता है। फलतः कवि ने प्रकृति के इस व्यापार को इस रूप में प्रगट किया है कि संध्या काल जैसे बादलों के पङ्ख लगाकर आकाश में उड़ी जा रही हो।)

लाज से अरुण

तुम मौन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ--लाज से=शर्म से । अरुण-अरुण = लाल लाल । सुकपोल= सुन्दर कपोल । मदिर=मत्त करने वाले, उन्मत्त बनाने वाले । अधरों=होठों । सुरा=शराब । अमोल=अमूल्य । पावस घन=वर्षा के बादल । स्वर्ण हिंडोल= सोने का झूला । एकाकिनी=अकेली । मन्थर=मन्द ।

भावार्थ—तुम्हारे सुन्दर कपोल लाज के कारण आरक्त हो उठे हैं । संध्या की लालिमा को कवि ने संध्या के अरुण कपोलों का रूप दिया है ।) वर्षा ऋतु के मेघ तुम्हारे लाल लाल होठों की उन्मत्त करने वाली सुरा के समान है । क्योंकि संध्या के होठों का रंग सोने के समान है । इसलिये तुम्हारे होठों में छिपे हुए वर्षा के बादल ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे वे स्वर्ण हिंडोले में झूल रहे हो ।

हे मधुर और मन्द गति वाली मौन एकाकिनी बतलाओ तो सही तुम कौन हो ?

(प्रस्तुत कविता में पंत जी ने संध्या का मानवीयकरण किया है । अतएव संध्याकाल के समस्त प्राकृतिक उपादान यहाँ संध्या के नारी चित्रण के प्रतीक बन कर आए हैं ।)

नौका विहार

(जिस समय यह गीत लिखा गया था, उन दिनों कवि कालाकांकार में रहा करता था । एक संध्या को कवि ने गंगा नदी में नौका विहार करने का निश्चय किया । जब कवि की नौका गंगा की लहरों पर चल रही थी, तभी कवि की कल्पना सजग हो उठी । नौका की गति में ही वह जीवन की गति आँकने लगता है । नौका विहार के वर्णन में कवि जीवन की इसी शाश्वत गति का चिन्तन अधिक करता है । फलतः गीत की वर्णनात्मकता कवि की चिंतन प्रसूत दार्शनिकता में परिवर्तित हो जाती है ।)

शान्त, स्निग्ध, क्लांत निश्चल ।

शब्दार्थ—स्निग्ध = प्रेम पूर्ण, ज्योत्सना=चाँदनी । अपलक = स्थिर । अनन्त=आकाश । नीरव=शान्त । भूतल=पृथ्वी । सैकत शय्या=बालू की शय्या । दुग्ध धवल=दूध के समान उज्ज्वल । तन्वंगी=इकहरी गति वाली ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विरल = क्षीण । श्रांत=थकी हुई । क्लाँत=थकावट से दुखी । निश्चल=निश्चेष्ट, शाँत = स्थिर ।

भावार्थ—कवि यहाँ रात्रि काल में नौका विहार का वर्णन कर रहा है। सर्वप्रथम कवि प्रकृति की नीरवता का वर्णन करता है । इस समय चारों ओर शांत प्रेमपूर्ण और उज्ज्वल चाँदनी चारों ओर छिटकी हुई है आकाश में स्थिरता है। पृथ्वी तल पूर्णतः शान्त बना हुआ है । ग्रीष्म काल के दिवस है । अतएव दूध के समान उज्ज्वल गंगा इकहरे बदन वाली कोमलाँगी की भांति बालू की शय्या पर लेटी हुई है । ग्रीष्म ऋतु ने उसे क्षीण बना दिया है । ऐसा प्रतीत होता है जैसे दिन भरके कार्य के पश्चात् थकी हुई गंगा अब निश्चल भाव से विश्राम कर रही हो । (गर्मी में गङ्गा का जल सूख जाता है, जल की धार पतली पड़ जाती है)

तापस बाला ... नीलाम्बर ।

शब्दार्थ—तापस बाला=तप करने वाली बालिका । शशि मुख = चन्द्रमा का मुख । दीपित=चमकता हुआ । मृदु=कोमल । करतल=हथेली । उर=हृदय । कुंतल=बाल । सिहर-सिहर = काँपता हुआ । अंचल=दुपट्टा । नीलाम्बर = नीला आकाश ।

भावार्थ—किसी तपस्विनी बाला के समान गंगा का निर्मल और सौम्य-रूप शोभायमान हो रहा है। गंगा की लहरें चन्द्रमा के मुख अर्थात् उसकी चाँदनी से चमक रही हैं । भाव यह है कि चन्द्रमा की परछाई जल में झिलमिला रही है । गंगा में उठती हुई लहरें घुंघराले बालों के समान बिखरी हुई जान पड़ती हैं। गंगा की निर्मल लहरों में नीले आकाश की तारों से भरी हिलती हुई परछाईं ऐसी प्रतीत होती है, मानो गंगा के गोरे शरीर पर तारों से जड़ा नीला दुपट्टा चंचलता से डला हुआ है ।

साड़ी की सिकुड़न ... लेकर सत्वर ।

शब्दार्थ—शशि=चन्द्रमा । विभा=शोभा । वर्तुल=गोलाकार । मृदुल = कोमल । प्रथम पहर = पहला पहर । सत्वर=शीघ्र ।

भावार्थ—चन्द्रमा के रेशमी सौन्दर्य से भरी हुई आकाश की नीली परछाईं गंगा की साड़ी के समान प्रतीत होती है । गंगा की उठती हुई गोलाकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लहरें इस साड़ी की सिकुड़न के समान हैं। चाँदनी रात्रि के प्रथम पहर का समय है। हम नाव लेकर शीघ्रता से नौका विहार के लिए चल पड़े।

सिकता की ... पालों के पर।

शब्दार्थ—सिकता=बालू। सस्मित=हँसती हुई। ज्योत्सना=चाँदनी। पालें=नाव के मस्तूल से बँधा हुआ कपड़ा जिसमें भरी हुई वायु के जोर से नाव चलती है। खुला लङ्गर=नाव रोकने की रस्सी। मृदु=कोमल। मंद-मंद=धीमा-धीमा। मंथर-मंथर=धीमी गति से। लघु=छोटी। तरणि=नाव। तिर रही=तैर रही। पर=पंख।

भावार्थ—बालू के कणों पर चाँदनी उसी प्रकार चमक रही थी, जैसे हँसती हुई सीप पर मोती की छवि शोभायमान होती है। अब नाव में पालें बाँधी जा चुकी हैं, लङ्गर खुल गया। (नौका-विहार की पूर्ण तैयारी हो गई है)। थोड़ी ही देर उपरांत मन्द-मन्द चाल वाली हंसनी के समान हमारी छोटी और सुन्दर नौका अपने पाल रूपी पंखों को फैलाकर जल में तैरने लगी।

निश्चल जल ... स्वप्न सघन।

शब्दार्थ—निश्चल=शांत। शुचि=पवित्र, निर्मल। विम्बित=छाया, परछाई। रजत=चाँदनी। पुलिन=किनारा। प्रसन्न=आनन्दपूर्ण। पलकों=आँखों। वैभव स्वप्न-सघन=सपनों की अतुल सम्पदा।

भावार्थ—गङ्गा के चाँदी के समान किनारों की परछाईं गङ्गा के निर्मल जल के दर्पण में प्रतिविम्बित, ऐसी जान पड़ती है जैसे गङ्गा के किनारे क्षण भर के लिए दूने हो गए हों। किनारे पर खड़ा हुआ कालांकाकर का शांत राज-भवन ऐसा प्रतीत होता है मानों जल में निश्चिंत और शांत रूप, अपनी आँखों में सपनों की अतुल सम्पदा छिपाए हुए निद्रा मग्न हो।

नौका से उठती ... पल पल।

शब्दार्थ—हिल पड़ते=काँप उठते। विस्फारित=खुले हुए। निश्चल=शांत चल=चंचल, झिलमिलाते हुए। तारकदल=तारों का समूह। ज्योतित=प्रकाशमान। अन्तस्तल=हृदय। लघु दीप=यहाँ लहरों में पड़ते हुए तारों के प्रकाश से तात्पर्य है। ओट=आड़। अविरल=सघन। लुक=छिपकर।

भावार्थ—नाव की गति से गंगा के जल में लहरें उठ रही हैं। इससे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जल में प्रतिबिंबित आकाश की परछाईं हिल पड़ती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे आकाश के किनारे जल में हिल उठे हैं। आकाश का तारक समूह जल के हृदय को प्रकाशमान बनाता हुआ अपने शांत और खुले नेत्रों से गङ्गा की लहरों में कुछ खोज रहे हैं। लघु दीपों के समान तारों की उस छवि को अपने अंचल की ओट में छिपा कर गङ्गा की लहरें क्षण-क्षण भर में इधर-उधर छिपती हुई फिर रही हैं। (जब कोई व्यक्ति किसी की वस्तु छिपा लेता है तब वह इधर-उधर उसे छिपाता फिरता है। यहाँ लहरें इधर-उधर छिपती हुई फिरती हैं। कवि के शब्दों में इसका कारण यह है कि उन्होंने तारों के दीप अपने अंचल की ओट में छिपा लिए हैं)।

सामने शुक्र ... कगार।

शब्दार्थ--शुक्र=एक नक्षत्र। छवि=शोभा। पैरती=तैरती। सी=समान। कल=सुन्दरता। रुपहरे=रुपहले, चाँदी के रंग के। कचों=बालों। ओझल=छिपना। दशमी=दस दिन का। शशि = चंद्रमा। निज=अपना। तिर्यक=तिरछा। मुग्धा=वह नायिका जो यौवन अवस्था को प्राप्त हो चुकी है। चपला=नौका। कगार=टीला।

भावार्थ--उधर सामने शुक्र तारे की अनुपम शोभा गङ्गा के जल में झिलमिलाती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानों कोई सुन्दर परी जल में तैर रही हो और अपने रूपहले बालों की ओट में स्वयं छिप जाती हो। (यहाँ रुपहले बालों से अभिप्राय गङ्गा की लहरों से है। गङ्गा की लहरों का रंग सफेद है) दसमी का चन्द्रमा गङ्गा की लहरों में क्षण भर को दिखाई देता है और क्षण भर को छिप जाता है, जैसे कोई मुग्धा नायिका अपने घूंघट से झाँक रही हो।

अब हमारी नौका गङ्गा की बीच धार में पहुँच गई। इसलिए गङ्गा के ऊँचे किनारे जो चाँदनी के टीलों के समान प्रतीत होते हैं, हमारी आँखों से ओझल होने लगे।

दो बाहों से ... नयन विशाल।

शब्दार्थ—दूरस्थ=दूर स्थित। तीर=किनारे। धारा=गङ्गा। कृश=दुबला। अधीर=व्याकुल। आलिङ्गन=भुज बन्धन। क्षितिज=वह स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी मिले हुए जान पड़ते हैं। विटप माल=वृक्षों का समुदाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भ्रू रेखा=भौंहों की रेखा। अराल=तिरछी। अपलक=खुले हुए। नभ नील=नीला आकाश।

भावार्थ—ऐसा प्रतीत होता था मानों दूर स्थिति नदी के दोनों किनारे अपनी दोनों भुजाओं को फैलाए हुए गंगा के क्षीण और कोमल शरीर का आलिंगन करने के लिए व्याकुल होरहे हों। दूर क्षितिज पर छाई हुई वृक्षों की पंक्तियाँ ऐसी प्रतीत होती थीं मानो आकाश की तिरछी भौंहें हों और मानो वह अपने अपलक विशाल नयनों को खोले हुए हो। (यहाँ आकाश के नेत्रों से तात्पर्य तारागणों से है।

माँ के उर पर .... विलोक।

शब्दार्थ—उर = हृदय। शिशु=बालक। उर्मिल = चंचल। प्रतीत=विमुख बनाकर, शान्त बनाकर। प्रवाह=धार। विहग=पक्षी। विकल=व्याकुल कोक=चकवा। हरने=दूर करने। कोकी=चकवी। विलोक = देखकर।

भावार्थ—नदी के बीच में एक द्वीप हैं। वह ऐसा शोभा पाता है मानो किसी माता के हृदय से उसका शिशु चिपका हुआ हो। जिस प्रकार बालक माँ के हृदय के उद्वेगों को शान्त बनाता है, उसी प्रकार यह द्वीप भी गंगा की अचल लहरों को शान्त बना रहा है।

आकाश में यह कौन पक्षी उड़ा जा रहा है! कहीं यही चकवा पक्षी तो नहीं है, जो अपने विरह की व्याकुलता को दूर करने के लिये निकला हो। कहीं इसने गंगा की छाया को भी अपनी चकवी तो नहीं समझ लिया।

पतवार घुमा .... तार हार।

शब्दार्थ—पतवार = डाँड़ जिससे नाव चलाई जाती है। प्रतनु=दुबला, पतला। विपरीत=उलटी। चल=चंचल। करतल=हथेली। मुक्ताफल=मोतियां। स्फार = चीरते हुए।

भावार्थ—अब हमने हलकी गति से पतवार को घुमा दिया। इससे हमारी नाव विपरीत दशा में चलने लगी। आकाश के तारों का हार जो जल में बिखर गया था, उसके मोतियों को भरने के लिये चंचल डाँड फेन को चीरते हुए अपने हाथ पसारने लगे। डाँडों की सहायता से फेन को चीरते हुए कवि की नौका आगे बढ़ रही थी। फेन के हटने से जल की बूँदे मोतियों के समान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टि गति होती थी उनमें तारों का प्रकाश झिल मिला रहा था। नाव के डाँड जल में दो हाथों के समान मालूम दे रहे हैं, जो अपनी हथेली में जैसे उन मोतियों को भर रहे हों।)

चाँदी के साँपों ... में फेनिल।

शब्दार्थ—रलमल=मिलकर। रश्मियाँ=चाँदनी की किरणें। चल=चंचल। लतिकाओं=लताओं। उडु=तारें। फेनिल=फेन से भरे हुए।

भावार्थ—लहरों के साथ मिल कर चाँदनी की चंचल किरणें ऐसी नाच रही थीं जैसे चाँदी के साँप रेंग रहे हों। लहरों में चाँदनी की किरणें तरल और सरल रेखाओं के समान खिंच जाती थीं। सौ सौ तारों और चन्द्रमा का लहरों में झिलमिलाता हुआ प्रकाश ऐसा शोभायमान हो रहा था मानो लहरों रूपी लताओं में ये तारे फूल के समान फेनिल जल में फैले हुए हैं।

अब उथला ... शत विचार।

शब्दार्थ—उथला=वह स्थान जहाँ पानी कम हो। सरिता=नदी। प्रवाह=धारा। लग्गी=डाँड, पतवार। सहज=सरलता। थाह=पानी की गहराई। सोत्साह=उत्साह सहित। आलोकित=प्रकाशवान। शत विचार=असंख्य विचार।

भावार्थ--जल कम होने से नदी की धारा अब उथली हो चली थी। डांडों की सहायता से बड़ी सरलता के साथ पानी की गहराई को नापते हुए हम उत्साह के साथ घाट की ओर बढ़ने लगे। ज्यों-ज्यों नाव किनारे की ओर बढ़ती जाती थी, हृदय में असंख्य विचार उत्पन्न होने लगे।

इस धारा सा ... लहरों का विलास।

शब्दार्थ—क्रम=सिलसिला, शैली। शाश्वत=चिरंतन, जो कभी नष्ट न हो। उद्गम=निकास, उदय, उत्पत्ति का स्थान। गति=चाल। संगम=संयोग, मेल-मिलाप। रजत-हास=चाँदी के समान हास्य, चाँदनी। विलास=आनन्द, क्रीड़ा।

भावार्थ—इन पंक्तियों में कवि पूर्णतः दार्शनिक बन गया है। वह कहता है कि गंगा की धारा के समान ही इस जीवन का क्रम है। जिस प्रकार गंगा की धारा प्रारम्भ में शांत, बीच में चंचल तथा अन्त में भी शांत होती है, उसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकार जीवन का आरम्भ भी शांतिमय होता है तथा जीवन का अन्त भी वृद्धावस्था के रूप में शांतिमय होता है। गंगा की धारा के समान जीवन के बीच का काल यौवन के रूप में चंचल और गतिशील होता है। जिस प्रकार गंगा का यह आदि अन्त शाश्वत है, कभी नष्ट नहीं होता, चिरकाल तक इसकी गति इसी प्रकार रहती है उसी प्रकार जीवन का आदि, यौवन स्थल और अन्त भी शाश्वत और चिरन्तन हैं। वह सदैव बना रहता है, कभी नष्ट नहीं होता। इस प्रकार कवि के शब्दों में इस जीवन का प्रारम्भ किसी चिरन्तन शक्ति से होता है, उसकी गति भी शाश्वत प्रवाह से मुक्त होती है, और जीवन की पूर्णता भी उस चिरन्तन शक्ति के मिलन में है।

कवि आगे कहता है कि संसार के समस्त उपादान शाश्वत हैं। वे सब उसी चिरन्तन शक्ति के अंश हैं। आकाश का नील विकास, चन्द्रमा की मधुर चाँदनी और लहरों की मधुर क्रीड़ा सभी चिरन्तन और शाश्वत हैं।

है जगजीवन के ... अमरत्व दान।

शब्दार्थ—कर्णधार=मल्लाह, नाव खेने वाला। चिर=बहुत दिनों तक। अस्तित्व ज्ञान=अपनी सत्ता का आभास। अमरत्व=अमरता।

भावार्थ—कवि को ईश्वर की चिरन्तन सत्ता के प्रति पूर्ण विश्वास है। इसीलिए वह कहता है कि हे मेरी जीवनरूपी नौका के नाविक, इस जीवन नौका का जन्म मरण के दोनों छोरों के बीच यह बिहार भी शाश्वत है। भाव यह है कि जन्म-मरण जीवन के दो छोर हैं। जीवन रूपी नौका इन दो छोरों के बीच गतिशील बनती है। जन्म मरण के बीच नौका का यह विहार शाश्वत है। उसे कभी मिटाया नहीं जा सकता। जन्म मरण के बीच अपनी जीवन नौका के बिहार में जब मैं अपने अस्तित्व को भूल जाता हूँ, इस विहार में अपने अस्तित्व की चेतना खो देता हूँ तभी मुझे शाश्वत जीवन की प्राप्ति होती है। यही मेरेजीवन को अमरता प्रदान करता है। भाव यह है कि ब्रह्म-से अलग अपने अस्तित्व और अपनत्व को भूल जाना ही जीवन को अमरता प्रदान करता है।

———

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्रुत झरो

द्रुत झरो .... जड़ पुराचीन।

शब्दार्थ—द्रुत=शीघ्रता। जीर्ण पत्र=पुराने पत्ते, जर्जर पत्ते। स्रस्त=क्षीण। ध्वस्त=नष्ट हुए। शुष्क=सूखे। शीर्ण=पुराने। हिमताप=पाले और गर्मी से पीले पड़े। मधुवात=बसंत ऋतु की वायु। वीतराग=संसार से उदासीन, जिसने राग आदि असत्य का परित्याग कर दिया हो। जड़=निर्जीव। प्राची=पुराने।

भावार्थ—कवि संसार को नवीन और सुन्दर रूप प्रदान करना चाहता है। युग के विगलित और ध्वंस अवशेष पर वह नया निर्माण चाहता है। इसके लिए वह संसार में स्वस्थ सुन्दर और नवीन जीवन की कामना करता है। संसार को वृक्ष का प्रतीक मानकर वह कहता है कि विश्व वृक्ष के जर्जर पत्तो अब शीघ्रता से नष्ट हो जाओ। तुम अब नष्ट प्राय सूखे और पुराने पड़ चुके हो। पाले और गर्मी ने तुम्हें अशक्त बना दिया है। यही कारण है कि वसंत ऋतु की सुरभिमय वायु से भी तुम डरने लगते हो। (भाव यह है कि जीवन का कुरूप अंग सुन्दर और स्वस्थ भावनाओं को अपनाने में हिचकता है।) तुम इस संसार से उदासीन बनगए हो। तुम्हारा रूप पुराना पड़ चुका है। तुम जड़ बन चुके हो क्योंकि तुम्हारा जीवन नवीनता को ग्रहण करने में असमर्थ हैं।

निष्प्राण विगत .... हो विलीन।

शब्दार्थ—निष्प्राण=प्राण रहित। विगत=बीत चुका हो। मृत=मरा हुआ। विहंग=पक्षी। शब्द=ध्वनि। श्वास हीन=श्वासों से रहित, निष्प्राण। च्युत=गिरे हुए। अस्त व्यस्त=बिखरे हुए। झर झर=नीचे गिरना। अनन्त=आकाश। विलीन=छिपना।

भावार्थ- बीते युग की भाँति तुम निर्जीव और निष्प्राण बन चुके हो। इस संसार का स्वरूप उन घोंसलों की भांति हो गया है जिसके समस्त पक्षी, मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। उन घोंसलों में सजीव जीवन का गूंजता हुआ स्वर नहीं है। जिस प्रकार पक्षियों के पुराने पंख गिर गिर कर आकाश में इधर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उधर उड़ जाते हैं उसी प्रकार हे संसार रूपी वृक्ष के पत्तों तुम भी अपने स्थान से टूट टूट कर नीचे गिर पड़ो। और इस आकाश में विलीन हो जाओ। संसार को अब तुम्हारी आवश्यकता नहीं।

कंकाल जाल   हरियाली।

शब्दार्थ—कङ्काल जाल = शरीर की हड्डियों का ढाँचा। नवल = नई। रुधिर = रक्त। पल्लव = नए पत्ते। लाली=लालिमा। मर्मर = ध्वनि विशेष। मुखरित = बोलती हुई। माँसल=परिपुष्ट।

भावार्थ—जिस प्रकार पत्तों के झड़ जाने से वृक्ष ठूंठ बन जाते हैं, और उन पर मधुमास आने पर नए और कोमल पत्ते छा जाते हैं। उसी प्रकार संसार रूपी अस्थि पंजर की सूखी नसों में जीवन का नया रुधिर दौड़ उठा। उसके निष्प्राण शरीर में जीवन का संगीत गूंज उठे। हरे-भरे वृक्षों की भाँति संसार का अस्थि पंजर भी परिपुष्ट और सुघड़ रूप धारण करे।

मंजरित विश्व   की प्याली।

शब्दार्थ—मंजरित=फूलों से भरी हुई। पिक=कोयल। प्रणय स्वर = प्रेम का स्वर। मदिरा = शराब। नवयुग=नया युग।

भावार्थ—जिस प्रकार मधुमास में उपवन फूलों से हरा-भरा हो जाता है, कोयल अपनी कूक से प्रकृति में सौन्दर्य फूंकती है, नव उल्लास जगाती है, उसी प्रकार इस संसार में भी यौवन का मधुमास जाग उठे। नए जीवन की कोयल नवयुग की प्याली में अपने प्राण की मदिरा उँडेल दे। (भाव यह है कि नया युग, नए जीवन और मानव समुदाय के पारस्परिक प्रेम से अनुप्राणित हो)।

भारत माता

(प्रस्तुत कविता सन् १९४० में लिखी गई थी। उस समय भारत पराधीन था। देश की स्थिति बड़ी दारुण और करुणाजनक थी। इन पंक्तियों में कवि ने भारत की उसी दारुण अवस्था का चित्र खींचा है।)

भारत माता   उदासिनी।

शब्दार्थ—ग्रामवासिनी=ग्रामों में बसने वाली। श्यामल=श्यामरंग का।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आंचल=वस्त्र का छोर। प्रतिमा=मूर्त्ति।

भावार्थ—भारत माता ग्रामों में बसने वाली हैं। ये जो धूल से भरे श्यामल खेत दिखलाई पड़ते हैं, वह भारत माता का धूल से भरा मैला वस्त्र है। गंगा जमुना में बहता हुआ जल भारत माता के आँसू हैं। मिट्टी की मूर्त्ति के समान भारत माता जड़ और उदास बनी हुई है।

दैन्य जड़ित प्रवासिनी।

शब्दार्थ—दैन्य=दीनता से भरी। जड़ित=जकड़ी हुई। अपलक=खुले हुए। नत=झुकी हुई। चितवन=दृष्टि। अधरों=होठों। चिर=सदैव बना रहने वाला। नीरव=शांत। रोदन=रुदन, रोना। तम=अन्धकार। विषण्ण=दुखी। प्रवासिनी=दूर देश में रहने वाली।

भावार्थ—भारत माता की आखें दीनता से भरी हुई हैं। उसकी आँखें नीचे झुकी हुई हैं। उसके होठों में कभी शांत न होने वाला रुदन छिपा हुआ है। सदियों से उसका हृदय दुख से बोझिल बना हुआ है। अपने ही घर में वह प्रवासिनी की भांति जीवन व्यतीत कर रही हैं। भाव यह है कि अपने घर पर ही उसका अधिकार नहीं रहा है। वह दूसरों के अधीन हैं। पराधीनता के कारण वह अत्यन्त दुखी है। सदियों से होने वाले अत्याचारों के कारण वह मन ही मन क्रन्दन कर रही है। खुल कर रोने का भी उसे अधिकार नहीं है। गौरव से वह अपनी आँखें ऊँची नहीं उठा सकती।

तीस कोटि निवासिनी।

शब्दार्थ—तीस कोटि=तीस करोड़। नग्न तन=वस्त्र रहित शरीर। अर्द्धक्षुधित=भूखे। शोषित=जिनका शोषण किया गया है। निरस्त्र=शस्त्र रहित। मूढ़=मूर्ख। नत मस्तक=झुका हुआ सिर। तरु तल=वृक्षों के नीचे। निवासिनी=निवास करने वाली।

भावार्थ—भारत की तीस करोड़ संतानें आज भूखी और नंगी हैं। खाने के लिए उनके पास अन्न नहीं है, पहिनने को वस्त्र नहीं हैं। वे शस्त्र रहित और सामर्थ्य हीन हैं। सदियों से उनका शोषण किया गया है। भारत के निवासी मूर्ख, असभ्य, अशिक्षित और निर्धन हैं। भारत की संतानों के सिर नीचे झुके हुए हैं। वे गौरव से स्वतन्त्र तथा समृद्धिशाली देशों के सम्मुख सिर ऊंचा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं कर सकते। उनके पास रहने को अपने घर नहीं हैं। फलतः उन्हें वृक्षों के नीचे ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

स्वर्ण शस्य हासिनी।

शब्दार्थ—स्वर्ण शस्य = सोने के समान धान वाली। पर-पद = दूसरे के पैरों। तल = नीचे। लुंठित=कुचले जाते हैं। सहिष्णु=सहनशील। कुंठित= कुंद, मन्द। क्रन्दित=क्रन्दन करती हुई, विलाप करती हुई। मौन = शांत। स्मित=हँसी। राहु ग्रसित=राहू से ग्रसी हुई। शरदेन्दु हासिनी=शरद्काल के चन्द्रमा की भाँति शोभायमान।

भावार्थ—भारत की शस्य श्यामल सोने की धरती विदेशियों के पैरों तले कुचली जा रही है। उसके कुन्द हृदय में अब जीवन का भाव नहीं रहा। जिस प्रकार धरती अपने सहनशील स्वभाव के कारण समस्त अत्याचारों को सहती रहती है, उसी प्रकार भारत माता भी विदेशियों के अत्याचारों को सहनशील हृदय से सहन कर रही है। उन अत्याचारों का वह प्रतिकार नहीं कर सकती। उसके ओठों से मुस्कान समाप्त हो चुकी है। रुदन के कारण उसके ओठ काँप रहे हैं। उसका रोदन मौन है। उसे खुल कर रोने का भी अधिकार नहीं है।

जिस प्रकार शरद् काल के चन्द्रमा को राहू ग्रस लेता है, उसी प्रकार परतन्त्रता रूपी राहू ने भारत माता के समस्त सुख और समृद्धि को ग्रस लिया है।

चिन्तित भृकुटि प्रकाशिनी।

शब्दार्थ—चिन्तित = उदास। भृकुटि=भौंहें। तिमरांकित = अंधकार के चिह्नों से भरा हुआ। नमित = झुके हुए। नभ = आकाश। वाष्पाच्छादित = भाप से भरे हुए। आनन = मुख। श्री=शोभा, विभूति। शशि=मुख। उपमित= जिसकी उपमा दी गई हो। मूढ़ = मूर्ख।

भावार्थ—परतन्त्रता के दुख से भारत माता की भौंहें टेढ़ी हैं, उनमें चंचलता नहीं है। उसका क्षितिज अन्धकार से भरा हुआ है। उसके नेत्र नीचे झुके हुए हैं। जिस प्रकार आकाश भाप से आच्छादित रहते हैं, उसी प्रकार वे नेत्र भी दुख से सजल हैं। उसके चन्द्रमा के समान मुख की शोभा क्षीण हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गई हैं। जिस भारतवर्ष ने गीता के ज्ञान का उज्ज्वल प्रकाश संसार को दिया था आज वही ज्ञानी भारतवर्ष मूर्ख बना हुआ है।

सकल आज ग्राम वासिनी।

शब्दार्थ--सकल=समस्त । स्तन्य=स्तन । सुधोपम=अमृत के समान। हरती=दूर करती । जन-मन-भय=जन समुदाय के मन रूपी भय को । भव-तन भ्रम=संसार रूपी शरीर का भ्रम। जग जननी=संसार की माता। जीवन विकासनी=जीवन को विकासवान गति प्रदान करने वाली।

भावार्थ—परन्तु आज भारत माता का समस्त तप और साधना सफली-भूत बन रही हैं। अपने स्तनों से अहिंसा का अमृत वह संसार को पिला रही रही है। अहिंसा के इस अमृत से भारत माता अशांति और हिंसा से व्याकुल मानव समुदाय के भय और संसार के दुख को नष्ट कर रही है। इस प्रकार भारत माता जगती की माता है। (माता अपने दूध से बालक को परिपुष्ट बनाती है। भारत माता भी अपने स्तनों से संसार रूपी बालक को अहिंसा का अमृत पिला रही है)।

भारत माता आज गाँवों की वासिनी है।

श्री माखनलाल चतुर्वेदी "एक भारतीय आत्मा"

कैदी और कोकिला

क्या गाती हो कोकिल बोलो तो ?

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—हे कोकिल तुम कौनसा गान गा रही हो ? अपने इस गान में तुम किसका संदेशा लाई हो ? तुम्हारे गान रुक क्यों जाते हैं ? हे कोकिल कुछ बतलाओ तो सही ?

ऊँची काली दीवारों बोलो तो।

शब्दार्थ—बटमारों=बदमाशों । तम=अन्धकार । हिमकर=चन्द्रमा । कालिमामयी=काले रंग से भरी हुई। आली=सखि । हूक=टीस, दुख । वेदना=दुख । मृदुल=मधुर । वैभव=सम्पदा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—जेल की ऊँची, काली दीवारों के भीतर डाकू, चोर और लुटेरों के बीच में हमें अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। हमें इतना भोजन भी नहीं मिलता जिससे कि हम भली भांति जीवन यापन कर सकें। हमें मरने का भी अधिकार नहीं है। उस पर भी अंकुश लगा हुआ है। इस प्रकार न तो हम भली भांति जी सकते हैं और न मरण को ही प्राप्त हो सकते हैं। केवल दुख से तड़पती हुई जिन्दगी व्यतीत करना ही हमारे भाग्य में बदा है। दिन रात हमारे जीवन पर कड़ा पहरा रहता है। हम अपने मन से कुछ कर नहीं पाते। यह विदेशी शासन नहीं है वरन् इस शासन के रूप में हमारे जीवन पर छाया हुआ घना अंधकार ही है। हमारा जीवन प्रकाश से बिल्कुल रहित है। आज तो चन्द्रमा भी उदित नहीं हुआ। केवल अन्धकार से भरी काली रात्रि चारों ओर छाई हुई है। ऐसे अंधकार से भरे समय में हे काले रंग वाली प्रिय सखि तू क्यों जग पड़ी ?

वेदना से भरे हुए तेरे गान में मेरे हृदय का कौनसा दर्द फूट पड़ा है। हे कोकिल बतलाओ तो सही। तुम्हारा कौनसा मधुर वैभव आज लुट गया है, जिसकी तुम रखवाली किया करती थी ?

बन्दी सोते हैं ... ... कोकिला बोलो तो।

शब्दार्थ—बन्दी=कैदी। घर्घर=साँस लेते समय पैदा होने वाला स्वर। निश्वासों=सांसें। मंत्री=पहरेदार। उभय=दोनों। बावली=पगली। दावानल=दावाग्नि, जंगल में पैदा होने वाली अग्नि।

भावार्थ—इन जेल की दीवालों के भीतर कैदी लोग सो रहे हैं। निद्रावश उनकी निश्वासों से जो घर्घर स्वर निकल रहा है वह ऐसा प्रतीत होता है मानो सांसें रात्रि काल में, दिन में मिले हुए दुख का रुदन कर रही है। अथवा इन सांसों में जैसे जेल का जीवन बोल रहा हो। सांसें, जेल में होने वाले विविध व्यापारों, जेल के लोहे के दरवाजे के खुलने और बन्द होने से निकले स्वर, सिपाहियों की बूटों अथवा पहरेदारों की आवाज से उत्पन्न स्वरों को व्यक्त कर रही हैं अथवा रात्रि में कैदियों को गिनने वाले पहरेदार एक दो तीन चार आदि की ध्वनि से अशान्ति उत्पन्न कर रहे हैं।

ऐसे रात्रि काल में वेदना से जब कि मेरी आँखों की दोनों प्यालियाँ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आँसुओं से भर उठी है, हे कोकिला तुम यह मधुर राग अलापने यहाँ क्यों आई हो ! हे कोयल क्या तुम पागल हो गई हो जो इस अर्द्ध रात्रि के समय यहाँ आकर चीख रही हो। बतलाओ तो सही किस दावानल की अग्नि को तुमने देखा है जिसके कारण आज यहाँ वेदना से तुम कूक रही हो।

निज मधुराई को ... बोलो तो।

शब्दार्थ-- मधुराई=मिठास। कारागृह=जेल। तरलामृत=अमृत के समान वायु=हवा। विटप=वृक्ष। वल्लरी=लताएँ। हठठाने=हठ करके, जिद्द करके। अजमाने=परीक्षा करने। आंखों का पानी=आँसू। दीप=तारे। ठानी=सोच लिया है। आभा=प्रकाश। भायी=भली लगी। आली=सखी। रवि किरणें= सूर्य की किरणें। विश्व=संसार। मतवाली=उन्मत्त, पागल।

भावार्थ--हे कोयल क्या तुम इस जेल में अपने मधुर गान द्वारा मिठास भर देना चाहती हो। अथवा हमारे हृदय पर वेदना के जो घाव हैं उन पर अपने मधुर संगीत का अमृत बरसाने आई हो। अथवा तुम्हारा जो स्वर वायु, वृक्ष, लताओं को चीरता हुआ वातावरण में गूंज उठा है, क्या तुम उसे इन दीवालों के पार जेल में पहुंचाना चाहती हो। इस प्रकार क्या तुम अपने स्वर की शक्ति की परीक्षा करना चाहती हो ? अथवा तुम मेरी आंखों के आँसू पोंछने आई हो, या तुम आकाश के इन तारे रूपी प्रकाशवान दीपों को बुझाना चाहती हो ? ये तारे तो अंधकार को अपने प्रकाश से नष्ट करते हुये संसार की रखवाली करते हैं, फिर भी इन तारों की छवि तुझे भली मालूम नहीं दी ? तुम तो प्रतिदिन ही सूर्य की किरणों के निकलने के साथ ही अपनी कूक से संसार को जगाती हो, फिर इस अर्द्ध रात्रि में हे मतवाली कोयल तुम यह संसार जगाने क्यों आई हो ? हे कोकिल कुछ बतलाओ तो सही।

दूबों के आँसू ... बोलो तो।

शब्दार्थ--दूबों=घास। आंसू=ओसकण। व्रतधारी=जिन्होंने किसी बात का व्रत लिया हो। ब्रह्मांड=संसार। उद्दंड=प्रचण्ड, कठोर। सजीला=सुन्दर। बे-जान=अनजान बनकर। तमोपत्र = यहाँ कारागृह से अभिप्राय है। विवश= लाचार। मधुरीला=मिठास भरी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ--सूर्य की किरणों के निकलते ही तरु तृणों पर छाई हुई ओस

की बूँदे सूख जाती हैं, मानो उन्होंने तरु तृणों के दुख पूर्ण आँसू पोंछ दिए हों। हे कोयल यह सब तुम्हारे ही गीतों का प्रभाव है। विंध्या के झरनों से जब पानी की बूँदें छहरती हैं, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो मोती बिखर रहे हों। झरनों का यह रूप भी हे कोयल तेरे मधुर गीतों की प्रेरणा है। जंगलों के वृक्ष जो सदैव ऊपर उठते रहते हैं, जैसे उन्होंने ऊंचा बढ़ने का व्रत ले लिया हो, वह सब तुम्हारे ही गानों के कारण है। तुम्हारे ही गीतों की गूंज उस प्रचंड पवन में समाई हुई है, जो अपनी शक्ति मयी गति से सारे संसार को कँपा रही है।

इस प्रकार दिन के प्रकाश में मैंने तेरे सुन्दर गीतों की शक्ति का पूर्ण रूप देखा है। परन्तु इस रात्रि में तुम अपने गीतों को नष्ट करने के लिये क्यों गा रही हो ? यह तुम जान बूझ कर रही हो अथवा अनजान बनकर, हे कोयल कुछ बतलाओ तो सही। इस अंधकारमयी जेल पर अपनी मधुर तान छेड़ने के लिए हे कोयल तुमको किसने वाध्य किया है, कुछ अपने मुंह से बतलाओ।

क्या देख ... बोलो तो।

शब्दार्थ—चर्रक=चरमर करता हुआ स्वर। मोट=जिसके द्वारा कुँए से पानी निकाला जाता है। अकड़=घमण्ड। करुणा=दया। वेध=चीरकर। विद्रोह बीज=प्रतिकार की भावनाएं।

भावार्थ—मेरे हाथ पैरों में ये जो लोहे की जंजीरें डली हुई हैं क्या तुम्हें ये सब भली मालूम नहीं देती। सम्भवतः तुम इसी के प्रतिकार स्वरूप अपने गान छेड़ रही हो। परन्तु ये हथकड़ियाँ तो ब्रिटिश साम्राज्य के गहने हैं, जो हमें उसकी ओर से पहिनने को मिले हैं। अतः तुम्हें इन हथकड़ियों को देखकर क्षुब्ध नहीं होना चाहिए।

मैं अपने हाथों से जेल में मिट्टी खोदा करता हूँ। इस प्रकार मेरी उँगलियां उन मिट्टी के कणों में जीवन के गीत लिखती है। भाव यह है कि आज मेरे जीवन का कार्य केवल जेल की मिट्टी खोदना रह गया है। मुझे कोल्हू भी खींचना पड़ता है। कोल्हू खींचने पर जो चरमर की ध्वनि होती है, वह जैसे मेरे जीवन का स्वर है। (पराधीनता में जीवन एक कोल्हू के समान है, जिससे वेदना के स्वर निकला करते हैं।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पशुओं के स्थान पर स्वयं अपने पेट से जूआ लगा कर मैं मोट की सहायता से कुंए से पानी खींचता हूं । इस प्रकार मैं कुँए से पानी नहीं खींचता बल्कि ब्रिटिश राज्य के घमण्ड के कुँए को खाली करता हूँ । उनके गर्व को मिट्टी में मिलाता हूँ । (ब्रिटिश राज्य को यह घमण्ड है कि वे इन अत्याचारों द्वारा देशसेवियों को नीचे झुका लेंगे, परन्तु वे इन अत्याचारों को हँसते हँसते सह कर, ब्रिटिश राज्य के घमण्ड को चूर चूर कर देते हैं ।)

हे कोकिल तुम दिन में इसलिए नहीं गाती कि तुम्हारे मधुर गीतों के कारण दिन की वेदना कहीं और तीव्र न बन जाय, इसीलिए अब रात्रि काल में तुम अपने गीतों से गजब ढाने आई हो । इस अंधकार में जबकि चारों ओर शान्ति का साम्राज्य है, सब अपने दुख दर्द को भूल कर निद्रामग्न हैं, तू क्यों अन्धकार को गुंजित करती हुई चीख रही है ? तेरे हृदय में कौनसा दुख जाग उठा है ? इस प्रकार कहीं तुम हमें मिलने वाली पीड़ा के विरुद्ध आज चुपचाप विद्रोह की आग तो सुलगाने नहीं आई ? हे कोकिल कुछ बतलाओ तो सही ।

काली तू
बोलो तो ।

शब्दार्थ—रजनी=रात्रि काल । शासन की करनी=ब्रिटिश साम्राज्य के कार्य । काल कोटरी=जेल की कोठरी । कमली=कम्बल । लोह शृंखला=लोहे की हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ । हुँकृत=हुंकार । व्याली=सर्पिणी । संकट सागर= दुखों का समुद्र । मदमाती=उन्मत्त, मतवाली । गतिवाले=सजीव, प्रवाह पूर्ण । विधि=प्रकार ।

भावार्थ—तेरा रंग काला है । तेरे रंग की भाँति यह रात्री भी काली है । इसी प्रकार इस ब्रिटिश शासन की करतूतें भी काली हैं । अन्याय और अत्याचार की कालिमा से भरी हुई हैं । इस कारण आज भी हृदय में जो तरंग उठ रही हैं, जो विचार जाग रहे हैं, वे सब भी काले हैं । जेल की जो कोठरी मुझे रहने को मिली है उसका रंग भी काला है । जेल की जो टोपी और कम्बल मुझे मिले हैं, उनका रंग भी काला है । मेरे हाथ पैरों में जो लोहे की जंजीरें पड़ी हुई हैं, उनका रंग भी काला है ! इस प्रकार चारों ओर ही काले रंग का साम्राज्य छाया हुआ है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहरेदारों की हुँकारें सर्पिणी की हुँकारों के समान हमें प्रतीत होती हैं। इतने पर भी हे सखि हमें गालियाँ सुनने को मिलती हैं!

हे कोकिल बतलाओ तो सही तुम ऐसे घोर दुखों वाले अंधकार में अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए क्यों उतावली बनी हो। दुख के समुद्र में अपने शक्तिवान गति वाले गीतों को किस रूप में तैराती हो, हे कोयल वह विधि मुझे बतलाओ तो सही। भाव यह है कि कोयल अपने इन गीतों से दुख के समुद्र में से कैसे पार उतरने में सफल होगी यही बात कवि जानने को उत्सुक है।

तुझे मिली बोलो तो।

शब्दार्थ—नसीब=भाग्य में बदी। संचार=फैलाव। गुनाह=अपराध। विषमता=असमानता। रणभेरी=युद्ध का बाजा। हुँकृति=हुंकार। कृति=कार्य। मोहन=महात्मा गाँधी। व्रत=स्वतन्त्रता का व्रत। आसव=अर्क, मदिरा।

भावार्थ—हे कोयल तेरी और मेरी समानता क्या? तेरा निवास स्थान हरी-भरी डाली है, परन्तु मेरे भाग्य में तो यह काली कोठरी ही बदी हुई है। सारे आकाश में तू अपनी खुशी से उड़ सकती है, परन्तु मेरा संसार तो केवल दस फुट तक ही सीमित है। क्योंकि जेल से बाहर कदम रखना हमारे जीवन में नहीं लिखा। तेरे मधुर गीत को सुनकर सब लोग वाह-वाह की ध्वनि करते हैं, तुझे दाद देते हैं। परन्तु मेरा तो रोना भी यहाँ अपराध है। रोने पर भी मुझे तो तिरस्कार मिलता है। इसलिये हे कोयल पहले अपनी और मेरी असमानता तो देखले। इसके पश्चात् तू युद्ध का उद्घोष करना। क्योंकि युद्ध के संगी-साथी तो वे ही हो सकते हैं जिनका जीवन एक समान हो।

हे कोयल अब तक मैंने देश की पुकार पर अपने जीवन को न्यौछावर किया है, राष्ट्र हित बड़े-बड़े कार्य किए हैं, आज तेरी हुँकार पर, हे कोयल बतलाओ तो मैं कौन से कार्य पूरे करूँ? महात्मागाँधी का स्वतन्त्रता प्राप्ति का जो व्रत है उसके लिए अपने प्राणों को किस प्रकार न्यौछावर करूं, हे कोयल कुछ बतलाओ तो सही।

फिर कुहू बोलो तो।

शब्दार्थ—कुहू=कोयल की स्वर ध्वनि। मधुराई=मिठास। दफनाना=समाप्त करना। दाना=भोजन। करुणा ग्राहक=दुख के खरीदार। बन्दी=कैदी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वप्नों=सपनों। स्मृतियाँ=याद। पाशों=बन्धनों। निद्रित लाशों=सोए हुए शव।

भावार्थ—फिर तुम्हारी कुहूक सुनाई पड़ी। क्या तुम अब भी अपना गाना नहीं बन्द करोगी? इस अन्धकार पर तुम्हारे गीतों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। फिर क्यों अपने संगीत की मधुरिमा इस अन्धकार में विनष्ट करना चाहती हो। यह आकाश भी निर्बलों का शोषण करना सीख चुका है, इसलिए क्या तुम अपने गीतों को आकाश का आहार बनाना चाहती हो।

हे कोयल इस रात्रि काल में मधुर संगीत छेड़ना तेरे लिए व्यर्थ है। क्यों कि तेरे गानों से निसृत करुणा के खरीददार जो बन्दी जन हैं वे सोये हुए हैं। भाव यह है कि जिनको तुम्हारी करुणा और वेदना की आवश्यकता है वे कैदी लोग अभी सोये हुए हैं। वे निद्रा मग्न होकर सुख के सपनों द्वारा अपनी दुख भरी स्मृतियों को भुलाते हैं। जेल के सींकचों के बन्धन में ये जो कैदियों के मृत प्रायः सोए हुए शव पड़े हैं, क्या तुम अपने तरानों से उनमें जीवन फूंक दोगी क्या तुम्हारा रुदन इन बन्दी जनों पर कुछ प्रभाव डाल सकेगा! हे कोकिल बतलाओ तो सही। क्या तुम्हारे गाने संसार में क्रांति पैदा कर देंगे, हे कोकिल अपने मुँह से बतलाओ।

जवानी

आज अन्तर ... आज पानी।

शब्दार्थ—अन्तर=हृदय। पानी=तेज।

भावार्थ—हे पागल जवानी कौन कहता है कि तू अपना तेज खोकर विधवा की भाँति क्षीण और श्री विहीन बन गई है। आज भी तेरे अन्तर में यौवन का पागलपन छिपा हुआ है।

चल रही घड़ियाँ ... ठठरी जवानी।

शब्दार्थ—घड़ियाँ=समय। हिमखण्ड=बर्फीली शिलाएं। नरमुण्ड-माला=मनुष्यों की खोपड़ियों की माला। स्वमुण्ड=अपना मस्तक। सुभेस= सुन्दर स्वरूप। धानी=पीला।

भावार्थ—समय चल रहा है। आकाश के सितारे भी गतिशील हैं। नदियाँ सदैव बहती रहती हैं। बर्फीली शिलाएं पिघलती जा रही हैं। जीवन के निश्वास भी चलते रहते हैं। ये सब आगे बढ़ रहे हैं। रुकते नहीं और न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीछे हटते हैं । फिर हे पागल यह जवानी कैसे हो सकता है कि तू रुक जाय । तू भी आगे बढ़ । ऐसा न हो कि युग आगे बढ़ जाय और तू दो सदियों से अधिक पीछे रह जाय । आज उठ और गले में नरमुण्डों की माला धारण कर । अपने मस्तक को अपने हाथों में लेकर सुन्दर स्वरूप ग्रहण कर । भूमि के समान केसरिया बाना पहिनकर भीषण युद्ध के लिए तैयार हो जा । हे जवानी मृत्यु से लड़ने के लिये उठ । यही तेरा सच्चा जीवन है । तेरे अन्दर प्राणों का स्पंदन भरा हुआ है । फिर तू क्यों घबड़ाती है ?

द्वार बलि का .... देकर जवानी ।

शब्दार्थ—बलि=बलिदान । भूडोल=भूकम्प । हिमगिर=बर्फीले शिखर । क्षुद्र=तुच्छ ।

भावार्थ—अपने प्राणों के बलिदान से संसार में हलचल मचादे । इन बड़े-बड़े बर्फीले पर्वत शिखरों को आओ आज चूर करदें । उसके लिए अपने प्राणों की परवाह नहीं करें । आज अपने संकल्पों के अनुसार इस गोल पृथ्वी को मसल कर अपनी मुट्ठी में बन्द करलें । यौवन भरे शरीर की इन नसों में खून है अथवा पानी, आओ प्राणों की बलि देकर इस बात की परीक्षा करें ।

वह कली के .... चल जवानी ।

शब्दार्थ—सिर तान=गौरव से मस्तक ऊँचा करते हुए ।

भावार्थ—खिलती हुई कली के गर्भ से जो फल उत्पन्न हुआ है, वह जैसे उस कली के हृदय का अरमान है । यह मधुर अरमान फल के रूप में देखो किस प्रकार गौरव से मस्तक ऊंचा किए हुए है ? वृक्ष की डालियों ने पृथ्वी पर अपने फल लटका दिए हैं ; मानों उन्होंने अपने मस्तक विश्व हित नीचे लटका दिए हों । संसार के लिए अपने सिरों को अर्पण करदो, यही बात ये वृक्ष हमें बतला रहे हैं । फलों के रूप में वृक्ष अपने मस्तक हमें प्रदान करते हैं । यही उनके जीवन की कहानी है । हे जवानी तू भी युग-युग तक अपने प्राणों के बलिदान से यही शीशदान की बात संसार को बतलाती चल ।

श्वान के .... मस्तानी जवानी ।

शब्दार्थ—श्वान=कुत्ता । प्राणि=प्राणधारी । चरण=पैर । भवानी=दुर्गा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—कुत्ते भले ही अपने सम्मान पर गर्व करें, फिर भी वह अपने

मालिक के पैरों को चाटता ही है। वैसे वह दिन भर भौंकता ही रहता है, लेकिन इससे वह सिंह को तो नहीं डरा सकता। पेट की क्षुधा बुझाने के लिए वह दूसरों के टुकड़ों पर पला करता है। इस प्रकार वह साहसहीन और कायर बनता है। अपने हाथों अपना भोजन प्राप्त करने की शक्ति उसमें नहीं रहती। यद्यपि वह प्राणधारी जीव है, फिर भी वह मृत प्राय है। उसका जीवन निर्जीव है। इसलिए हे दुर्गा रूप पागल जवानी तुम इन ग्रामसिंहों अर्थात् कुत्तों से मत खेलो। तुम्हारा संग तो सिंहों के साथ है। हे मदमाती जवानी तुम तो इस संसार के गौरव हो। संसार के तुम्हीं एक मात्र सहारे हो।

ये न मग है   चढ़ती जवानी।

शब्दार्थ—मग=मार्ग। तव=तेरा। रेखियाँ=रेखाएँ। पद=पैर। कृति=रचना। धरा=पृथ्वी। मेख=कील। मरण के मोल=मृत्यु की कीमत स्वरूप।

भावार्थ—हे जवानी, यह बलिदानों का मार्ग तेरा मार्ग नहीं है, यह तो तेरे चरणों के निशान हैं, जिस पर कि तुम्हारी देखादेखी औरों ने अपने प्राणों को न्यौछावर किया है। इस प्रकार बलिदान के मार्ग में तुमने औरों का सदैव नेतृत्व किया है। संसार के मार्ग में बलिदानों के चिह्न तेरे ही पैरों से लिखे हुए लेख के समान हैं। अर्थात् संसार के सारे बलिदान तेरे ही द्वारा हुए हैं। ये ही पृथ्वी के सच्चे तीर्थ स्थानों की दिशाओं के सूचक हैं। आज तू फिर बलिदानों की रेखा इस मार्ग पर खींच दे। हे आगे की ओर बढ़ती हुई जवानी, तू मृत्यु की परवाह न कर अपने बलिदानों से इस मार्ग को सजा।

टूटता जुड़ता   है जवानी।

शब्दार्थ—भूगोल=संसार। मणियाँ=तारे। खगोल = आकाश। हिम के प्राण=निस्पन्द प्राण, ठण्डे प्राण। प्रलय=विध्वंस। धरा = पृथ्वी। स्वातन्त्र्य-प्रभु=स्वतन्त्रता की विभूति।

भावार्थ-समय के परिवर्त्तन के साथ संसार में परिवर्त्तन होता है। आकाश तारे रूपी मणियों को धारण किए हुए हैं। संसार में क्रान्ति की बारूद जल ही कैसे सकती है जब कि क्रान्ति की आग सुलगाने वाले प्राण स्वयं बर्फ के समान ठंडे हैं। जब तक प्राणों में आग नहीं होगी तब तक क्रांति की बारूद नहीं भड़क सकती। हे जवानी, यदि प्रलय के सपने तुम्हारी आँखों में नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छाए, यदि विध्वंश की कामनाएँ तुम्हारे हृदय में उत्पन्न नहीं हुईं तो तुमने प्राप्त ही क्या किया ? तुम्हारा अस्तित्व व्यर्थ ही रहा। हे जवानी, यह पृथ्वी तरबूज की फाँक के समान है, जिसकी बड़ी सरलता के साथ तू दो फाँक कर सकती है। भाव यह है कि जवानी के सम्मुख संसार कुछ भी नहीं है। क्षण भर में ही उसमें उथल पुथल की जा सकती है। इसलिए स्वतन्त्रता की विभूति पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दे। जिससे कि सारा संसार मान जाय कि तुम वास्तव में जवानी हो। जवानी की आग तुम्हारे हृदय में सुलग रही है।

लाल चेहरा ... पायी जवानी।

शब्दार्थ—लाल चेहरा=खून की लालिमा से युक्त चेहरा। लाल=पुत्र। कंकाल=अस्थि पंजर। आटा दाल=जीविका के साधन। सिर न चढ़ पाया= शीश दान नहीं दिया। नेह=प्रेम।

भावार्थ—यदि तुम्हारा मुख खून की ललिमा से युक्त नहीं है तो फिर इस देश के पुत्र होने से क्या लाभ ? यदि तुम्हारी नसों में लाल खून नहीं है फिर तुम्हारे शरीर का होना व्यर्थ ही है। यदि तुम्हारे अंतरमें जीवन की प्रेरणा नहीं है, जोश और गतिशीलता नहीं है तो फिर जीविका के साधन प्राप्त करने से क्या लाभ ? यदि तुम्हारा मस्तक देश के खातिर बलिदान नहीं हुआ तो ऐसे शीश रखना व्यर्थ ही है। हे जवानी तुम्हारे द्वारा प्रस्फुटित प्रेम की वाणी ही संसार के मंगलमय भविष्य की सूचक बने। वह जवानी, वह जीवन तो मृत प्राय और धूल के समान है जिसमें स्पन्दन और गतिशीलता नहीं है, जिसमें जग कर आगे बढ़ने की क्षमता नहीं है।

विश्व है असि ... की जवानी।

शब्दार्थ—असि=तलवार की धार। संकल्प=इरादे। कोण=कोना। काया कल्प=क्रान्ति।

भावार्थ—यह संसार तलवार के बल पर ही विजयी बनाया जा सकता है। केवल संकल्प मात्र से ही कुछ नहीं होता। प्रलय के प्रत्येक अंग के लिये क्रांति की आवश्यकता होती है। देखो न फूल तो नीचे गिर कर झड़ जाते हैं, परन्तु काँटे सदैव सिर ऊंचा किए रहते हैं। इसलिए हेजवानी क्रांति के लिए फूलों की कोमलता की कोई आवश्यकता नहीं है। उसे काँटों की तीक्ष्णता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और कठोरता चाहिए। काँटों की शक्ति तो फूलों के रस वान होने के अभिमान को भी चूर कर देती हैं। इसलिए हे जवानी, आज के इस मृत्यु के मेले में जहाँ सब अपने प्राणों का बलिदान करने को उद्यत हैं तू कहीं कायर न बन जाय। मृत्यु से भयभीत बनकर तेरा खून पानी न हो जाय।

हिमकिरीटिनी

(चतुर्वेदी जी राष्ट्रीय कवि हैं। प्रस्तुत हिमकिरीटिनी कविता राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोतः है। हिमकिरीटनी से तात्पर्य भारत माता से है। कली देश के तरुण युवकों का प्रतीक बन कर आई है। कवि उद्‌बोधन देता है देश के तरुणों को कि वे भोग विलासों और प्रणय की आसक्ति में न उलझ कर मातृ भूमि पर अपने प्राणों को न्यौछावर करें)

 री सजनि ! वन-रात्रि ... की श्रृंगार।

शब्दार्थ—सजनि = सखि, यहाँ कलियों से तात्पर्य है। कलम=वृक्ष की जड़ जो दूसरे वृक्ष को उगाने के लिये लगाई जाती है। मृदुल=मधुर। अहसान=उपकार। मुग्ध=मोहित, आसक्त। मस्तों=मतवालों। मुंदे=छिपे हुए। तत्व=भाव। अगाध=अत्यन्त गहरे। चपल=चंचल। अलि=भौंरे। परम संचित= बहुत दिनों से इकट्ठी की हुई। साध=इच्छा, अरमान। बागी=स्वच्छन्द नियन्त्रण रहित। मानिनी=मान करने वाली। पंखियां=पंखुड़ियां।

भावार्थ-वन में खिलती हुई एक कली को सम्बोधित करते हुए कवि कहता है कि हे प्रिय तुम वन के मार्ग की शोभा हो। जिस प्रकार माली कलम लगाकर नये नये वृक्षों को जन्म देता है उसी प्रकार समय के वन माली ने कलम लगाकर तुम्हें उत्पन्न किया है। भाव यह है कि तुम स्वतः ही वन में उत्पन्न हुई हो। उपवन के अन्य वृक्षों की भांति तुम्हें पैदा नहीं किया गया। अपनी डालियों पर तुमने कोटों को स्थान दिया है। यह तुम्हारा काँटों पर असीम उपकार है। हे कली तुम अनेक मतवालों के हृदय के आसक्त मय भावों को छिपाए हुए हो, क्योंकि तुम्हारे सौन्दर्य को निरख कर उन मतवाले हृदयों में तुम्हारे प्रति आसक्ति के अनेक भाव उत्पन्न होते हैं। चंचल भ्रमरों ने अपने गुंजने के अरमान अब तक तुम्हारे ही लिये संचित कर रखे थे। भाव यह है कि तुम्हारे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिना भ्रमर भी गुंजन नहीं करते थे। उन्होंने अपना गुंजन तुम्हारे लिए ही रख
छोड़ा था। वन की स्वछन्द हवा तुमसे सदैव खेल किया करती थी। तुम माननी
को उसकी स्वच्छंद प्रवृत्ति भली मालूम नहीं देती थी। हे कली तुझे अपने मस्तक
पर धारण कर ये झाड़ घमण्ड से इतरा रहे हैं। देख अभी तू अपनी पंखड़ियों
के द्वार मत खोल। हे प्रिय सखि, वनराजि की शोभा अभी तू पूर्ण रूप से
मत खिल।

मत खोल।

आ गया वह

शब्दार्थ—वायु वाही=वायु को वहन करने वाला। मित्र=सूर्य।
नवराग=नवीन लालिमा। गीत गढ़=गीत बनाकर। सराहें=प्रशंसा करें।
रागियों=प्रेमी जनों। अतुल=बहुत, अधिक। अनुराग=प्रेम। सम्पुट=फूलों के
पराग का कोश। मधुर पराग=मिठास भरा मकरंद। वेमोल=बिना किसी कीमत
की। हाट=बाजार।

भावार्थ—प्रातःकाल होते ही वायु को वहन करने वाले सूर्य की लालिमा
आकाश पर छा गई है। बुल बुलें गीत गाती हुई प्रेम से तुम्हें जगा रही हैं। ये
जो तुम्हारे प्रेमी जन भौंरे हैं, तुम पर मधुर गुंजार कर रहे हैं। वे मानों तुम्हारे
प्रेम से भरे गीतों की रचना करके तुम्हारे अनन्य त्याग की प्रशंसा कर रहे हैं,
और कह रहे हैं कि तुम्हारा प्रेम ही उनके जीवन का सहारा है, सर्वस्व है।
परन्तु हे वन की सुषमा कली, तुम इन सबके बहकाने में आकर अपने पराग के
कोष को मत खोल देना। संसार के इस बाजार में अपनी सुरभि का सौदा
मत करना क्योंकि इस बाजार में तुझे तेरी सच्ची कीमत नहीं प्राप्त होगी। यदि
एक बार तुम्हारी पंखड़ियाँ खिल गई, तब तुम्हारा सारा मूल्य नष्ट हो जायगा,
सारी उपयोगिता समाप्त हो जायगी। बुलबुलों का गान भौंरों का मधुर
आलाप यह सब तो किसी बाजार के सौदे के सामान हैं, इनकी बातों में आकर
इनके सामने अपना हृदय मत खोल देना। अन्यथा इस सोदे में घाटे में
रहोगी।

अरी तबाह।

वृत्त के अन्तर

शब्दार्थ—मृदुलतर=बहुत अधिक कोमल। जननी=माता। अनुरक्ति=
अनुराग, आसक्ति युक्त। बड़ भागिनी=बड़े भाग्य वाली। उभय=दोनों।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होड़=प्रतिद्वंदिता। तारुण्य=जवानी। कुरबान=न्यौछावर। तबाह = नष्ट।

भावार्थ—कठोर वृक्ष में जो भी कोमलतम तत्व छिपा हुआ है। वह हे कली तेरे रूप में प्रस्फुटित हुआ है। फलों को जन्म देने वाली तू ही है। सुगन्धि का अमर अनुराग भी तुम्हारे हृदय में छिपा हुआ है। इस प्रकार हे कली तू अत्यन्त भाग्यवान है। फिर क्यों तू इन लालचों में पड़ती है। इन दोनों ही लालचों को त्याग दे। तू किसी के प्रणय का शिकार मत बन। वरन प्रियतम के चरणों में न्यौछावर होकर अपनी इस तरुणाई को अमर बना ले आज तो प्राणों को बलिदान करने की सब में प्रतिस्पर्द्धा छाई हुई है। तेरा प्रियतम भी तुझसे तेरे प्राणों का बलिदान माँग रहा है। उसके लिए किए जाने वाले तेरे प्राणों का दान व्यर्थ नहीं जायगा। हे कली प्रणय के इन चंचल अरमानों को अपने हृदय से दूर कर। अभी मत खिल। नहीं तो तू व्यर्थ में ही में नष्ट हो जायगी।

हंस रही है मत जाग।

शब्दार्थ—भोगियों=विलासियों। चरण=पैरों। कुचलन=कुचली हुई वस्तु। अनुराग=प्रणय, प्रेम। राग=आसक्त, मोह, प्रेम। अपमान भोगी= अपमान भोगने वाला। नाश का गोदाय=नाश का घर। अलिगण=भ्रमर समुदाय। भैरवी=प्रभात काल में गाया जाने वाला राग। सोरठ=रात्रि काल में सोते समय गाया जाने वाला राग।

भावार्थ—हे कली तू हंस रही है। खूब हंस परन्तु अपने मुंह से कुछ बोल मत। अन्यथा तेरा मूल्य भी उन कलियों के समान हो जायगा जो विलासियों की क्रीड़ा मात्र बनकर रह गई हैं। जो विलासियों की स्वार्थ की पूर्ति के पश्चात् पैरों तले कुचल दी गई हैं। क्षुद्र प्रणय की आसक्ति पर उन्होंने अपने त्याग भरे जीवन को नष्ट कर दिया है। उनके इस प्रणय की आसक्ति से भरे कार्यों द्वारा बाग को भी अपमान का पात्र बनना पड़ा है कि जहाँ ऐसी कलियाँ जन्म लेती हैं। उन कलियों की भाँति तेरे चंचल अरमान भी तेरे विनाश का कारण बन जायँगे। क्या उन कलियों की भाँति तू भी विलासियों के हाथ अपनी तरुणाई बेचना चाहती है? इस प्रकार क्या तू भी उनकी विलासिता की सामग्री बनना चाहती है? इसलिए हे बन में खिलने वाली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कली, तू सावधान हो जा। कहीं ऐसा न हो कि ये भ्रमरगण तेरे मधुर पराग का स्पर्श करलें। अन्य कलियों की भाँति जागकर तू प्रस्फुटित मत हो। प्रभात में जागरण का संदेश देने वाले भैरवी राग को सोरठ का राग समझ। तू सोई रह, अभी जाग मत।

क्या कहा
अवसान।

शब्दार्थ—हूक=वेदना, टीस। मैना=एक पक्षी विशेष। दो टूक करना=हृदय को अत्यन्त द्रवित बनाना। महक=सुगन्धि। मैन=कामदेव। प्रलय=क्रांति। जंग=युद्ध। प्रसादिनि=प्रसन्न करने वाली। तप=साधना। अमित=बहुत अधिक। अघ=पाप। अवसान=अन्त।

भावार्थ—हे कली क्या कह रही हो। क्या कोकिला की टीस को व्यक्त करता हुआ उसका मधुरराग तुमसे सहा नहीं जाता, वह तुम्हारे हृदय में प्रणय के भाव जगा रहा है? मैना की मिठास भरी वानी तुम्हारे हृदय में तड़प बनकर गूँज रही है। चिड़ियों की मधुर चहचहाहट ने तुम्हारे हृदय को अत्यन्त व्याकुल बना दिया है। यह प्रभात की वहती हुई शीतल वायु कामदेव की भाँति तुम्हें सता रही है। इतना सब कुछ होते हुए भी हे कली तू भोग और प्रणय की लालसाओं के जाल में मत उलझ। तेरी अब तक की कौमार्य साधना कहीं भंग न हो जाय। हे प्रसादिनि तुझे तो प्रलय के साथ युद्ध करना है। इसलिये भावुक जनों की गरिमा हे कली जाग मत। सोई रह। जागकर इस भोग के पाप के लिए अपने जीवन को नष्ट मत कर।

मित्र के
मत खोल।

शब्दार्थ—मित्र=सूर्य। कर=हाथ, किरणें। सुनहली धूल=सुनहली किरणों का रूप। डालि=डाली। मुनैया=एक पक्षी विशेष। अपनपो=अपनत्व। कामिनी=नारी, रमणी। दुकूल=रेशमी वस्त्र। हिमकिरीटिनि=बर्फीली मुकुटधारी अर्थात् भारतमाता। तव=तेरे।

भावार्थ—सूर्य की सुनहली किरणें तुझ पर बरस रही हैं। तेरी डालियों पर तेरे हृदय में निर्दयता के साथ प्रणय की आसक्ति के भाव जगाती हुई निर्दय मुनैया झूल रही है। पत्ते अपना ध्यान छोड़कर भी तेरी हवा कर रहे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कामिनी के लहराते हुए रेशमी वस्त्र की भाँति तू हिल रही है। फिर भी हे कली तू इन प्रलोभनों में मत पड़। ये तेरे लिए वरदान न होकर शाप हैं, जो तुझे विनाश की ओर अग्रसर बनायेंगे। हे प्रिय सखि बर्फीले मुकुट को धारण करने वाली भारत माँ ने तेरे प्राणों का बलिदान चाहा है। इसलिए बिना कोई तर्क किए मौन भाव से मातृ-चरणों में अपने को न्यौछावर करदे। प्राणों को न्यौछावर करने के दिवस तक मुंदी हुई रह। औरों के लिए अपना हृदय खोलकर पराग मत लुटा।

जब सिपाही .... की शृंगार।

शब्दार्थ—मातृ-बन्धन-मुक्ति=भारत माँ को पराधीनता के बन्धन से मुक्त करने का। मालाकार=माला बनाने वाला। हुँकार=पुकार। सूजियाँ=सुइयाँ। बार=बारी। मधुर बलि=मधुर बलिदान। माननी=मान करने वाली। हिम किरीटिनी=बर्फीले मुकुट को धारण करने वाली भारत माँ। वनराज=वन मार्ग। शृङ्गार=शोभा।

भावार्थ—स्वाधीनता के युद्ध के लिए जब सिपाही अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए उठ खड़े हों। सेनापति ललकार उठें। भारत माता को पराधीनता के बन्धन से मुक्त करने के लिए जिस दिन स्वतन्त्रता संग्राम का उत्सव मनाया जाय। जिस दिन देश-प्रेमियों के खून से जन पथ लाल हो जाय, उसी दिन माला बनाने वाला तुम्हें तोड़ने के लिए आ पहुँचेगा। तुम्हारे प्राणों की वह माँग करेगा। बस उसी दिन हे मुंदी हुई कली, जग जाना और मालाकार के हाथों अपने प्राणों का बलिदान कर देना। सुइयों से बनाई जाने वाली देश-प्रेमियों की माला में उसी दिन तुम्हारे पिरोये जाने की बारी आयगी। तुम्हारे मधुर बलिदानों से ही विजय का सच्चा मूल्य प्राप्त होगा। हे माननी उस दिवस तक तू अपना हृदय औरों के हाथों में समर्पित मत कर। हे वनराजिकी शोभा! तू तो हिमकिरीटिनी भारत माँ के चरणों में अर्पित होने वाली भेंट है।

———

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुश्री महादेवी वर्मा

पंथ होने दो
स्वर्ण वेला।

शब्दार्थ—पंथ=मार्ग। अपरिचित=अनजान। चरण हारे=थके हुए पैर। शूल=वेदना, दुख। संकल्प=इरादे। दुख व्रत=दुख के व्रत को धारण करने वाले। निर्माण-उन्मद=निर्माण के लिये पागल। पद=पैर। अंकसंसृति=संसार का भाग्य। तिमिर = अंधकार। स्वर्ण वेला=सुनहला समय।

भावार्थ—कवियित्री का कहना है कि जिस मार्ग पर मैं चल रही हूँ वह भले ही मेरे लिए अनजान हो। इस पथ पर चलने के लिये मैं अकेली ही रहूँ, कोई मेरा संगी साथी न हो। फिर भी मैं पथ पर बढ़ती ही जाऊँगी। थक कर लौटूंगी नहीं। वे दूसरे चरण होगे जो पथ की बाधाओं से थक कर मार्ग से विचलित हो उठते हैं। वे अन्य लोग हैं जो दुखों से व्याकुल होकर अपने संकल्पों को त्याग देते हैं। परन्तु मैंने वेदनाओं का व्रत धारण किया है। मुझे दुख ही प्रिय हैं। वेदनाओं में जीवन ही मेरी साधना है। निर्माण के लिए मेरे पैर तो जीवन की अमरता को खोजने के लिए निकले हैं। वे अवश्य संसार के अन्धकार से भरे भाग्य को सुख और शांति से पूर्ण सुनहला रूप प्रदान करेंगे।

(महादेवी जी हिन्दी की रहस्यवादी कवियित्री हैं। उनकी ससीम आत्मा असीम आत्मा से तादम्य स्थापित करने के लिये व्याकुल हैं। वे कहती हैं कि असीम आत्मा से तादम्य स्थापित का मार्ग यद्यपि उनके लिए अनजान है, इस पथ की वे अकेली पथिक भी हैं फिर भी उन्हें भय और चिंता नहीं है। वे असीम आत्मा को प्राप्त करके ही रहेंगीं और इस प्रकार अपनी ससीम आत्मा को असीम आत्मा का रूप देकर अमरत्व प्रदान करेंगी। मार्ग की बाधाएँ भी उन्हें अपने संकल्पों से डिगा नहीं सकेंगीं।

दूसरी होगी कहानी
एक मेला।

शब्दार्थ—शून्य = आकाश। प्रलय=विनाश। विस्मत=आश्चर्य, चकित। नित=सदैव। हाट=बाजार। चिनगारियां=ज्वालाओं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—कवियित्री कहती है कि मेरे जीवन की कहानी उन जीवन कहानियां से भिन्न होगी जिनका संसार में कोई अस्तित्व नहीं होता। मृत्यु के

बाद जिनका स्वर आकाश में विलीन हो जाता है और जिनके जीवन के चिह्न धूल में मिल जाते हैं। मैं तो अपने जीवन को मिटाकर प्रियतम से मिलने चली हूँ। मेरी इस गति पर प्रलय भी विस्मित हैं, क्योंकि आज वेदना की चिनगारियों से मेरा जीवन जल रहा है, और आंसुओं के मोतियों से वह भरा हुआ है।

रोष की भ्रू भंगिमा ... है दुकेला।

शब्दार्थ—रोष = क्रोध, दुख। भ्रू भंगिमा=भौंहों की कुटिलता। सहेजो= भली भांति प्रदान करना। हास = हास्य, सुख। मधुदूत=मधुमास, बसंत ऋतु। उर=हृदय। अचंचल=चंचलता से रहित, शाँत। वेदना जल=दुख का पानी। स्वप्न शतदल=कमल के समान सपने। विरह=वियोग। दुकेला=जिसके साथ कोई दूसरा भी हो।

भावार्थ—कवियित्री अपने असीम प्रियतम को सम्बोधित करते हुए कहती है कि मिलन के अवसर पर चाहे तुम मधुमास के रूप में अपनी प्रसन्नता से भरी स्वीकृति प्रदान करो अथवा पतझड़ के रूप में अपना क्रोध प्रगट करो, मेरे हृदय पर तुम्हारी प्रसन्नता और क्रोध का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मैं तो निर्विकार और शांति भाव से तुमसे मिलने के लिए अग्रसर हुई हूँ। भाव यह है कि मिलन के पथ पर चाहे हर्ष के मधुमास छाएँ अथवा दुख के पतझड़ आएँ, मेरे संकल्प पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। मैं तुमसे मिलकर ही रहूँगी। जिस प्रकार कमल जल में दृढ़ और शान्ति भाव से स्थित रहता है, उसी प्रकार दुःख और पीड़ाओं में भी तुमसे मिलने को मेरे जीवन की अभिलाषा भी शान्ति और दृढ़ बनी रहेगी।'

हे प्रियतम तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि मिलन द्वारा मैं और तुम दोनों एक रूप हो जायेंगे। जो स्थिति तुम्हारी है, वही स्थिति मेरी होगी। इसलिए मुझे तुम्हारी ओर से प्राप्त पीड़ा और हर्ष की चिन्ता नहीं है। केवल विरह में ही मैं और तुम दो हैं।

× × ×

यह मन्दिर का दीप ... जलने दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ—रजत=चाँदी। घड़ियाल=घण्टा। आरती वेला = आरती का

समय। शतशत लय=सौ सौ स्वरों। कलकंठों=सुन्दर कण्ठों। विहंसे=हंसे, खिल उठे। उपल=पत्थर। तिमिर=अन्धकार इष्ट=इष्टदेव, पूजित। अजिर=आँगन। शून्य=अभाव। गलाने=नष्ट करने।

भावार्थ—इस मन्दिर के दीपक को शान्त भाव से जलने दो। आरती वेला के अवसर पर तो चाँदी के समान स्वच्छ शंख और घड़ियाल सौ सौ स्वरों में बजे थे। सोने की वंशी और वीणा का स्वर आरती के रूप में गूंजा था। आरती की उस वेला में एक प्रकार से सुन्दर कण्ठों का मेला लगा हुआ था अर्थात् सभी अपने सुन्दर कण्ठों के मधुर गायनों से इष्टदेव की पूजा में रत थे। उस समय तो मन्दिर के जड़ पत्थर भी हंसने थे लगे और अन्धकार नष्ट हो चुका था। परन्तु अब तो आरती वेला समाप्त हो गई। मन्दिर में इष्टदेव की प्रतिमा अकेली रह गई। शंख घड़ियाल अब नहीं बजाए जा रहे। दीप को शान्त भाव से मन्दिर के अभाव को दूर करने के लिये फलतः इसे जलने दो।

(प्रस्तुत पंक्तियों में कवियित्री ने अपनी ससीम आत्मा को, असीम आत्मा की आराधना के लिए दीपक रूप दिया है। वे कहती हैं कि उनकी दीपक रूप आत्मा शान्त भाव से अपने इष्ट देव की आराधना में लीन रहे। इष्टदेव की आराधना के लिए उसे शंख घड़ियाल आदि बाह्य उपादानों की आवश्यकता नहीं।)

चरणों से चिन्हित — पलने दो।

शब्दार्थ—चरणों=पैरों। चिह्नत=निशान बने हुए अलिन्द=मन्दिर का चबूतरा। भूमि=पृथ्वी। प्रणत=झुका हुआ। शिरों=मस्तकों। अङ्क=चिह्न, निशान झरे=गिरे। सुमन=फूल। अक्षत=देवताओं की पूजा में चढ़ाए जाना वाला चावल। सित=श्वेत, सफेद। धूप=देव पूजन के लिए सुगन्धित द्रव्यों से उठाया जाने वाला धुआँ। अर्घ्य=पूजा में देने योग्य। नैवेद्य=वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जाती है। अपरिमित=बहुत अधिक मात्रा में। अर्चित=अर्चना की हुई। कथा= अन्तर्हित=मिलना, विलीन होना। कहानी। लौ=दीपक की ज्योति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—भक्तजनों के पैरों के निशान से मन्दिर के चबूतरे की भूमि सुन-

हली पड़ गई है। मन्दिर की देहली पर भक्त जनों के प्रणाम करने के कारण चन्दन के निशान बन गए हैं। देव पूजा में अर्पण किए गए फूल और अक्षत मन्दिर में बिखरे हुए पड़े हैं। सुगन्धित धूप भी जल रहा है। अपरिमित नैवेद्य और अर्घ्य भी दृष्टिगत हो रहा है। परन्तु पूजा के ये सब वाह्य उपादान क्षणिक हैं। अभी क्षण भर में ये सब अन्धकार में लीन हो जायगें अर्थात् नष्ट हो जायगें। अतएव अर्घ्य, नैवद्य और धूप के द्वारा इष्ट देव की जो अर्चना की जाती हैं, वह इसी दीपक की ज्योति के रूप में होने दो। भाव यह है कि इष्ट देव की आराधना के लिए आत्मा रूपी दीपक का प्रकाश ही यथेष्ट है। पूजा के अन्य बाह्य उपादान तो क्षणिक हैं।

पल के मन ढलने दो।

शब्दार्थ—पल=समय। मनके=मोती। फेर=फिरा कर। प्रतिध्वनि=प्रतिशब्द, गूंज। प्रस्तरों=पत्थरों। समाधि=वह स्थान जहाँ शव या अस्थियाँ गाड़ी जाती हैं। मसि सागर=स्याही के समान समुद्र। पंथ=मार्ग। मुखर=बोलता हुआ। स्पंदन=गति सिहरन। ज्वाल=दीपक की लौ, ज्योति।

भावार्थ—यह संसार रूपी पुजारी पूजा के समय को समाप्त कर सो गया है। पूजा की गूँज अब पत्थरों में विलीन हो गई है। अर्थात् पूजा का स्वर अब सुनाई नहीं दे रहा है। आज जब कि यह जीवन केवल सांसों की समाधि बना हुआ है। भाव यह है कि अब जीवन में गति और चेतना नहीं रही है। मार्ग भी स्याही के समुद्र की भांति घने अन्धकार से भर गया है। प्रत्येक कण अब कम्पन रहित और जड़ रूप बन गया है। फलतः इन प्राणों को ही दीपक की लौ के रूप में जलने दो।

झंझा है दिग्भ्रांत चलने दो।

शब्दार्थ—झंझा=वर्षा सहित वायु के झोंके। दिग्भ्रांत=दिशाओं का ज्ञान जिसे नहीं रहा हो। मूर्च्छा=बेहोशी, चेतना नहीं रही हो। लघु=छोटा। प्रहरी=रक्षक। प्रतिपल=प्रतिक्षण। आभा जल=प्रकाश का पानी, साँझ का=संध्या का। प्रभाती=प्रभात काल तक।

भावार्थ—रात्रि के अंधकार में वर्षा और आँधी से दिशाओं का ज्ञान भी नहीं सूझ रहा है। रात्रि निद्रा की गहरी बेहोशी में डूबी हुई है। ऐसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्थिति में यह लघु दीपक ही पुजारी बनकर मंदिर के इष्ट देव की आराधना में रत रहे। जब तक दिवस पुनः वापिस आयेगा, यह मंदिर पूजा की हलचल से भर उठेगा, तब तक यह दीपक प्रतिक्षण जलता हुआ मंदिर के कण-कण प्रकाश भर जायगा। यह दीपक रात्रि का संदेश वाहक है। भाव यह है कि दीपक रात्रि में ही प्रकाशित होता है। इसलिए इस दीपक को रात्रि भर प्रभात होने तक जलने दो।

× × ×

मिल जाता मेघों की माला।

शब्दार्थ—अंजन = काजल। राग = प्रेम। घुटकर = साँस को भीतर ही रोक कर। मूक = शाँत, चुप। आहें = पीड़ाओं, दुःखों। मतवालीसी = पागल के समान। वेदनाओं = पीड़ाओं। रुंधी = रुकी। मेघों की = बादलों की।

भावार्थ—जब संध्या के आँखों की प्रेम पूर्ण लालिमा रात्रि के काले काजल का रूप ले लेती है अर्थात् जब संध्या काल की लालिमा, रात्रि के घने अंधकार में परिवर्तित हो जाती है। आकाश में जब तारे उदित हो रहे हैं, मानों आकाश उन बिखरे हुए तारों को गिन रहा है। उन तारों में मानों आकाश की अभिलाषाएँ खो गई हैं, जिसकी वेदना आकाश के हृदय में मूक बनकर दब गई है। आकाश पर छाए हुए बादलों के समूह ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे आकाश के प्राणों से विंधी हुई साँसें पागल के समान झूमझूम कर वेदनाओं के प्याले पी रहीं हों।

उसके रह रह कर आँसू की पाँते।

शब्दार्थ—विद्युत = बिजली, पाँते = पंक्ति,

भावार्थ—आकाश में बिजली क्षण भर के लिए चमक उठती है, फिर छिप जाती है। ऐसा प्रतीत होता है मानों आकाश सिसकियाँ भर रहा हो। ओस की बूंदों में रात्रि काल अपने आँसू रूपी मोतियों को इस धरती के सूने आँगन में बिखरा देता है। प्रातःकाल की शीतल वायु मानों रात्रि की ठंडी साँसें हैं, जो ओस की बूंदों के रूप में रात्रि के आँसुओं से भीगी हुई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उनकी सिहराई फूलों के लोचन।

शब्दार्थ—सिहराई = सिहरन भरी। चुम्बन = स्पर्श। मंद = धीमी गति वाला। समीरण = वायु, हवा। लोचन = आँखें।

भावार्थ—सूर्य की किरणों के स्पर्श से ये ओस की बूंदें सिहर-सिहर कर कांप रही हैं। प्रभात काल की मंद वायु उन सिहरती हुई ओस की बूंदों को उनके विगत जीवन का कौनसा सन्देश दे रही है। वायु के स्पर्श से मुरझाये हुए फूल भी खिल उठे हैं।

उनके फीके का सूना पन।

शब्दार्थ—फ़ीके = नीरस, प्रभावहीन। अलसाकर = मुरझाकर। नीरव = मौन। रागों = चिन्हों। आहों = दुखों। त्यागों = छोड़ने में। मानस = मन, हृदय। निर्मम = कठोर।

भावार्थ—ये फूल क्षण भर के लिए मुस्कराते हैं। परन्तु उनकी मुस्कराहट में जीवन नहीं होता। वे शीघ्र ही मुरझाकर नीचे गिर जाते हैं। इस प्रकार इन मुरझाए हुए फूलों में, आँख से गिरते हुए आँखों में, सुख की भीख माँगने वाली वेदनापूर्ण आँखों में, ओठों की पीड़ा भरी मुस्कराहट में और उसके हृदय की वेदनाओं के स्वर में अर्थात् जगत के अणु अणु में मेरे हृदय का अभाव समाया हुआ है। भाव यह है कि जिस प्रकार मैं प्रियतम से रहित उसके वियोग में दुखी हूँ, उसका अभाव मेरे जीवन का सूनेपन हैं, उसी प्रकार संसार का प्रत्येक पदार्थ अपने प्रियतम के अभाव में सूनेपन का अनुभव कर रहा है।

\+ × ×

बीन भी हूँ प्रवाहिनी भी हूँ।

शब्दार्थ—बीन=वीणा। अचल=कभी न मिटने वाली। निस्पंद=धड़कन से रहित। प्रथम=पहला। जागृति=जागरण, जागा हुआ। प्रलय=विनाश। पद चिह्न=पैरों के निशान। कूल=किनारा। कूल हीन=जिसका कोई किनारा न हो। प्रवाहिनी=सरिता।

भावार्थ—मैं तुम्हारी वीणा हूं और उससे निकलने वाली रागिनी भी हूं। मेरी प्रणय साधना का प्रत्येक अंग बिल्कुल शांत और कम्पन रहित था। नींद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के समान मेरे प्रेम की साधना अचल थी। मैं उस जागृति के समान हूं जो प्रभात होते ही संसार के सर्व प्रथम स्पंदन में होती है। या तो मेरा पता प्रलय से मिल सकता है, अथवा प्रिय के पैरों के निशान में। मैं वह शाप हूँ जो तुम्हारे प्रेम के बन्धनों में बंधकर वरदान बन गया है। किनारा भी हूँ और तट रहित सरिता भी हूँ। (इन पंक्तियों में कवियित्री ने जीवात्मा और परमब्रह्म के पारस्परिक सम्बन्ध की ओर संकेत किया है)।

नयन में सुहागिनो भी हूँ।

शब्दार्थ—नयन में=आँखों में। जलद=वादल। तृषित=प्यासी। शलभ= पतंगा। निठुर=निष्ठुर, जिसमें दया न हो। फूल=सुमन, यहाँ प्रसन्नता से तात्पर्य है। उर=हृदय। विकल=व्याकुल, दुखी। तन=शरीर। छाँह=छाया। चल=अस्थिर, चंचल। अखण्ड सुहागिनी=अक्षय सौभाग्यवती।

भावार्थ—मैं वर्षा जल की बूदों के लिए वह प्यासा चातक हूँ जो कि अपने नेत्रों में स्वयं बादलों को छिपाए हुए हैं। (भाव यह है कि यद्यपि जीवात्मा में परम ब्रह्म की सत्ता निहित रहती है फिर भी जीवात्मा परमब्रह्म से मिलने को व्याकुल रहती है)। इसी प्रकार हे प्रियतम तुम्हारी छवि सदैव मेरी आँखों में अङ्कित रहती है, फिर भी तुम्हारे लिए मैं उस चातक के समान व्याकुल हूँ जो यद्यपि बादलों की रट लगाता है तथापि उसकी आँखों से सदैव बादलों के वर्षाजल के समान आँसू की बूंदें आती हैं। मैं उस निष्ठुर दीपक के समान हूँ जिसके प्राणों में पतंगों का जीवन बसा हुआ है। मैं उस बुलबुल के समान हूँ जो अपने हृदय में फूलों के समान हर्ष को छिपाए हुए हैं लेकिन फिर भी व्याकुल है। यद्यपि छाया सदैव शरीर के साथ एक होकर चलती है लेकिन मैं वह छाया हूँ जो तुम्हारे शरीर केसाथ होकर भी तुमसे दूर चलती हूँ। अर्थात् मेरी ससीम आत्मा तुम्हारी असीम आत्मा के साथ होकर भी तुमसे दूर हैं। हे प्रियतम यद्यपि मैं तुमसे दूर हूँ, फिर भी मेरा सौभाग्य अमर है।

आग हूँ दामिनी भी हूँ।

शब्दार्थ—विन्दु=बूंद। हिम जल=बर्फीला पानी। शून्य=खाली। पांवड़े= किसी के स्वागत में बिछा हुआ वस्त्र जिस पर पैर रखकर चला जाता है। पलकें=आँखें। पुलक=रोमांच। प्रस्तर=पत्थर। प्रतिबिम्ब=छाया। आधार=

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहारा । उर=हृदय । नीलघन=नीला आकाश । दामिनी=बिजली ।

भावार्थ—मैं वह आग हूँ जिसके नेत्र से सदैव बर्फ के आँसू ढला करते हैं मैं वह अभाव हूँ, जिसके स्वागत के लिए पलकों के पांवड़े बिछे हुए हैं। मैं वह हर्ष का रोमांच हूँ जो कठोर पत्थरों में पला है। मैं वह झलक हूँ, जिसका कि आधार हृदय है। मैं नीला आकाश भी हूँ और उसमें चमकने वाली सुनहली विजली भी हूँ।

नाश भी हूँ   चाँदनी भी हूँ।

शब्दार्थ—अनन्त विकास=ऐसा विकास जिसका कभी अन्त न हो। क्रम=सिलसिला। चरम आसक्ति=पूर्ण अनुरक्ति। तम=अन्धकार। आघात=चोट। गति=चाल। झंकार=स्वर, आवाज। पात्र=प्याली। मधु=मदिरा। मधुप=भौंरा। मधुप=मीठी। विस्मृति=भूलना। अधर=ओठों। स्मित=मन्द। हास्य=मुस्कराना।

भावार्थ—मैं नाश हूँ और साथ में निर्माण का वह विकास भी हूं जिसमें क्रम का कभी अन्त नहीं होता। मैं दिन के उज्ज्वल प्रकाश के समान त्याग भी हूँ और रात्रि के घोर अन्धकार के समान पूर्ण अनुरक्ति भी हूँ। मैं बीणा के तार हूँ, तारों पर की जाने वाली चोट हूँ, तथा चोट से निकलने वाली झंकार की लय भी हूँ। मैं प्याला भी हूँ, मदिरा भी हूँ, मदिरा पीने वाला भी हूँ तथा उस मदिरा को पीकर हृदय पर छाने वाली मधुर विस्मृति भी हूँ। मैं ओठ भी हूँ और उन ओठों पर खिलने वाली चाँदनी के समान मधुर मुस्कराहट हूँ।

डा० रामकुमार वर्मा

ये गजरे तारों वाले

इस सोये संसार   तारों वाले।

शब्दार्थ—सजकर=शृंगार करके। रजनी वाले=रात्रि सुन्दरी। गजरें=हार।

भावार्थ—रात्रि होने पर आकाश में तारे चमकने लगते हैं। कवि कल्पना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करता है कि ये तारों के हार हैं, जिन्हें सजधज कर निशा सुन्दरी जग के बाजार में बेचने चली है। कवि कहता है कि हे निशा बाला, अब तो सारा संसार सोया हुआ है। फिर इस प्रकार सजधजकर इन तारों के गजरों को कहाँ बेचने के लिये ले जा रही हो?

मोल करेगा निधियाँ न्यारी।

शब्दार्थ—उत्सुक=उत्कण्ठित, इच्छुक। सारी=समस्त। कुम्हलाने=मुर्झाने निधियाँ=खजाना। न्यारी=अनौखी।

भावार्थ—तुम्हारे इन तारों का कौन मोल-भाव करेगा? क्योंकि जो आखें इन तारों को खरीदने के लिए इच्छुक हैं वे तो अब निद्रा में मग्न हैं। ये तारों के गजरे तेरी अनौखी निधि हैं। इनके फूलों को इसलिए व्यर्थ में ही मत मुर्झाने दे। (रात्रि व्यतीत होने पर तारे छिप जाते हैं। तारों के छिपने को कवि ने कुम्हलाने का रूप दिया है। कवि कल्पना करता है कि इन तारों रूपी गजरों को निद्रा मग्न होने के कारण कोई खरीद नहीं पाता। फलतः ये तारे रूपी फूल सुबह होते ही मुर्झा जाते हैं)।

निर्झर के निर्मल मत होना।

शब्दार्थ—निर्झर=झरना। हहरकर=आवाज करती हुई। किंचित= तनिक भी। विचलित=अस्थिर।

भावार्थ—हे निशा सुन्दरी, अपने इन तारों के गजरों को झरनों के निर्मल जल में भली-भाँति धोधोकर स्वच्छ करना। (तारों का प्रतिबिम्ब झरने के जल में पड़ता है। कवि कल्पना करता है कि जैसे निशा सुन्दरी अपने तारों रूपी गजरों को जल में धो रही हो)। यदि झरने की लहर आनन्द-ध्वनि करती हुई तुम्हारे तारों के गजरों को चूमने के लिए गतिशील बनें तो इससे तुम तनिक भी भयभीत मत बनना। क्योंकि लहरों के ऊपर उठने से तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा जैसे तारों के गजरे लहरों में छिपे जा रहे हैं।

होने दो प्रतिबिम्ब यह गाना।

शब्दार्थ—प्रतिबिम्ब=परछाईं। विचुम्बित=स्पर्श की गई। निर्झर-स्वर= झरने का स्वर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—अपने इन गजरों का प्रतिबिम्ब इन लहरों में पड़ने दो और

लहरों द्वारा उस परछाईं को चूमने दो। इस प्रकार इन गजरों को तुम इन लहरों में ही लहराना। झरनों की लहरें जिस ध्वनि में गुञ्जरित हो रही हैं, उसी स्वर में तुम भी अपने तारों के गजरों का मोल करना।

यदि प्रभात सब गजरे।

शब्दार्थ—सरल हैं।

भावार्थ—हे निशा सुन्दरी, यदि प्रभात होने तक भी कोई व्यक्ति तुम्हारे गजरों को न खरीद सके, तब इन तारों के गजरे को ओस की बूंदों के रूप में फूलों पर फैला देना। (प्रातःकाल होने पर फूलों पर जो ओस की बूंदें दिखलाई पड़ती हैं, कवि उसके विषय में कल्पना करता है मानो निशा रूपी युवती ने अपने तारे रूपी गजरों को फूलों पर ओस के रूप में फैला दिया हो)।

अशान्त

नश्वर स्वर मेरे प्रति अभिशाप।

शब्दार्थ—नश्वर=नष्ट होने वाले। अनश्वर=शाश्वत, कभी नष्ट न होने वाले। सुकुमार=कोमल। सतेज=तेज सहित, कठोर। सेज=शय्या। मेरे प्रति=मेरे लिए। अभिशाप=शाप, अमङ्गलकारी भावनाएँ।

भावार्थ—मेरा जीवन तो नश्वर है। फिर इस नश्वर जीवन द्वारा शाश्वत ब्रह्म की आराधना किस प्रकार करूँ? यह नश्वरता ही तो मेरे जीवन की हार है। इसे अपने जीवन का विजय रूप कैसे मान लूँ? यह सारा संसार ही नश्वर है। यह सुन्दर उषाकाल जो अभी इतने मधुर रूप में दिखलाई पड़ रहा है, कुछ ही क्षणों में सूर्य निकलने पर अत्यन्त कठोर बन जायगा। लताओं पर अभी जो ओस की बूंदें छाई हुई हैं, वे ही अब थोड़ी देर में सूख जायगीं। इस प्रकार लताओं का निवास स्थान ही ओस विन्दुओं के लिए मृत्यु की सेज बन जायगा। मेरे इस नश्वर जीवन का अन्त किस प्रकार होगा, इस विषय में कोई कुछ कह नहीं सकता। मैं भी अपने नश्वर जीवन की गति को चुपचाप देख रहा हूं। जिस प्रकार सूर्य की किरणों से ओस की बूंदें नश्वरता को प्राप्त हुई, उसी प्रकार किसके गीत मेरे प्रति अभिशाप बन कर आयेंगे?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्या है अन्तिम ... भीषण व्याल।

शब्दार्थ—लक्ष्य = उद्देश्य, अज्ञात = जिस विषय में कोई ज्ञान न हो, श्यामवस्त्र = काले वस्त्र, पथिक शशि = चंद्रमा रूपी पथिक, व्याल=सर्प,

भावार्थ—निराशा के अंधकार से भरे इस नश्वर जीवन की गति का अन्तिम उद्देश्य क्या है कोई नहीं जानता। यह उजला दिवस रात्रि के अंधकार में बदल जाता है। तारों के रूप में काँच के टुकड़े बिछाकर यह नीच आकाश भोले चन्द्रमा को नश्वर जीवन के प्रति आसक्त कराकर दुख देता है। भाव यह है कि आकाश के तारे कांच के टुकड़ों के समान हैं जिनकी चमक रात्रि काल तक ही रहती है। सुबह होते ही वे मिट जाते हैं। चन्द्रमा प्रतिदिन इन्हीं तारे रूपी काँच के टुकड़ों में उलझा रहता है। उसी प्रकार इस संसार पथ का राही भी जगत के नश्वर पदार्थों के बीच जिनकी चमक दमक नश्वर है उलझा रहता है।

कवि कहता है कि लता में छिपे हुए भीषण सर्प की भाँति इस जीवन से भी काल रूपी सर्प लिपटा हुआ है। यही मेरे जीवन की उलझन है, जिसका कोई आशा भरा सुन्दर हल नहीं है। कहीं यह सब जादू का खेल तो नहीं हैं?

देख रहा हूँ ... ही संताप।

शब्दार्थ—शाँत रश्मि = शाँति की किरणें। रेख = चिन्ह। अशाँत तम = अशाँति का अंधकार। अनिल लहर = वायु की लहरें। सरोष = रोष सहित, क्रोधित होकर। निरपराध = जिसका कोई अपराध नहीं है। संताप = दुख,

भावार्थ—जीवन मार्ग पर बहुत दूर यद्यपि में शाँति की किरणों के चिह्न देख रहा हूं, परन्तु वह शांति का प्रकाश भी अशान्ति का अन्धकार बन कर ही मेरे पास आ रहा है। प्राण रूपी इस जीवन की साँसें रह रह कर अधिक तेजी से काँप रही हैं, मृत्यु के इस भय से निरपराध मन व्याकुल बन रहा है, और वह इस मृत्यु के लिए अपने को ही दोषी बतला रहा है। यह कैसी अनीति है, कि दूसरों के हाथों यह शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है? क्या इस नश्वर शरीर द्वारा अमरता की खोज करना पाप है? यह नश्वरता जिसे मैं जीवन का आनन्द समझे हुए था आज मेरे दुख का कारण बनी हुई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का पहला रूप

हास्य कहाँ है

शब्दार्थ—रोदन = रुदन, रोना। परिणाम=फल। विश्राम = आराम। दूषित = कलुषित, मैला। रोष = क्रोध। अनूप = सुन्दर।

भावार्थ—यह जीवन तो नश्वर है। हम जिसे हास्य का रूप देते हैं कल वहीं रुदन में बदल जाता है। भाव यह है कि साँसारिक सुख क्षणिक हैं। आज जिन्हें हम सुखी कहते हैं, कल वे ही दुख के शिकार बनते हैं। जिसे हम प्रेम कहते हैं वह तो घृणा का रूप है। भाव यह है कि इस जीवन में वास्तविक प्रेम नहीं किया जाता है। मानव प्रेम सदैव स्वार्थ से भरा होता है। दया की पवित्रता को क्रोध सदैव नष्ट करता रहता है। भाव यह है कि इस मानव जीवन में जहाँ एक ओर दया है वहाँ क्रोध भी है। इसी प्रकार जो पुण्य किया जाता है, वह भी पाप मय होता है।

यह संसार क्षण भंगुर है, यहाँ का प्रत्येक पदार्थ नश्वर है। जो फूल अभी खिल रहा था वह ही कल धूल में मिल जाता है, मानों फूल ने धूल में मिलने को ही जन्म लिया था। इसीलिए जिसे हम विकास कहते हैं, वह तो विनाश का पहला रूप है। अर्थात् ज्यों-ज्यों किसी का विकास होता जायगा त्यों-त्यों वह नाश की ओर अग्रसर होती जायगी।

जग में कौन ?

मेरे दुख में

शब्दार्थ—शून्य = खाली आकाश। भिक्षुक हाथ = भीख माँगता हुआ हाथ। श्वास-प्रवाह = सांसों का क्रम। आह = दुख। मौन = शांत।

भावार्थ—यह प्रकृति भी मेरे दुख में सहायक नहीं बन रही है। (प्रकृति स्वयं नश्वर है) सुख और शांति की भिक्षा के लिए मेरे भिक्षुक हाथ शून्य में उठे रह जाते हैं, परन्तु उन्हें सुख और शान्ति कोई नहीं प्रदान करता आज मेरा हृदय असीम वेदना से व्यथित हो रहा है। यदि इस अवसर पर मेरे निकट कठोर चट्टानें भी होती तो वे भी मेरी पीड़ा भरी सांसों को पाकर बहुत देर तक मेरी वेदना को अपने गूंज भरे स्वर में व्यक्त करती रहती। मेरी इस वेदना पर कोई तनिक भी ध्यान नहीं दे रहा। वृक्ष के पत्ते भी मर्मर की ध्वनि में क्षण भर के लिए हंसते हुए फिर शांत बन जाते हैं। इस संसार में मेरा क्या स्वरूप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, मेरा क्या अस्तित्व है यह मैं स्वयं नहीं जानता। मैं अपने को भूल चुका हूँ।

वह सरिता है ... हृदय मलीन।

शब्दार्थ—अविराम=लगातार, बिना किसी बाधा के। तट=किनारे। विश्राम=आराम। निशि-दिन=रात दिन। आठों याम=आठों पहर, प्रत्येक क्षण। अंगों=शरीर। तट=किनारा। लीन=छिपाना। मलीन=मैला, यहाँ नश्वरता से तात्पर्य है।

भावार्थ—यह चंचल नदी लगातार बिना किसी बाधा के बही जा रही है। इस नदी की थकी हुई लहरें दोनों किनारों पर विश्राम पाती हैं। मेरा जीवन भी इस नदी की भांति है। मैं भी इस सरिता की भांति बिना किसी रुकावट के रात दिन और आठों पहर चलता ही रहा हूँ। परन्तु सरिता की भाँति मेरे हृदय ने कभी भी शान्ति का नाम नहीं सुना। मेरी गति सदैव अशान्तिमयी रही। सरिता की थकी हुई लहरों को तो नदी के तट अपनी गोद में छिपा लेते हैं। परन्तु मेरे थके हुए जीवन अर्थात् मृत्यु को प्राप्त जीवन को भला कौन अपने में लीन करेगा। मृत्यु के बाद मेरे इस जीवन की क्या गति होगी ?

कंकाल

क्या शरीर ... इतना अभिमान।

शब्दार्थ—शुष्क=सूखा। छविजाल=सुन्दरता का समूह। भीषण=भयानक कंकाल=अस्थिपंजर, हड्डियों का ढाँचा। गर्व=घमण्ड। मदिरा=नशा। मद-माती=पागलपन से भरी। नादान=अनजान।

भावार्थ—जीवन के वास्तविक स्वरूप को प्रगट करता हुआ कवि कहता है कि यह शरीर कितना तुच्छ है। यह तो सूखी हुई धूल की क्षणिक शोभामात्र है। अर्थात् आज यह शोभामान शरीर कल धूल में बिखर जायगा। इस शरीर को हम सुन्दर और शोभा युक्त कहते हैं, परन्तु यह अपने वास्तविक रूप में हड्डियों का भयानक ढाँचा मात्र है। यह कितनी मूर्खता की बात है इस कंकालमय शरीर पर यह मनुष्य इतना गर्व करता है उसकी प्रशंसा के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गीत गाता है।

यह जीवन तो क्षणिक नशे के समान है। उस नशे से पागल बनकर मानव जन मृत्यु को प्राप्त होता है। इसलिए इस जीवन की मदिरा से उन्मत्त नयन वाले नादान मानव प्राणी ठहर। फूल के समान अपने नश्वर जीवन पर इतना अभिमान मत कर। जिस प्रकार खिलता हुआ फूल सूखकर धूल में मिल जाता है, उसी प्रकार तेरा यह जीवन भी नष्ट होकर धूल में बिखर जायगा।

इस यौवन ... यौवन की याद।

शब्दार्थ--इन्द्र धनुष=सात रंगों का बनाया हुआ अर्द्ध वृत्त जो बरसात काल में आकाश में दिखलाई पड़ता है। वासना=कामना, इच्छा। अनंग=कामदेव। उन्माद=पागल पन। जर्जर पन=वृद्धावस्था का टूटा फूटा रूप।

भावार्थ--इन्द्र धनुष की भांति इस रंगीले यौवन में केवल वासना का रंग भरा हुआ है। वर्षा के काले बादलों में जिस प्रकार यह इन्द्र धनुष अपनी शोभा दिखलता है उसी प्रकार यह यौवन भी वासना की कालिमा से रंगा हुआ है। यौवन का यह जो चमक दमक से भरा हुआ रूप है वह सब वासना का श्रृङ्गार रूप है। यौवन की इस पागल भरी उमंगों में तुम्हारा जीवन भी एक पागल भरी उमंग बनकर अपने को भूल गया है। जिस प्रकार आँखों में छाए हुए सपने क्षणिक होते हैं, उनका कोई स्वरूप नहीं होता उसी प्रकार अनंग अर्थात् कामवासनाओं के रूप में यौवन का नशा होता है। यह कामवासनाएँ धूल कणों में भी पागलपन भर देती है। तब फिर इन कामवासनाओं के नशे में उन्मत्त मानव जीवन तो और भी अधिक पागल बन जायगा। जीर्ण शीर्ण वृद्ध जीवन में भी ये कामवासनाएँ यौवन का नशा भर देती हैं।

और याद ... अरुण विलास।

शब्दार्थ--मृगनयनी=जिसके नयन मृग के समान सुन्दर हैं। नयन विलास=नेत्रों की केलि क्रीड़ा। लजाती थी=शर्माती थी। चितवन=देखने का ढङ्ग, अवलोकन। कलित=सुन्दर। कोरों=किनारों, कोनों। भ्रू-भङ्ग=तिरछी नजर से देखना। हास=सौन्दर्य। अम्बर=आकाश। अरुण विकास=विकसित होती हुई लाल रंग की लालिमा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ--कवि मानव जन के नश्वर सौन्दर्य की ओर संकेत करता हुआ कहता है कि आज मुझे मृग के समान नेत्रों वाली सुन्दरी के चंचल नेत्रों की मधुर क्रीड़ाएँ याद आ रही हैं। उसकी दृष्टि कभी हर्ष से मुस्करा उठती थी, कभी शर्मा जाती थी। उषा की अरुण लालिमा के समान उसके सुन्दर कपोल थे। अपनी धनुष के समान तिरछी भौंहों से वह सुन्दरी चितवन के चंचल तीर चलाती थी। परन्तु उसका यह सब रूप सौन्दर्य क्षणिक और नश्वर था। जिस प्रकार मुस्कराते और खिलते हुए फूल मुरझाकर धूल में मिल जाते हैं, उसी प्रकार मैंने इस रूप को मुरझाते हुए देखा है। जिस प्रकार दिवस की अरुण लालिमा को संध्या का काला आकाश ढक लेता है, उसी प्रकार मैंने इस यौवन को वृद्धावस्था की काली छाया में मिटते हुए देखा है।

दूर! दूर!! विष का स्राव।

शब्दार्थ- मतवाला=पागल। राग=संगीत। अनुराग=प्रेम। शृंगार=सजना। निश्चल=शांत। आहों=दुखों। पथराई=निर्जीव, पत्थर की भाँति निश्चेष्ट। विष=जहर। स्राव=बहना।

भावार्थ--कवि कहता है कि यह यौवन का संगीत मुझे नहीं चाहिए। मेरे कानों को इसे मत सुनने दो। मुझे इस यौवन के उन्माद से दूर रखो। क्या तुम चाहते हो कि मैं इस संसार के नश्वर पदार्थों से प्रेम करूं? जो फूल मुरझाकर गिर पड़ता है, उसी से अपने जीवन का शृंगार करूं? भाव यह है कि जीवन की चमक-दमक, साज शृङ्गार, भोग-विलास और सांसारिक पदार्थ सभी क्षणिक हैं। सब एक न एक दिन नष्ट होने वाले हैं, अतएव उनके प्रति आसक्त होना पागलपन है। कवि कहता है कि यह जीवन तो शव मात्र है। मृत्यु के बाद जो धूल मय बन जाता है। फिर ऐसे जीवन के प्रति अनुरक्त होना व्यर्थ है। इस संसार के सभी पदार्थों में वेदना भरी हुई है। अपने हृदय के पीड़ा भरे इन भावों को फिर किन-किन रूपों में व्यक्त करूँ? मेरी आँखें भी तो निर्जीव और निश्चेष्ट हैं। फिर भला इन आँखों से संसार की वेदना को किस प्रकार देख सकता हूँ?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अरे पुण्ड जीवन की हार।

शब्दार्थ—पुण्य = धर्म। संताप = दुख। सुमन-रंग = फूलों का सौंदर्य। भ्रमर = भौंरे। नश्वरता = नष्ट होने वाली, क्षणिक।

भावार्थ—जिसे तुम जीवन का धर्म बतलाते हो वह तो यथार्थ में पाप है। संसार के इन क्षणिक सुखों में प्रमत्त होकर क्यों अपने जीवन को दुखों के गर्त में डाल रहे हो। भौंरे फूलों के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर आनन्द केलि करते हैं, परन्तु उन फूलों का सौंदर्य क्षणिक होता है। फिर न मालूम भौंरे किस आशा को लेकर उन फूलों के प्रति आसक्त रहते हैं। इसी प्रकार मानवजन भी भौंरों की भाँति जीवन के क्षणिक सौंदर्य में न जाने क्यों उलझे रहते हैं? वे ओस की बूंदें जिनका अस्तित्व क्षणिक है पल भर में ही जो सूखकर बिखर जाती हैं, वही रूप उन तारों का है जिन्हें हम आकाश का शृङ्गार समझते हैं।

यह संसार नश्वर है, यहाँ के सभी पदार्थ क्षणिक हैं। यह जीवन नश्वर है फिर क्यों हम इस नश्वरता के प्रति अनुरक्त हो रहे हैं। जीवन के इन क्षणिक सुखों में अपने को भूले हुए हैं। जीवन के इन क्षणिक सुखों का आनन्दानुभव करते हुए यदि हम इसे जीवन की वास्तविकता समझें तो यह हमारी भूल है। यह जीवन का वरदान नहीं उसका अभिशाप है। इसे हम अपने जीवन की विजय समझते हैं परन्तु वास्तव में तो यह हमारी भूल है।

मृत्यु वही है लोचनों से हीन।

शब्दार्थ—विरही = वियोगी। नाश विलास = विनाश की क्रीड़ाएं। शुष्कता = मुरझाया रूप। हृदय-सुमन = हृदय रूपी फूल। जीवन आभा = जीवन का प्रकाश। मलीन = निष्प्रभ, फीकी। लोचन से हीन = दृष्टि रहित, अन्धा।

भावार्थ—जब जीवन शक्ति नष्ट हो जाती है, तभी मृत्यु आती है। इस प्रकार मृत्यु जीवन की हार है। वह हमारे जीवित क्षणों के विनाश का रूप है। फिर न जाने क्यों हमारे जीवन के क्षण अपने वर्त्तमान को छोड़ते हुए मृत्यु के निकट सरकते जा रहे हैं। भाव यह है कि ज्यों ज्यों जीवन के क्षण व्यतीत होते हैं त्यों त्यों मृत्यु अधिक निकट आती जाती है। इस प्रकार मेरी ही आँखों के आगे मेरे जीवन के विनाश की क्रीड़ाएँ प्रारंभ हो जाती हैं। मृत्यु के जाल में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीवन उलझने लगता है। जिस प्रकार फूल की शुष्कता चोर की भांति फूल के विकसित रूप को चुरा लेती है उसी प्रकार मेरे फूल रूपी हृदय में मृत्यु का चोर झाँक रहा है जो एक दिन मेरे प्राणों को चुरा ले जायगा। ज्यों ज्यों दिवस व्यतीत हो रहे हैं, जीवन का प्रकाश मंद पड़ता जा रहा है। भाव यह है कि ज्यों ज्यों जीवन व्यतीत होता रहता है उसकी शक्ति नष्ट होती जाती है। जीवन के इस अन्धकार में मैं प्रकाशहीन हो रहा हूं। मेरे अंधे नेत्रों को सच्चा मार्ग नहीं सूझ रहा है। (अन्धकार को पार करने के लिये प्रकाश आवश्यक है। इसी प्रकार यह मानव जीवन वैसे ही अंधकार मय है। उसमें भी मानव अंधा होकर गतिशील बनता है। यह उसके लिए और भी दुखप्रद बात है।)

झूल रहा ... नीरस भाव।

शब्दार्थ--स्मृति=याद । हिलोरें=लहर । यौवन लाली=यौवन का उल्लास। जीवन-सुमन-विहार=जीवन रूपी फूल से आनन्द केलि करना। माद-कता=नशीलापन। शुष्क=सूखी । आलिंगन=भुज बन्धन। मतवाले=उन्मत्त, पागल। नीरस=शुष्क।

भावार्थ--मेरा मन यौवन की चंचल स्मृतियों में झूल रहा है। इन स्मृतियों में डूबा हुआ मैं, यौवन के उल्लास से भरे जीवन के विविध चित्रों को देख रहा हूँ। यौवन की लालिमा से मेरा जीवन रूपी फूल खिला हुआ था। यौवन का वह उल्लास मेरे जीवन से आनन्द केलि किया करता था। जिस प्रकार पूर्ण विकसित फूल सूखी पत्तियों के प्रति आलिंगन के भावों का प्रदर्शन करता है, उसी प्रकार यौवन के उन मतवाले क्षणों में मैं तुच्छ से तुच्छ वस्तुओं से प्यार किया करता था। मन की वे नीरस भावनाएँ हृदय को उन्मत्त बनाया करती थीं।

काले भावों की ... उस बार।

शब्दार्थ--काले भावों=कलुषित भावनाएँ। रजनी=रात्रि। अभिसार=प्रिय से मिलन। समुत्सुक=विशेष रूप से उत्सुक। लोचन=आँखें। लोचन चार होना=सामने होना। उपहार=भेंट।

भावार्थ--कलुषित भावनाओं की अंधेरी रात्रि में मैंने अनेक बार जीवन को आनन्दप्रद बनाने की आशा का मिलन देखा है। (भाव यह है कि मानव

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जन वासनाओं की पूर्ति में ही जीवन का आनन्द समझ बैठा है।) मैंने छिप-छिप कर अपने प्रति उनका उत्कंठित प्यार देखा था। मेरा छिप कर देखना और उनकी मेरे प्रति प्रगट की जाने वाली प्यार भरी उत्सुकता ये दोनों ही बातें कभी कभी हम दोनों को प्रत्यक्ष रूप में मिला देती थीं। लेकिन इस मिलन के उपहार स्वरूप मुझे केवल निष्प्राण ओठों का मुरझाया हुआ सा चुम्बन ही मिलता था। ऐसा चुम्बन जिसमें कोई स्पंदन और गति नहीं होती थी।

उत्सुकता के बदले ... धनुष रूप संसार ?

शब्दार्थ--शत जिह्वा=सौ जीभें। बाहुपाश=भुजाओं का बन्धन, आलिंगन। धनुषाकार=धनुष के आकार के समान अर्द्ध वृत्त।

भावार्थ—प्यार भरी इस उत्सुकता के बदले मुझे यह वेदना-पूर्ण उपहार मिलता था। यह मेरे जीवन पर सचमुच ही भीषण अत्याचार था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे घृणा अपनी सौ-सौ जिह्वाओं से जीवन को बार-बार डस रही है। भाव यह है कि उस आलिंगन और प्रत्यालिंगन ने जीवन को अत्यन्त घृणास्पद बना दिया था। वासना का वह रूप कितना थोथा था ? आँखों में छाई हुई प्रणय की मदिरा उन्हीं आँखों से आँसू बनकर टपकती थी। भुजाओं का वह दृढ़-बन्धन शक्ति हीन बनकर धनुष का रूप लेकर नीचे गिर जाता था। भाव यह है कि प्रणय के थोथे आनन्द के मूल में दुख ही निहित था। क्या इस जीवन के लिए यही उपहार है, जो क्षणिक और नश्वर है। जिसका आनंद वास्तविक न होकर तत्वहीन है। न मालूम क्यों इस संसार में दिखलाई पड़ने वाला सौन्दर्य फूल की भाँति क्षणिक है, जो एक दिन मुरझाकर धूल में मिल जाता है।

छविमय कहते ... कलुषित संसार।

शब्दार्थ--छविमय=सौन्दर्यमय। कलुषित=दूषित, पापी।

भावार्थ--नारी के इस रूप सौन्दर्य को जिसे तुम छविमान बतलाते हो, वह तो अनेक पापों का केन्द्र-विन्दु है। जिसे तुम प्रिय समझकर अपने गले का हार बनाए हुए हो वही तुम्हारे जीवन की हार है, जीवन के पतन का वास्तविक रूप है। अतएव इस थोथे सौन्दर्य से युक्त नारी का प्रणय-भाव जीवन का पुण्य नहीं है। यह तो जीवन के पापों से प्यार करना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कवि कहता है कि हे झूठे सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति नारी मुझे स्पर्श मत करना मेरे प्रति अपने झूठे प्यार का प्रदर्शन मत करना। मैं तो इस पापमय संसार को धूल के समान तुच्छ समझकर त्याग चुका हूं।

यह तुम्हारा हास आया

यह तुम्हारा उल्लास आया।

शब्दार्थ--हास=हास्य, प्रसन्नता। मधुमास=बसंत ऋतु। विचलित= अधीर होना। व्यथा=दुख। वेदना=दुख। व्यूह=घेरा। उज्ज्वल=प्रकाश। रश्मि=किरणें। उल्लास=हर्ष।

भावार्थ--शिशिर ऋतु के बिखरे हुए बादलों में यह जो बसंत ऋतु की मधुरिमा छा गई है, इसमें तुम्हारी प्रसन्नता का हास्य छिपा हुआ है। (कवि प्रकृति में असीम आत्मा की अज्ञात सत्ता का आभास पाता है। वसंतऋतु छा गई है, कवि सोचता है कि यह उसके असीम आत्मारूप प्रियतम की प्रसन्नता का प्रतीक है)।

अब तक आँखों से व्याकुल व्यथा के आँसू बह रहे थे। हृदय में उठती हुई सिसकियाँ पीड़ाओं के घेरे में लिपटी हुई थी। ऐसे वेदना और निराशा के अन्धकार में तुम्हारी उल्लास भरी प्रसन्नता का संदेश मुझे प्रकाशमान तीर की भाँति सूर्य की उज्ज्वल किरणों में प्राप्त हुआ।

आह! वह हास आया।

शब्दार्थ--प्रतिध्वनि=गूंज। क्षीण=दुर्बल।

भावार्थ -यह कोकिला मेरे विरह से व्याकुल हृदय को वेधकर क्यों रुदन कर रही है। कोकिल के उस विरह भरे रुदन की गूँज मेरे हृदय में क्षीण बनकर लुप्त हो गई है। परन्तु मेरे इस विरह ने मुझे तुम्हारे अधिक निकट बनाया है। भाव यह है कि तुमसे अलग रहकर मैं तुम्हारे सामीप्य के मूल्य को पहिचान सकी हूँ।

आज मुझे तुम्हारी प्रसन्नता का उल्लास प्राप्त हुआ है।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चट्टान

दृढ़ खड़ी स्वतन्त्र ।

शब्दार्थ- दृढ़=मज़बूत । अखण्ड=जो तोड़ी न जा सके । जड़=निश्चेष्ट, स्तब्ध । विषण्ण=विषाद भरी दुखी । भूमण्डल=संसार । वायुमण्डल=आकाश शून्यान्तर=शून्य हृदय । चपेट=कुचलकर । पिण्ड=ढेर । भूखण्ड=पृथ्वी । भू-कम्पों=पृथ्वी का हिलना । दुर्द्धष=प्रवल, प्रचंड । आदि सृष्टि=सृष्टि का प्रारम्भ ।

भावार्थ--कठोर, अटल और अखण्ड चट्टान तिरछे रूप में दृढ़ता के साथ खड़ी हुई है । वह उदास भाव से निस्तब्ध और निश्चेष्ट पड़ी हुई है । वह आकाश के शून्य हृदय को चीरती हुई निर्भीक भाव से इस पृथ्वी पर पर स्थित है । एक पहाड़ की भाँति झाड़ और झङ्खाड़ों को कुचलती हुई चट्टान भूमि पर बैठी हुई है । वह बिल्कुल शान्त है । वह ऐसी प्रतीत होती है मानो हज़ारों लाखों मन के वज़न का ढेर पृथ्वी को फाड़कर निकला हो । संसार में कितने ही प्रचंड भूकम्प आए, परन्तु उनकी प्रबल शक्तियाँ इस चट्टान का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकीं ।

सृष्टि के आदिकाल से, जब कि इस संसार के निर्माण का प्रारम्भ हुआ था, यह चट्टान भीषण और स्वतन्त्र रूप में खड़ी हुई है । वह नष्ट नहीं हो सकती क्योंकि उसे अमर जीवन का वरदान मिला हुआ है । परन्तु इस प्रकार अमर जीवन धारण कर हे चट्टान तू परिवर्त्तन के मार्ग में बाधक मत बन ।

वर्षाओं का आघात बीज ज्ञान ।

शब्दार्थ--आघात=चोट । भ्रांत=उन्मत्त । चामुण्डा=एक देवी का नाम है जिसने चंडमुंड नामक दैत्यों का बध किया था । प्रहारों=चोटों । चर-ध्वांत=राक्षस का नाम है । नान्त=जिसका अन्त न हो । केन्द्रित=घिरी हुई । दिग्कोण=दिशाओं के कोने । चतुर्भुजसी=चार भुजाओं वाली । महाशक्ति-सौन्दर्य=अत्यधिक शक्ति के सौन्दर्य से पूर्ण । अटलता=जो मिटाया न जा सके । विधान=रचना, निर्माण । बीज ज्ञान=किसी वस्तु के निर्माण की विधि से परिचित

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ--वर्षा और आँधी के तूफानों के थपेड़ों को सहकर भी जो निर्भीक और उन्मत्त भाव से उसी प्रकार खड़ी हुई है, जैसे चरध्वांत नामक राक्षस के प्रहारों में चामुंडा देवी निर्भीक भाव से स्थिर बनी रहीं। इस संसार के सभी पदार्थ शक्तिहीन बन चुके हैं, परन्तु यह चट्टान संसार की समस्त शक्ति को जिसका कोई अन्त नहीं है, अपने अन्दर समेटे हुए है। दिशाओं के कोनों के समान इसकी चौकोर भुजाएँ समस्त प्रदेशों पर अपना शासन करती हुई प्रतीत होती हैं। यह चट्टान शक्ति और विजय के महान सौन्दर्य से अभिभूत है। इसकी रचना अटल और अमिट है। उसका विनाश नहीं होगा। मैं अब तक जो मुरझाए हुए फूल के समान शक्ति से हीन बना हुआ था, अब इस चट्टान को देखकर शक्ति को प्राप्त करने की विधि से परिचित हो गया हूँ। भाव यह है कि इस चट्टान ने मुझे शक्तिशाली बनने की प्रेरणा प्रदान की है।

तेरी अटूट कोरों ... दुर्निवार।

शब्दार्थ--अटूट=जो टूटे नहीं। कोरों=कोनों। नयन कोर=दृष्टि। उदारता=विशालता, विस्तृतता। नयन छोर=आँखों की निगाहें। सुदृढ़=मजबूत। भावना की हिलोरें=विचारधाराएँ। दृढ़ता विभोर=दृढ़ता में डूबा हुआ। क्लैव्य=नपुंसकता। शिलाखण्ड=चट्टान। दुर्निवार=जिसका निवारण नहीं किया जा सकता।

भावार्थ---हे चट्टान, मेरी आखें तेरे इन अटूट कोणों में उलझ गई हैं। जहाँ तक मेरे नेत्र जाते हैं, वहाँ आकाश तक तू फैली हुई है। तेरी दृढ़ता ने आज मेरे हृदय की विचारधाराओं को दृढ़ता से भर दिया है। तेरी अखण्डता को देखकर मेरा हृदय दृढ़ता में डूब गया है। अब मेरा जीवन पराजित नहीं होगा। उसकी हीनता नष्ट हो गई है। वह अब नपुंसक और कायर नहीं रहा। अब यह मेरा जीवन हार का मुंह नहीं देखेगा। हे शिलाखण्ड, अब मैं भी कठोर भाग्य की भाँति शक्तिशाली बन गया हूं।

हाँ, एक बात! ... पी गया आप?

शब्दार्थ—सिसक रही=रो रही। अभिशाप शप्त=अभिशाप से शापित। अहल्या=अहल्या गौतम ऋषि की पत्नी थी। सिक्ति=भीगी हुई। तप्त=गरम, उष्ण। वीतराग=वैराग्य। किरण सप्त=सात किरणें। विराग=चाह का न होना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विलप्त=लिप्त, लीन । क्रन्दन=रुदन, रोना । व्यथित=दुखी ।

भावार्थ—हे चट्टान क्या तेरे हृदय में किसी के अभिशाप से शापित जीवन सिसक रहा है । हे अहिल्या नारी तू शाप के ताप से सिक्त कहाँ छिपी हुई है ? क्या तनिक से वैराग्य के आगे प्रेम का महान स्वरूप झुक गया, जिसके कारण वैरागी गौतम ने अपनी सुन्दरी पत्नी अहिल्या को त्याग दिया । उस निर्दय वैराग्य में उस नारी के हृदय की व्यथित भावनाएँ छिपी हुई हैं । यह चट्टान भी उस निर्दय वैराग्य की भाँति कठोर है, जिसमें कि ऐसे नारी हृदय छिपे हुए हैं, जो कि दुखों से आंदोलित हुए हैं ।

कवि कहता है कि यह शिला संसार के व्यथित पाप का रूप बनी हुई है । न मालूम किसका रुदन और किसकी विरक्ति इसमें छिपी हुई हैं । इसने शिला रूप बनकर एक नारी के वेदनापूर्ण आँसुओं को अपने हृदय में छिपा लिया है । भाव यह है कि नारी के द्रवित आँसुओं का भी इस शिला पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

प्रातः बेला का .... ही अकाम ।

शब्दार्थ—प्रातः वेला=प्रातःकाल का समय । भ्रम = धोका । मुनि = गौतम ऋषि । नियमित क्रम = प्रतिदिन की दिनचर्या । विद्रोही=विरोधी । क्रूर=निष्ठुर । विषम=जिसमें समानता न हो । विधि=भाग्य । गुरु=भारी । निर्जन=जन रहित । निद्रित=सोया हुआ । तम=अँधेरा । अधम=नीच, पापी । मदन=कामदेव । हृदय थाम=हृदय को शांत बना । वंचिता = ठगी गई । अकाम=कामना रहित ।

भावार्थ—गौतमऋषि की पत्नी अहिल्या का इन्द्र द्वारा जो धोके से सतीत्व भंग गया किया तथा गौतम ऋषि द्वारा जो शाप दिया गया, इसमें गौतम ऋषि द्वारा रात्रिकाल को धोके से प्रातःकाल समझ बैठना, अपने नियमित दिनचर्या के अनुसार गंगा स्नान को जाना, तथा अहल्या के अनुपम सौंदर्य से युक्त शरीर, आदि जो तीनों तत्व जिन्होंने इस घटना को जन्म दिया, परस्पर बड़े विरोधी और असमान थे । उस नारी के सतीत्व के विरुद्ध नियति ने बड़े भारी षडयन्त्र की रचना की थी । उस निर्जन एकांत स्थल में जबकि वातावरण में चारों ओर शान्ति थी, ऐसा प्रतीत होता था मानो रात्रि का अंधकार शांत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाव से सोया हुआ हो, एक नीच पापी ने नारी के यौवन में अपनी सुधि विसार कर अहिल्या के साथ अपनी काम-पिपासा शांत की। हे गौतम इस घटना को लेकर तू अहिल्या पर क्षुब्ध मत बन। अपने हृदय को शांत रख। क्रोध में पागल बनकर अहल्या को शाप मत दे। पहले यह तो समझ कि वास्तव में अपराध किसका है? अहिल्या वास्तविक अपराधिनी नहीं है। वह तो तुम्हारी दया की पात्रा है। उसे तो ठगा गया है। वह तो कामना रहित निष्पाप नारी थी।

पर टेढ़ा सा
जोड़ जोड़।

शब्दार्थ—पाषाण रूप=शिला के रूप। माप=तौल। मौन रुदन=मन ही मन शान्त भाव से रोना। चिर विलाप=सदैव रोते रहना। विधि विधान=भाग्य की रचना। ताप=उष्णता, क्रोध। आघातों=प्रहारों, चोटों। हिम=वर्फ। कुंठित=बेकाम निकम्मा। कंकालों=हड्डियों का ढाँचा।

भावार्थ-फिर भी गौतम ने कोई विचार नहीं किया। अहिल्या को उन्होंने शाप दे ही डाला। अहिल्या का शरीर शिला रूप बन गया। वह शाप इस कठोर चट्टान के रूप में प्रगट हो ही गया। ऐसा प्रतीत होता है मानो चट्टान किसी के अपराधों की माप करने वाली बन गई है। यह चट्टान निष्ठुरता की प्रतीक है, क्योंकि इसके अन्दर किसी नारी की मौन सिसकियाँ चिर विलाप का रूप लेकर छिपी हुई हैं। केवल शाप ने ही उस नारी के जीवन को दुखमय नहीं बनाया वरन् नियत के विधान ने भी उस पर और अत्याचार किए हैं। शिला के रूप में उस नारी का शरीर सूर्य की गर्मी से प्रतिदिन तपता रहता है। वर्षा प्रहारों से उसी शिला को नष्ट भ्रष्ट करती है। गिरती हुई वर्फ उस शिला रूप नारी कंकाल के प्रत्येक अङ्ग को कुण्ठित बना रही है।

कोमलता की
परिव्याप्त आग।

शब्दार्थ—प्रतिहिंसा=बदला चुकाना। निष्ठुरता=कठोरता। अतिशय=बहुत अधिक। प्रचण्ड=कठोर। हिमोपल=वर्फीली चट्टानें। अंश=भाग। परिव्याप्त=चारों ओर फैली हुई।

भावार्थ—यह जो मेरे सम्मुख चट्टान है, यह नारी की कोमल भावनाओं की प्रतिहिंसा का रूप है। यह जो अत्यन्त कठोर चट्टान है, वह प्रगट करती है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि किस प्रकार निवलता निष्ठुरता में परिवर्तित हो जाती है।

चट्टान पर वर्षा का भीषण आक्रमण होता है। बर्फीली चट्टानों के टुकड़े इस पर गिरते हैं। परन्तु चट्टान पर गिरते ही गल जाते हैं। मानो वे अपने कृत्यों का स्वयं ही दंड भुगत रहे हों। आज इस चट्टान का प्रत्येक भाग सजीव और जागृत है। वास्तविक रूप में न तो यह चट्टान अंश मात्र के लिए रोती ही है और न इसमें आग फैली हुई है।

क्या इसमें है   सी विषण्ण।

शब्दार्थ—परिव्याप्त=फैली हुई। दृढ़=कठोर। झाग=फेन, झाग निकलना=थकना, हिम्मत हारना। दाग=निशान। जड़=निश्चेष्ट, स्तब्ध। विषण्ण=विषाद भरी, दुखी।

भावार्थ—परन्तु क्या इस चट्टान में आग व्याप्त है, तो मुझ में भी अब विद्रोह की आग जाग उठी है। चट्टान की भांति अब मैं भी दृढ़ हूँ। कठिनाइयों के समुद्र यदि मुझसे टकरायेंगे तो झाग डाल कर मेरी शक्ति के सम्मुख झुक जायगें। (समुद्र की लहरें जब चट्टान से टकराती हैं तब वे झाग से भर जाती हैं।) चट्टान की भांति मैं अचल और अखंड हूँ। कायरता कोई चिह्न अब मेरे जीवन पर दृष्टि गत नहीं होता, चाहे इस बात को संसार की कोई प्राणी आकर देख ले। मैंने जो कठोर प्रण किया है उसकी प्रेरणा शक्ति से मैं चिर वर्षों तक कठोर बना रहूंगा।

कठोर अटल और अखंड चट्टान तिरछे रूप में दृढ़ता के साथ खड़ी हुई है। वह उदास भाव से निस्तब्ध और निश्चेष्ट पड़ी हुई है।

साधना-संगीत

आज मेरी   बन जाय।

शब्दार्थ—गति=जीवन की गति। रंजित=रंगा हुआ। धूम=धुआँ। शिखा=दीपक की लौ। स्थिर=शान्त। निष्कं=जो कंपन रहित हो। ज्वाला=आग। दीप्ति=चमक। चित्र-लेखा=चित्र बनाने की कूंची। भारती=वाणी, वचन।

भावार्थ—हे प्रियतम मेरे जीवन की गति आरती बनकर तुम्हारी आरा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धना करे। ज्यों ज्यों आरती रूप में मेरी पूजा का थाल घूमे त्यों २ प्रकाशवान क्षितिज के रूप में तुम्हारी असीम सत्ता मेरे निकट खिंचती चली आए। आरती के धूँए के रूप में हे प्रियतम मेरे और तुम्हारे बीच का अन्धकार नष्ट हो जाए।

हे प्रियतम तुम्हारी आराधना में मेरे प्राणों के दीप बिल्कुल शान्त और स्थिर बने रहें जिससे कि तुम्हारी आराधना भंग न हो। मेरा हृदय ही तुम्हारी आराधना के आरती दीपों की आग बने और इनका प्रकाश मेरा हास्य हो। मेरी सांसों के स्वर में तुम्हारी विनय और पूजा के गीत गूँज उठे। हे प्रियतम मेरे जीवन की गति आरती बन कर तुम्हारी आराधना करे।

यह हंसी मन्दिर ... बन जाय।

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—मेरे प्राणों का हास्य तुम्हारा मन्दिर हो, जिसके द्वार मेरी मुस्कान के क्षण हों। उस मन्दिर में मैं तुमसे मिलूँ या तुम मुझ से मिलो इसकी मुझे चिंता नहीं है परन्तु मैं तो अपनी पूजा के हारों को तुम्हारे प्रति समर्पित करना चाहता हूँ।

मेरे शरीर के बंधन ही मेरी मुक्ति का साधन है। इसलिये हे प्रियतम तुमसे मिलने के लिए इस बन्धन को त्यागने की क्या आवश्यकता है ? हे मेरे इष्टदेव तुम्हीं क्यों नहीं मेरे इन प्राणों के बन्धन में बस जाते हो। यह मेरे प्राण वंशी का रूप लेकर बार बार हे प्रियतम तुम्हें पुकारें।

हे प्रियतम मेरे जीवन की गति आरती बन कर तुम्हारी आराधना करे।

विश्ववंद्य बापू

क्रिया शील ... के हाथ।

शब्दार्थ—क्रिया शील=कार्य में रत, कर्मनिष्ठ। मृदुतम=अत्यन्त कोमल। साधना=तपस्या। सिद्ध=साधना के द्वारा प्राप्त होने वाला अलौकिक फल। अभ्युत्थान=उदय, उत्पत्ति। विश्वताप=विश्व का दुख दैन्य। अनुभूति=अनुभव। प्रदीप=दीपक।

भावार्थ—हे बापू तुम्हारे कठोर कार्य में रत कर्मनष्ठि हाथ हैं, चेहरे पर करुणा और ममता की मधुरतम मुस्कान छाई हुई है। वह मुस्कान ऐसी प्रतीत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है मानो कठिन तपस्या के उपरांत सिद्धि रूपमें कोई अलौकिक विभूति प्राप्त हुई हो। तुम्हारा व्यक्तित्व इतना तेजस्वी है कि उसमें सौ २ सूर्यों के उदय का प्रकाश समाया हुआ है। तुम्हारे जीवन मंत्र ने अभिशाप रूप संसार के अमंगल कारी स्वरूप को भी सुख और शान्ति के कल्याणकारी वरदानों में बदल दिया है। तुम्हारा स्वर आज विश्व की वेदना पूर्ण आर्त्त क्रन्दन, दुख, दैन्य और निराशा का प्रतीक बना हुआ है। तुम्हारे स्वर में विश्व का दुख से दग्ध हृदय बोल रहा है। हे बापू तुम पराधीन भारत के हाथ में स्वतंत्रता की मशाल बन कर आए हो।

ये सब जैसे हैं स्वर्ण पराग।

शब्दार्थ—विभूतियाँ=सम्पदाएँ। अनुराग=प्रेम। सज्जित करने=सजा ने वैभव=ऐश्वर्य। स्वप्नावसान=सपनों का अन्त। विश्व संपदा=संसार का वैभव। पदवन्दन=पैरों की पूजा के लिए। स्वर्ण पराग=सोने का पराग।

भावार्थ—हे बापू तुम्हारे व्यक्तित्व की ये सब विशेषताएँ उन विभूतियों के समान हैं जो बड़े प्रेम के साथ तुम्हारे त्याग पूर्ण जीवन का शृङ्गार करने आई हैं। इन साँसारिक वैभवों का अन्त सपनों की भाँति क्षणिक है, तुम्हारे त्याग ने इसका ज्ञान संसार को प्रदान किया है। तुम्हारा यही त्याग आज सजीव बनकर विश्व जीवन के क्षण क्षण को सुखी बना रहा है। तुम्हारा त्याग इतना महान है कि उसके सामने संसार की समस्त संपदा, धन दौलत तुच्छ है। तुम्हारे चरणों की वन्दना में सोने का पराग भी क्षुद्र है, वह कोई महत्व नहीं रखता।

कर्म योग के साधक सारा संसार।

शब्दार्थ—कर्म योग=पवित्र कार्यों में रत। साधक=साधना करने वाले। विश्ववंद्य=संसार द्वारा पूजित। लघु संकेत=तनिक इशारा मात्र।

भावार्थ—हे बापू तुम कर्म योग की साधना करने वाले हो। निर्बल जनों की शक्ति हो। उनके एक मात्र सहारे हो तुम्हारा नाम आज असंख्य कंठों में गूँज रहा है। हे समस्त संसार द्वारा पूजनीय बापू तुमने निष्प्राणों को भी जीवन दान दिया है। जो मृतप्राय बन चुके थे उन्हें नए जीवन का संदेश दिया है। हे बापू केवल तुम्हीं वह व्यक्ति हो जिन्होंने अपने ही हाथों दुख और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दैन्य से प्रपीड़ित जीवन की नींव पर स्वस्थ औा सर्वाङ्ग सुन्दर नए जीवन का निर्माण किया है। संसार के जीवन की गति अवरुद्ध और जड़ बन चुकी थी। तुमने उसे जीवन की नई वाणी प्रदान की। विश्व जीवन के मुंदे छेदों में नए जीवन का संगीत भरा। तुम्हारे तनिक से संकेत मात्र पर सारा संसार नए जीवन रस से अनुप्राणित हो उठा।

बापू तुमको

तुम आशीर्वाद।

शब्दार्थ—आकार=रूप।

भावार्थ—हे बापू तुम जैसी महान विभूतिको पाकर इस युग का इतिहास सौभाग्यान्वित बना है। आज तुम्हारे हाथों किए जाने वाले महान कार्य आने वाले भविष्य का निर्माण करेंगे। जिस मार्ग पर हे बापू तुम चल रहे हो, उस मार्ग पर ही भारत को स्वतंत्रता के मंगलमय स्वरूप के दर्शन होंगे। हे बापू तुम्हारे नेतृत्व में इस भारत भूमि पर चारों ओर स्वाधीनता की विजय के वीरोचितगीत सुनाई पड़ रहे हैं। हे बापू हमें अपना शुभ आशीर्वाद प्रदान करो। स्वाधीनता अब प्राप्त होने ही वाली है, विजय सामने खड़ी हमारा पथ निहार रही है।

श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

पराजय गीत

आज खड़ग की

तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—खड़ग=तलवार। कुंठित=बे काम। तूणीर=तरकस। लक्ष्य-भ्रष्ट=जिसका निशाना चूक गया हो। अस्तव्यस्त हुई=इधर उधर बिखर गई। त्रस्त=भयभीत, दुखी। गरिमा=गौरव। संन्यस्त=जिसने सन्यास ले लिया हो। गतिधीर=जिसकी गति शांत बन चुकी हो।

भावार्थ—आज मेरी तलवार की धार भौंथरी हो गई है। तरकस खाली हो गया है। चलाए गए तीर अपने लक्ष्य पर न लगकर, इधर-उधर गिर रहे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। विजय की पताका नीचे झुक गई है। आगे बढ़ती हुई सेना की पंक्तियाँ अचानक इधर-उधर बिखर गई हैं। गौरवपूर्ण भावों से भरा हमारा हृदय अत्यंत भयभीत बन गया है। जिस प्रकार सन्यासी सांसारिक माया जाल से पूर्णतः विरक्ति धारण कर लेता है, उसी प्रकार हमारी समस्त महिमा ने हमसे नाता तोड़ लिया है। मेरे कृत्यों के इतिहास में अब कोई महत्व नहीं रह गया है, क्योंकि मेरी प्रगति रुक गई है। इसीलिए इतिहास के पन्नों में मेरा वर्णन नहीं किया जाय।

आज मेरी तलवार की धार भौंथरी और तरकस खाली हो गया।

मैं हूँ विजित तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—विजित=जो जीत लिया गया हो। संघर्षण=रगड़। घटिका=समय, घड़ी। हिय=हृदय। दुलार=प्यार। अँगुलीय=अँगूठी। मरकत=रत्न। नवनग=नया नगीना। मम मनुआ=मेरा मन। कलकीर=सुन्दर तोता।

भावार्थ—मैं आज पराजित हूं। अपनी पराजय को भला मैं किस प्रकार भुला सकता हूं। विजय की अभिलाषा मेरे हृदय में छिपी हुई है। जिस प्रकार माँ की गोद में अपने बालक का प्यार समा जाता है, जिस प्रकार अंगुली में अंगूठी के रत्न में सुन्दर नगीना जड़ा हुआ रहता है, उसी प्रकार विजय के लिए किए गए संघर्ष की याद मेरे हृदय में बस गई है। मेरा मन आज तोते की भाँति 'विजय'-'विजय' रट रहा है।

आज मेरे खड्ग की धार कुंठित और तरकस खाली हो गया है।

गगन भेदकर तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—भेद कर=चीर कर। वरद करों=वर देने वाले हाथ। विजय-प्रसाद=विजय का उपहार। स्मृति दीप-शिखा=विगत स्मृति रूपी प्रकाश। कालान्तर=कुछ समय उपरांत। कृष्ण आवरण=काला आच्छादन, काला पर्दा। गलित=गलना। गुरुता=भारीपन। निष्प्रभा=प्रभा हीन, प्रकाश हीन। जीर्ण=पुराना।

भावार्थ—मेरे पूर्वजों ने अपने वरदायक करों से विजय का जो उपहार प्रदान किया था, उसके बल पर किसी समय मैंने सारे संसार को विजित बनाया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

था। परन्तु उस विजय की स्मृति अब तो टिमटिमाती हुई दीप-शिखा की भाँति धुंधली पड़ चुकी है। कालांतर में तो विजय का वह प्रकाश पराजय और निराशा के काले अंधकार में डूब गया है। हमारा गौरव नष्ट हो चुका है। हमारा महान और तेजस्वी व्यक्तित्व कांतिहीन और जर्जर बन गया है। आज तलवार की धार कुंद है और तरकस खाली हो गया है।

एक सहस्र ... तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—गतयुग=बीता हुआ काल। गुम्फित=उलझे हुए। मनकों=मोतियों। हेर रहा=देख रहा। मुद्रा=रंग-ढंग, चेष्टा। ज्वलंत=जलता हुआ। क्रोधानल=क्रोध की अग्नि। दैन्य=दीनता।

भावार्थ—मैं आज हज़ार वर्ष पूर्व की बातें सोच रहा हूँ। उन मोतियों की भाँति पिरोए हुए समृद्धिशाली युगों के चित्रों को मैं बार-बार देख रहा हूँ। भाग्य के चक्र की गति को, जिसने हमारे गौरवशाली युगों को आज दैन्य और निराशा से भरे समय में बदल दिया है, देखता जाता हूँ। आज तो मैं जिधर देखता हूँ उधर ही पराजय दिखलाई पड़ती है। जिन आँखों में शत्रु के प्रति किसी दिन क्रोध की आग जला करती थी उन्हीं आँखों में आज कायरता के दीन आँसू भर गए हैं।

आज तलवार की धार कुंद पड़ गई है और तरकस खाली हो गया है।

विजय सूर्य ... तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—कुटिल=कपटी, टेढ़ा। रुग्णा=रोगी।

भावार्थ—विजय का सूर्य डूब चुका है। अब तो चारों ओर अंधेरा छा गया है। इस अन्धकार में सम्भव है यह विजयी कुटिल समाज हमारा पराजित मुंह नहीं देख सके, जिससे हमारी पराजय की लज्जा छिप जाय। अपने इस पराजित मुख को हम अपनी प्यारी माँ के अंचल में भी तो नहीं छिपा सकते। क्योंकि माँ (भारत माँ से अभिप्राय है) का अंचल तो पहले ही फट चुका है। माँ अपने वस्त्रों से आज रहित है। वह आज अधनंगी और रोगी है। भला मुझ जैसे कपूत की माँ के पास अपनी लाज छिपाने के साधन हो ही कहाँ सकते हैं? अपने इस पराजित मुख को कहाँ छिपाऊँ? अपना विजयधन खोकर मैं आज भिखारी तुल्य बन गया हूँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज मेरी तलवार की धार भौंथरी हो गई है और तरकस खाली हो गया है।

जहाँ विजय के तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—पिपासार्त्त=प्यास से व्याकुल। ओट=आड़। जूझ कर=लड़कर मरना। निधि=खजाना। श्वान=कुत्ते। लपक रहे=झपट रहे। विजित=जो जीत लिया गया है। कर्कश स्वर=कठोर आवाज।

भावार्थ—जिस स्थान पर विजय की प्यास हृदय में लिए कई जन आंखों से ओझल बन गए। विजय के लिए जहाँ अनेकों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए उसी स्थान पर अपनी विजय निधि से रहित संध्या काल में मैं बैठा हुआ हूं। उस स्थान पर अनेक स्यार, गीदड़ और कुत्ते लपक लपक कर दौड़ रहे हैं।

उस पराजय से भरी संध्या में हार का कठोर स्वर गम्भीर बन गया था। आज तलवार की धार कुन्द पड़ गई है और तरकस खाली हो गया है।

रग रग में तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—रग-रग में=नस-नस में। उष्णता=गर्मी। टीसें=दर्द। प्रांगण=आँगन। बटोरें=समेट कर। हिय=हृदय।

भावार्थ—आज नसों में दोड़ते हुए खून की गर्मी शांत हो गई है। जोश ठंडा पड़ गया है। नसों का खून जैसे ठंडा पानी हो गया है। विजय की आशा अब बहुत दूर हो गई है। शरीर में अब कोई उत्साह नहीं रह गया है। उसकी नस नस में पीड़ा उठ रही है। रण के क्षेत्र में से मैं विजय नहीं वरन् पराजय की धूल समेट कर लाया हूँ। मेरी सैनिक वेशभूषा के वस्त्र चिथड़े चिथड़े हो गए हैं, उनके नीचे मेरे हृदय पर अनेक घावों के चिह्न बने हुए हैं। मेरे अस्त्र टूट गए हैं। रण क्षेत्र में मस्तक धूल से भर गया है। हाय मैं कैसा वीर हूँ।

आज मेरे खड्ग की धार कुंद पड़ गई है और तरकश खाली हो गया है।

वर्दी फटी तूणीर हुआ।

शब्दार्थ—कारिख=कालिख। पंकिल=कीचड़। मेदनी=पृथ्वी। हन्त=खेद सूचक शब्द। द्रुपद सुता=द्रौपदी। चीर=वस्त्र।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—वर्दी फट गई है। रण के घावों से हृदय घायल हो गया है। मुख पर पराजय की कालिमा पुती हुई है। अजीव वेश बन गया है। आंखें शर्म से झुकी जा रही है। सारा देश कायरता की कीचड़ से सन गया है, अर्थात् सारा देश कायरता से भर गया है।

ओह ! पराजित रण चंडी के कायर कपूत यहाँ से दूर हो जा। यही ध्वनि मुझे चारों ओर सुनाई पड़ रही है। ऐ माँ अभी समय है। मुझ जैसे कायर कपूत को देखने से पहले तू पृथ्वी से कह दे कि वह फट जाय, जिससे कि तू कायर जीवन को बिताने की अपेक्षा उसमें विलीन हो जाय। हाय यह पराजय का गीत तो बहुत लम्बा हो गया है। द्रोपदी के चीर की भाँति इसका अन्त ही नहीं हो रहा।

आज मेरे खड्ग की धार कुंठित हो गई है, और तरकस खाली हो गया है।

सुश्री सुभद्रा कुमारी चौहान

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल .... रानी थी।

शब्दार्थ—भृकुटी तानी=रोष से भौंहें टेढ़ी की। फिरंगी=अंग्रेज। हरबोलों=भाटों।

भावार्थ—भारतीय राजाओं में हल चल मच गई। क्रोध से उनकी भृकुटी तन गई थी। ऐसा प्रतीत होता था मानो वृद्ध भारतवर्ष की सूखी नसों में यौवन का नया ज्वार आ गया हो। पराधीन होने के उपरान्त उन्होंने स्वतंत्रता के मूल्य को जान लिया था कि स्वतन्त्रता खो देने पर किस दुर्दशा का सामना करना पड़ता है। इसलिए अंग्रेजों को भारत से हटा कर अपने देश को स्वाधीन बनाने का सबने निश्चय कर लिया था।

सन् अठारह सौ सत्तावन में भारत की वह तलवार पुनः चमक उठी जिसने कि एक बार देश पर आक्रमण करने वाले विदेशियों के दांत खट्टे किए थे।

 CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुंदेल हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की कहानी सुनी थी, जिसमें कि उसने स्वाधीनता के युद्ध में एक वीर पुरुष की भाँति बड़ी वीरता से युद्ध किया था।

कानपुर के नाना .... वाली रानी थी।

शब्दार्थ—मुंह बोली=प्रिय।

भावार्थ—लक्ष्मी बाई को कानपुर के नाना साहब अपनी प्रिय बहन के समान समझते थे। उसका बचपन का नाम छबीली था। लक्ष्मीबाई नाना के साथ ही पढ़ती थी और उनके साथ ही खेला कूदा करती थी। बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी आदि विविध अस्त्र शस्त्र उनके पास सदैव सहेलियों की भांति साथ रहते थे। वीर शिवाजी के जीवन की वीरोचित कहानियाँ उसे खूब याद थीं।

हमने बुन्देले हरबोलों के मुंह से रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी थी जिसने स्वाधीनता के युद्ध में एक वीर पुरुष की भाँति बड़ी वीरता से युद्ध किया था।

लक्ष्मी थी या .... रानी थी।

शब्दार्थ—पुलकित=प्रसन्न। खिलवार=खेल। आराध्य भवानी=भवानी रूप इष्टदेवी जिसकी आराधना की जाती हो।

भावार्थ—लक्ष्मीबाई वीरता में दुर्गा की अवतार जान पड़ती थीं। उसकी तलवारों के वारों को देखकर मराठे खुशी से फूल उठते थे। विविध प्रकार के व्यूह बनाकर नकली युद्ध करना, खूब शिकार खेलना, किलों को तोड़ना और सेनाओं पर घेरा डालना, रानी लक्ष्मीबाई के प्रिय खेल थे। महाराष्ट्र कुल की आराध्य देवी भवानी ही रानी लक्ष्मीबाई की इष्टदेवी थीं।

बुन्देल खंड के हरबोलों द्वारा हमने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की कहानी सुनी थी कि स्वाधीनता के युद्ध में उसने वीर पुरुष की भांति बड़ी वीरता से युद्ध किया था।

हुई वीरता के .... रानी थी।

शब्दार्थ—सुभट=वीर योद्धा। विरुदावलि=किसी के प्रताप, आक्रमण, यश का वर्णन। चित्रा = अर्जुन की पत्नी का नाम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—रानी लक्ष्मी बाई की सगाई झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हो गई। रानी के पास अपनी उत्कट वीरता के वैभव की धरोहर थी। कुछ समय उपरांत लक्ष्मीबाई का विवाह हो गया और वे रानी बनकर झाँसी में आ गईं। झाँसी के राजमहल में विवाह की बधाइयाँ बजने लगीं, और झाँसी नगर खुशियों से भर गया। झाँसी की रानी बनकर लक्ष्मीबाई ऐसी शोभित हुईं मानों पराक्रमी योद्धा बुन्देलों के यश की कहानी ही लक्ष्मीबाई का रूप लेकर झाँसी में आ गई हो। रानी लक्ष्मीबाई ने राजा गंगाधर राव को पति रूप में उसी प्रकार वरण किया जिस प्रकार चित्रा ने अर्जुन को और पार्वती ने शङ्कर को पति रूप में प्राप्त किया था।

बुन्देलखण्ड के हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी थी। जिसमें रानी लक्ष्मीबाई ने एक वीर पुरुष की भाँति स्वाधीनता के युद्ध में बड़ी वीरता और शौर्य प्रकट किया था।

रानी थी।

उदित हुआ

शब्दार्थ—उदित हुआ=उदय हुआ, उत्पन्न हुआ। मुदित=प्रसन्न। विधि=भाग्य, ब्रह्मा।

भावार्थ—रानी लक्ष्मीबाई के आने से मानो झाँसी के सौभाग्य का उदय हुआ हो। झाँसी के राजमहल रानी को पाकर हर्ष के उजाले से भर गए। परन्तु नियति का चक्र धीरे-धीरे दुर्भाग्य की काली घटाएँ राजमहल पर घेर लाया। झाँसी के सुख और आनन्द से भरे क्षण सहसा दुख में बदल गए। रानी के हाथ तो तीर चलाने में प्रवीण थे। फिर भला उन्हें चूड़ियाँ क्योंकर प्रिय मालूम देतीं। कुछ ही समय बाद राजा गंगाधर राव के स्वर्गवास हो जाने के कारण रानी लक्ष्मीबाई विधवा हो गईं। विधि को भी रानी के जीवन पर तरस नहीं आया। (रानी केवल २३ वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो गई थीं)। मृत्यु को प्राप्त राजा निःसन्तान थे। रानी दुख के गहन समुद्र में डूब गईं।

बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने कहानी सुनी थी कि रानी लक्ष्मीबाई ने सन् सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम में बड़ी वीरता प्रकट की थी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रानी थी।

बुझा दीप

शब्दार्थ—डलहौजी=उस समय का अँग्रेज गवर्नर। लावारिश=जिसका कोई उत्तराधिकारी नहीं हो। वारिस=उत्तराधिकारी। अश्रु पूर्ण=आँसुओं से भरा हुआ। विरानी=उजड़ी हुई।

भावार्थ—यह जानकर कि झाँसी के राजा की मृत्यु हो गई, डलहौजी मन में अत्यन्त प्रसन्न हुआ। झाँसी राज्य को अपने अधिकार में करने का उसने यह बहुत ही सुन्दर अवसर समझा। तुरन्त ही उसने अपनी सेनाएं भेजकर झाँसी के दुर्ग पर ब्रिटिश राज्य का झण्डा फहरा दिया। इस प्रकार झाँसी को उसने अपने अधिकार में ले लिया। झाँसी राजा के निःसन्तान मर जाने के कारण झाँसी के राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं था। तब ब्रिटिश राज्य ने झाँसी के राज्य का स्वयं उत्तराधिकारी बनकर उसका शासन अपने हाथों में ले लिया। रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी आँसुओं से भरी आँखों से देखा कि झाँसी उजड़ रही थी।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन-गाथा सुनी थी कि उन्होंने सन् सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम में एक वीर पुरुष की भाँति बड़ी वीरता से युद्ध किया था।

रानी थी।

अनुनय विनय

शब्दार्थ—अनुनय=प्रार्थना। माया=छल, कपट। काया पलटना=रूप बदलना।

भावार्थ—ब्रिटिश शासकों का विकट छल भला न्याय से भरी अनुनय-विनय कैसे सुन सकता था? ब्रिटिश शासकों से की गई रानी की प्रार्थना व्यर्थ हुई। जो अंग्रेज लोग भारत में व्यापारी बनकर आए थे। भारतीय राजाओं की दया पर जो पलते थे, उनसे ही न्याय की भीख माँगनी पड़ी। भारत में अंग्रेजों का राज्य जमाने के लिए डलहौजी इधर उधर हाथ-पैर फैलाने लगा। अंग्रेजों की स्थिति एकदम बदल गई। व्यापारी कहे जाने वाले अंग्रेज देश के शासक बनने लगे। भारत के अन्य राजाओं और नवाबों का भी डलहौजी ने पूर्णतः तिरस्कार किया। रानी लक्ष्मीबाई जो किसी दिन झाँसी की महारानी थी, उन्हीं झाँसी के राजमहलों में वह दासी के समान रहने लगीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन कहानी सुनी थी कि उन्होंने भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में बड़ी वीरता और पराक्रम के साथ बड़ा भीषण युद्ध किया था।

छिनी राजधानी   रानी थी।

शब्दार्थ—बातोंबात में=तुरन्त ही। घात=पतन। बिसात=शक्ति, ताकत। वज्र निपात=वज्र गिरना।

भावार्थ—देश की राजधानी देहली को अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले लिया। लखनऊ तुरंत ही उनके हाथों में आ गया। पेशवा को बिठूर में कैदी बना लिया गया। नागपुर का भी पतन हो गया। उदयपुर, तंजोर, सतारा, करनाटक आदि रियासतों की अंग्रेजों के सामने भला क्या चलती? जब कि सिन्ध, पंजाब और ब्रह्म पर अंग्रेजों की दासता का वज्र टूट चुका था। बंगाल और मद्रास की भी यही कहानी थी। वे भी अंग्रेजों के अधिकार में आ चुके थे।

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी थी कि सन् सत्तावन के युद्ध में उन्होंने एक वीर पुरुष की भाँति अपने अनुपम शौर्य का प्रदर्शन किया था।

रानी रोई   रानी थी।

शब्दार्थ—ग़म=दुख। बेजार=दुखी। सरे आम=सर्वत्र, खुले रूप में।

भावार्थ—इन अनहोनी घटनाओं से भारतीय राजाओं और नवाबों पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। भारतीय रानियाँ रनिवासों में अपने भाग्य पर आँसू बहाने लगीं। भारत की बेगमें दुख से व्याकुल बन गईं। उनकी धन-दौलत अंग्रेजों द्वारा लूट ली गई और गहने-कपड़े आदि लूट का सामान अंग्रेजों द्वारा कलकत्ते के बाजारों में बिकने लगा। अंग्रेजों के अखबार सर्वत्र खुले रूप में नीलाम के विज्ञापन छापने लगे कि नागपुर के जेवर और लखनऊ के नौलखे हार खरीदो। इस प्रकार परदे के भीतर छिपी रहने वाली भारतीय रानियों और बेगमों की इज्जत विदेशियों के हाथ संसार के बाजार में बिकने लगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की कहानी सुनी थी जिन्होंने कि भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में वीर पुरुष की भाँति अद्भुत वीरता से युद्ध किया था।

कुटियों में थी ... रानी थी।

शब्दार्थ—विषम=कठोर। आहत=घायल। पुरखों=पूर्वजों। बहन छबीली =रानी लक्ष्मीबाई। प्रकट=खुले रूप में। आह्वान=बुलाना।

भावार्थ—उस समय निर्धन और अमीर सभी दुख से व्याकुल थे। निर्धनों की झोंपड़ियों में दुख छाया हुआ था। महलों में राजाओं की घायल इज्जत तड़प रही थी। स्वाधीनता के मतवाले वीर सैनिकों के हृदय में अपने पूर्वजों के वीरोचित कृत्यों का गौरव भरा हुआ था। पेशवा धूँधूँ पन्त स्वाधीनता की समस्त तैयारियाँ कर रहा था। उसी समय रानी लक्ष्मीबाई ने युद्ध की देवी को खुला निमंत्रण देकर अँग्रेजों से भीषण संग्राम छेड़ दिया। स्वतन्त्रता का यज्ञ प्रारम्भ हो गया। इस यज्ञ के द्वारा उन्हें भारत की बुझी हुई स्वतन्त्रता की ज्योति फिर से जगानी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन कहानी सुनी थी कि सन् सत्तावन के स्वाधीनता संग्राम में उन्होंने एक पराक्रमी योद्धा की भाँति भीषण युद्ध किया था।

महलों ने दी आग ... रानी थी।

शब्दार्थ—अन्तरतम=हृदय के भीतर से। चेती=सावधान होना। भारी धूम मचाना=भारी हलचल मचाना। उकसानी=उभाड़ना।

भावार्थ—स्वतन्त्रता की ज्योति को जलाने के लिए महलों में आग और झोंपड़िओं में ज्वालाएं सुलगने लगीं। अर्थात् स्वतन्त्रता के लिए निर्धन-धनी सभी ने बलिदान किया। स्वतंत्रता की यह चिनगारी लोगों के हृदय से निकली थीं अर्थात् सारा देश प्राण-पण से इस स्वाधीनता के युद्ध में कूद पड़ा था। झाँसी और दिल्ली ने अंग्रेजों की कुटिल चाल से सावधान होकर स्वतंत्रता के लिए युद्ध किया। स्वतंत्रता की यह आग लखनऊ में भी सुलगने लगी। मेरठ, कानपुर, पटना, आदि नगरों में भी स्वतंत्रता का आंदोलन भारी धूम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मचाने लगा। जबलपुर और कोल्हापुर आदि प्रदेशों में भी स्वतंत्रता की कुछ हलचल मचने लगी थी।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की गाथा सुनी थी, जिसमें कि उन्होंने एक वीर योद्धा की भाँति अंग्रेजों से स्वतंत्रता का भीषण युद्ध किया था।

इस स्वतन्त्रता ... रानी थी।

शब्दार्थ—काम आना=मृत्यु को प्राप्त होना।

भावार्थ—स्वतन्त्रता के इस महा यज्ञ में अनेक वीर पुरुषों ने अपने प्राणों का बलिदान किया। नाना धूँधूँ पन्त, ताँतिया टोपे, अजीमुल्ला, मौलवी अहमदशाह, ठाकुर कुंवरसिंह आदि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वीर सैनिकों का नाम देश पर प्राण न्यौछावर करने वालों में अग्रगण्य रहेंगे। लेकिन आज इस पराधीन भारत में उन वीर पुरुषों के महान बलिदान अपराध समझे जाते हैं।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने सुना है कि रानी लक्ष्मीबाई ने एक वीर पुरुष की भाँति अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए भीषण संग्राम किया था।

इनकी गाथा ... रानी थी।

शब्दार्थ—गाथा=कहानी। द्वन्द=दो व्यक्तियों का पारस्परिक युद्ध।

भावार्थ—इन वीर पुरुषों की जीवन प्रशस्ति को छोड़कर हम झाँसी के रण क्षेत्र में चलते हैं। वहाँ रानी लक्ष्मीबाई वीर सैनिकों के बीच में एक वीर भाँति घनघोर युद्ध कर रही है। इतने में अंग्रेज लेफ्टिनेन्ट वोकर रानी से युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। रानी लक्ष्मीबाई ने वोकर को देखते ही तलवार खींचली और भीषण युद्ध करने लगीं। रानी के प्रहारों से घायल होकर वोकर रणक्षेत्र छोड़कर भाग गया। रानी की अद्भुत वीरता को देखकर उसे बड़ा विस्मय हुआ।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई का जीवन वर्णन सुना था कि रानी ने भारत के प्रथम स्वाधीनता के युद्ध में एक वीर पुरुष की भाँति घनघोर युद्ध किया था।

रानी बढ़ी ... रानी थी।

शब्दार्थ—सरल हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—अंग्रेजों से युद्ध करती हुई रानी झाँसी छोड़कर कालपी तक बढ़ आई। वह सौ मील का मार्ग था, जिसे रानी ने निरन्तर युद्ध करते हुए पार किया था। रानी का घोड़ा थककर गिर पड़ा और तुरन्त ही स्वर्ग को सिधार गया। यमुना के तट पर अंग्रेजों और रानी लक्ष्मीबाई का युद्ध हुआ। उसमें भी अंग्रेजों की पराजय हुई। विजयी बनकर रानी लक्ष्मीबाई कालपी से आगे बढ़ीं और उन्होंने ग्वालियर पर अपना अधिकार कर लिया। अंग्रेजों का मित्र सिंधिया ग्वालियर के राज्य को छोड़कर चला गया।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन प्रशस्ति सुनी थी कि उन्होंने एक वीर पुरुष की भाँति सन् सत्तावन के युद्ध में घनघोर युद्ध किया था।

विजय मिली . रानी थीं।

शब्दार्थ—मुंह की खाना=पराजित होना।

भावार्थ—यद्यपि रानी ने युद्ध में विजयश्री प्राप्त की थी, परन्तु पराजित अंग्रेज सैन्य सहित पुनः रानी से युद्ध करने के लिए आ डटे। अबके स्वयं जर्नल स्मिथ रानी से लड़ने आया था, परन्तु रानी के आगे उसे भी पराजित होना पड़ा। इस बार रानी के साथ उसकी काना और मुन्दर सखियाँ भी युद्ध क्षेत्र में लड़ रही थीं। उन दोनों ने ही रणक्षेत्र के बीच घनघोर युद्ध किया था। इतने में पीछे से ह्यूरोज अपनी सेना के साथ आ गया। रानी अब दो सैन्यदलों के बीच घिर गई।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी है कि रानी ने एक वीर पुरुष की भाँति सन् सत्तावन के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में भीषण युद्ध किया था।

तो भी रानी रानी थी।

शब्दार्थ—सैन्य=सेना। वार पर वार=प्रहार पर प्रहार।

भावार्थ—इतने पर भी रानी मारकाट मचाती हुई, अंग्रेजों की सेना को चीरकर आगे बढ़ गई। परन्तु रानी के सामने नाला आगया। घोड़ा नया होने के कारण नाले को देखकर ठहर गया। रानी नाला पार न कर सकी। इतने में अंग्रेजों की सेना आ गई। रानी अकेली थी और शत्रु बहुत अधिक थे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रानी पर एक साथ लगातार अनेक प्रहार होने लगे। अन्त में घायल होकर सिंहनी की भाँति रानी लक्ष्मीबाई रणभूमि में गिर पड़ी और वीरगति को प्राप्त हुई।

बुंदेले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी थी कि उन्होंने भारत के प्रथम स्वाधीनता युद्ध में एक वीर पुरुष की भाँति अपने अद्भुत शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन किया था।

रानी गयी .... रानी थी।

शब्दार्थ—दिव्य=अलौकिक। मनुज = मनुष्य।

भावार्थ—रानी स्वर्ग को सिधार गई। जलती हुई चिता ही अब रानी की दिव्य सवारी थी। रानी की दिव्य आत्मा स्वर्गीय ज्योति में मिल गई। वह महान विभूति उस तेज की सच्ची अधिकारिणी भी थी। रानी की आयु केवल तेईस वर्ष की थी, परन्तु इस अल्पायु में भी उन्होंने अद्भुत और महान कार्य किए थे। रानी के विस्मय कारी कार्यों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि रानी कोई मानव प्राणी नहीं थी वरन् एक दिव्य और अलौकिक आत्मा थीं, जिन्होंने मृतप्राय भारतवासियों को जीवन दान देने के लिए स्वतन्त्रता देवी के रूप में अवतार लिया था। उसने हमें स्वतन्त्रता का सचा मार्ग दिखलाया। उसने हमें वह पाठ पढ़ाया, जो हम भारतवासियों के लिए आवश्यक था।

बुन्देले हरबोलों के मुंह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन कहानी सुनी है कि उन्होंने सन् सत्तावन के युद्ध में एक वीर योद्धा की भांति भीषण संग्राम किया था।

जाओ रानी .... रानी थी।

शब्दार्थ—कृतज्ञ=उपकार मानने वाले। अविनाशी=अमर, अक्षय, जिसका विनाश न हो। स्मारक=स्मृति चिह्न।

भावार्थ—हे रानी तुम हमें छोड़कर चली गई परन्तु तुम्हारा नाम हम भारतवासियों के हृदय में सदैव विद्यमान रहेगा। स्वतन्त्रता की वेदी पर तूने जो अमर बलिदान किया है वह स्वतन्त्रता का अक्षय वरदान बन कर आयगा। चाहे इतिहास तेरे वीरता पूर्ण जीवन का वर्णन नहीं करे, चाहे तेरा जीवन सचाई के साथ प्रगट नहीं किया जाए, चाहे अंग्रेजों की विजय से तेरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

झाँसी धूल में मिल जाए, फिर भी तेरे यशस्वी जीवन की गौरव पूर्ण गाथा भुलाई नहीं जा सकती। हे रानी तुझे किसी स्मारक की आवश्यकता ही नहीं है। तेरा महान जीवन स्वयं तेरा स्मारक है। तुझे किसी स्मृति चिह्न की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तू स्वयं ही न मिट सकने वाली निशानी है।

बुन्देले हरबोलों के मुँह से हमने रानी लक्ष्मीबाई की जीवन गाथा सुनी है कि उसने सन् सत्तावन के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में एक वीर पुरुष की भांति अपने अद्भुत शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया था।

वीरों का कैसा हो बसन्त ?

हो बसन्त।

वीरों का

शब्दार्थ—हिमांचल=हिमालय पर्वत। उदधि=समुद्र। प्राची=पूर्व दिशा। भू=पृथ्वी। दिग दिगन्त=समस्त दिशाएं।

भावार्थ—वीर पुरुष बसन्त किस प्रकार मनाएं। हिमालय भी यही पुकार रहा है। समुद्र की गरजती हुई लहरें भी यही पूछ रहीं हैं। पूर्व, पश्चिम आकाश और सभी दिशाओं से बार बार यही ध्वनि मुखरित हो रही है कि वीर पुरुषों के लिए बसन्त ऋतु किस प्रकार की हो।

हो बसन्त।

फूली सरसों ने

शब्दार्थ—अनंग=कामदेव। वधु=पत्नी। वसुधा=पृथ्वी। पुलकित=प्रसन्न। कंत=पति।

भावार्थ-बसंतऋतु का सौंदर्य छाया हुआ है। सरसों के पीले पीले फूलों ने उसे मनोहर रंग प्रदान किया है। यौवन का उन्माद छाया हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कामदेव मधु लेकर आ गया हो। पत्नी रूपी पृथ्वी का अङ्ग अङ्ग हर्ष और उल्लास से भर उठा है। परन्तु पति बसन्त की इस मधुरिमा से उदासीन बन कर वीर वेश में सजा हुआ युद्ध के लिए प्रस्तुत खड़ा हुआ है।

वीर पुरुष इस बसन्त को किस प्रकार मनाएं ?

हो बसन्त।

भर रही

शब्दार्थ—मारू बाजा=युद्ध के अवसर पर बजाया जाने वाला बाजा। रंग=प्रेम। विधान=आयोजन, अनुष्ठान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—वसन्त ऋतु में इधर तो कोयल पंचम स्वर से प्रणय का राग छेड़ रही है, उधर रण के मारू बाजे युद्ध घोष कर रहे हैं। इस प्रकार एक ओर तो प्रणय की रंगरेलियाँ है दूसरी ओर युद्ध का आयोजन है। अब एक साथ ही प्रणय के सुखों का प्रारम्भ और अंत सम्मुख हैं। वीर पुरुष इनमें से किसको चुनें। बसन्त के उन्माद में अपने को भूल कर प्रणय से उलझे रहें, अथवा युद्ध के लिए प्रस्थान करें। वे किस रूप में बसन्त ऋतु को मनाएं?

गलबाहें हों
हो बसंत।

शब्दार्थ—गलबाहें=आलिंगन। चल चितवन=चंचल दृष्टि। रस विलास= आनन्द क्रीड़ा। दलित त्राण=दीन दुखियों की रक्षा। दुरन्त=कठिन।

भावार्थ—वीर जन अपनी प्रेयसियों के आलिंगन में लिप्त रहें अथवा वे युद्ध के लिए तलवार धारण करें। वे चंचल चितवनों के शिकार बनें अथवा धनुष बाण लेकर युद्ध करें। वे भोगविलास की आनन्द केलि में फंसे रहे अथवा इनको ठुकराकर दीन दुखियों की रक्षा के लिए तत्पर हों। इन दो मार्गों में से आज वे किस मार्ग को चुनें, यही कठिन समस्या उनके सामने है। वीरों का बसन्त किस रूप में मनाया जाय।

कह दे अतीत
हो बसंत।

शब्दार्थ—अतीत=व्यतीत हुआ। अनन्त=असंख्य।

भावार्थ—हे भारत के गौरव शाली अतीत तू अब मौन मत रह। अपना मौन त्याग कर इस समस्या का हल कर दे। तू बतलादे कि लंका में आग किसलिए लगी थी। हे कुरुक्षेत्र आज अपनी निद्रा त्याग कर संसार को यह बतलादे कि महाभारत का भीषण युद्ध किसलिए हुआ था। इस प्रकार हे हमारे गौरवशाली अतीत अपने इन्हीं असंख्य अनुभवों द्वारा हमें बतलादे कि वीरों का बसन्त किस रूप में मनाया जाय। भाव यह है कि भारतवासियों ने प्राचीनकाल में सदैव ही जीवन के आनंदमय क्षणों को ठुकराकर स्वदेश के लिये भीषण युद्धों का आयोजन किया था। कवियित्री अतीत को संबोधित करती हुई कहती है कि आज वह पुनः भारत वासियों को प्रणय का मोह छोड़ कर युद्ध के लिए प्रस्तुत होने की प्रेरणा दे। कवियित्री के शब्दों में वीरों का यही सच्चा बसन्त है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हल्दी घाटी के ... हो बसन्त।

शब्दार्थ—शिलाखण्ड=चट्टानें। ताना=ताना जी मौलिसिरे, जो शिवाजी के प्रमुख सेनापति थे और जिन्होंने अपने प्राणों का बलिदान देकर सिंहगढ़ का कठिन दुर्ग विजय किया था। ज्वलंत=जलती हुई।

भावार्थ—ओ हल्दी घाटी के शिला खंडों, सिंहगढ़ के प्रचंड दुर्ग तुम राणा प्रताप के गौरव और ताना जी के बलिदानों का अभिमान लेकर आज अपनी शौर्य के आग से भरी स्मृतियों को जगा दो। भारतीय वीरों से कह दो कि वे अपना बसंत राणा प्रताप और ताना जी की भांति युद्ध और तलवारों के बीच में मनाएँ।

भूषण अथवा ... हो बसन्त।

शब्दार्थ—हन्त=दुख सूचक शब्द।

भावार्थ—आज हमारे बीच भूषण और चन्द कवि भी नहीं रहे, जिन्होंने अपनी ओजस्वनी वाणी से एक बार देश में राष्ट्रीय भावों को जगाया था। आज कवियों की वाणी में क्षमता नहीं है जो देश की नसों में बिजली की तड़प भर दे। आज तो हम स्वतन्त्र भी नहीं है। कवि की कलम पर अंकुश लगा हुआ है। राष्ट्रीय भावों का सृजन करना आज अपराध है। फिर हाय हमें कौन बतला सकता है कि वीर पुरुष बसन्त किस प्रकार मनाएँ?

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

हिमालय के प्रति

मेरे नगपति ... मेरे विशाल।

शब्दार्थ—नगपति=पहाड़ों का स्वामी हिमालय। साकार=साक्षात्। दिव्य=अलौकिक। गौरव=महिमा। विराट=बहुत विशाल। पौरुष=साहस बल पुंजीभूत=एकत्रित। ज्वाल=आग। हिम किरीट=बर्फ के मुकुट। भाल=मस्तक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे पर्वत के स्वामी हिमालय, तुम अत्यन्त विशाल हो। तुम

अलौकिक महिमा के विराट स्वरूप हो। ऐसा प्रतीत होता है जैसे समस्त बल और साहस तुम में आकर केन्द्रीभूत हो गया है। तुम मेरी भारत माँ के बर्फीले मुकुट हो और तुम भारत देश के सुन्दर मस्तक हो।

हे पहाड़ों के स्वामी हिमालय तुम अत्यन्त विशाल हो।

युग युग .... मेरे विशाल।

शब्दार्थ—अजेय=जो जीता न जा सके। निर्वन्ध=बन्धन रहित, स्वच्छंद। गर्वोन्नत=गर्व से ऊँचा उठा हुआ। निस्सीम=सीमा रहित। वितान=शामियाना यतिवर=ऋषि श्रेष्ठ। महाशून्य=विशाल आकाश। जटिल=कठिन। निदान=उपाय।

भावार्थ—अनेक युग बीत गये, परन्तु तुम्हें कोई जीत नहीं सका। तुम किसी भी बन्धन से मुक्त स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता के साथ खड़े हुए हो। तुम गर्व से सदा उन्नत और महान रहे हो। अनन्त आकाश में न जाने किस युग से तुम अपनी महिमा का विस्तार कर रहे हो। हे ऋषि श्रेष्ठ तुमने यह कैसी समाधि लगाली है, जो कभी टूटती ही नहीं न मालूम तुम्हारी यह किसी अटूट ध्यान में तल्लीन मुद्रा कैसी है? तू उस विस्तृत महाकाश में इस प्रकार की चिर समाधि द्वारा न जाने क्या खोज रहा है? न मालूम ऐसी कौनसी उलझन में उलझा हुआ तू उसके सुलझाने का उपाय ढूंढ रहा है। न जाने वह समस्या कितनी उलझी हुई है जो तुमसे भी नहीं सुलझती।

ओ, मौन तपस्यालीन .... करुणा उदार।

शब्दार्थ—लीन=किसी कार्य में लगे हुए। यती = साधु। दृगोन्मेष=आँखें खोलना। दग्ध = जला हुआ। पद पर=पैरों पर। पंचनद=पंजाब की पाँच नदियाँ, झेलम, चिनाव, रावी, सतलज, व्यास। अमियधार = अमृत के समान जलधार। पुण्यभूमि=पवित्र भूमि। विगलित = पिघली हुई, द्रवीभूत।

भावार्थ—अपनी तपस्या में तल्लीन और शान्त ऋषि क्षण भर के लिए तो आँखें खोल। देख तेरे पैरों के निकट ही प्यारा स्वदेश भारत विदेशी शासन के अत्याचारों की ज्वालाओं से दग्ध और विकल होकर पड़ा हुआ है। यही वह भारत देश है जिसकी पवित्र भूमि पर सुखदायी सिन्धु, झेलम, चिनाव, रावी, सतलज, व्यास, गंगा, यमुना ब्रह्मपुत्र आदि अमृत के समान जलधारा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाली नदियाँ तुझ से निकल कर बही हैं। जिन्होंने कि अपने जल से भारत को शस्य श्यामल बनाया है, और जो करुणा से द्रवीभूत तेरे हृदय की प्रतीक हैं।

जिसके द्वारों ... मेरे विशाल।

शब्दार्थ—क्रान्त=जिस पर आक्रमण किया गया हो। सीमापति=सरहद के रक्षक। पद दलित=पैरों पर गिरा हुआ। कराल=भयङ्कर। सुत=पुत्र। चतुर्दिक=चारों दिशाएँ। व्याल=सर्प।

भावार्थ—जिस भारतवर्ष के द्वार की सीमा का सजग प्रहरी बनकर तूने विदेशी आक्रमणकारियों को ललकार कर कहा था कि इस भारतवर्ष को नष्ट करने से पहले मेरा मस्तक काट लो, अर्थात् पहले मेरे दुर्गम पथों को पार करो। लेकिन हे तपस्वी तेरे उसी भारतवर्ष की पवित्र भूमि पर भयंकर संकट आ पड़ा है। तेरे चालीस करोड़ पुत्र दुख से व्याकुल होकर तड़प रहे हैं। चारों दिशाओं में अत्याचारों के विषधर उन्हें डस रहे हैं।

कितनी मणियाँ ... बसन्त हुआ।

शब्दार्थ-मणियाँ=वन संपदा। अशेष=जो बचा हुआ नहो। वीरान=उजड़ा हुआ। द्रुपदा=पांडवों की रानी द्रोपदी जिसके बाल पकड़ कर खींचे गए थे और दुर्योधन के दरबार में जिसका अपमान हुआ था। यहाँ देश की हतभागिनी अबलाओं की ओर संकेत हैं, जिनका विदेशियों द्वारा अपमान किया जाता है। ज्वाल बसंत=जौहर के अनुष्ठान जिसमें सारी राजपूत स्त्रियाँ शत्रु से अपने सम्मान की रक्षा करने के लिए आग में जलकर भस्म हो जाती थीं।

भावार्थ—भारत देश की सारी धन सम्पदा लूट ली गई है और अब उसके पास कुछ भी शेष नहीं बचा है। तू अपने ध्यान में ही उलझा रहा और इधर प्यारा स्वदेश बिल्कुल वीरान हो गया। आज द्रोपदी की भाँति इस देश की अनेक हतभागिनी अबलाओं पर भीषण अत्याचार हो रहे हैं। न मालूम कितने ही अबोध शिशु मारे गए! हे चित्तौड़ तू ही हृदय खोलकर यह बतलादे कि तेरे यहाँ कितनी बार अनेक वीरांगनाएँ अपने सम्मान की रक्षा के लिए ज्वालाओं में जलकर भस्म हो गई हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection. Digitized by eGangotri

पूछो, सिकता-कण ... बलधाम कहाँ ।

शब्दार्थ—सिकताकण=बालू के कण । बलवान=यहाँ राणा प्रताप से अभिप्राय है । घनश्याम=श्री कृष्ण ।

भावार्थ—हे हिमालय पर्वत उन बालू के रजकणों से पूछो कि तेरा वह राजस्थान कहाँ है, जिसका शौर्य पराकाष्ठा को पार कर गया था । वह प्रताप आज कहाँ है ? जिसने भारत के कणकण में स्वतन्त्रता की नई ज्योति सुलगाई थी । हे अवध, अब तेरी भूमि पर भगवान् रामचन्द्रजी जन्म क्यों नहीं लेते, जिन्होंने एकबार रावण जैसे दनुज का अन्त किया था । हे वृन्दावन तुम्हीं बतलाओ कि हमारे वे श्रीकृष्ण कहाँ हैं, जिन्होंने कंस का नाश करके भारत का उद्धार किया था । हे मगध, तेरी भूमि पर अहिंसा की चारु चन्द्रिका छिटकाने वाला महान् धर्म सम्राट् अशोक आज क्यों नहीं दिखलाई पड़ता । तेरा वह परम-वीर चन्द्रगुप्त मौर्य कहाँ गया जिसने सिकन्दर जैसे विश्व वीर के दांत खट्टे कर भारत की यश सुरभि को विदेशों तक फैलाया था ।

पैरों पर ही ... संदेश कहाँ ।

शब्दार्थ—मिथिला=वर्त्तमान तिरहुत का प्रदेश । कपिल वस्तु=भगवान गौतमबुद्ध का स्थान ।

भावार्थ—हे हिमालय, तेरे पैरों के निकट मिथिला की सुन्दर भूमि आज भिखारिणी की भाँति पड़ी हुई है । तू इससे पूछ तो सही कि इसने वह अपना गौरव, अपनी सम्पदा, अपने राजसी ठाठ-बाट सब कहाँ लुटा दिए । आज कपिलवस्तु में उत्पन्न होने वाले भगवान बुद्ध के वे उपदेश सुनाई नहीं पड़ते जिन्होंने तिब्बत, ईरान, जापान, चीन आदि देशों तक अपने ज्ञानका आलोक फैलाया था । (भगवान बुद्ध जैसे तपस्वी और उनके उपदेश अब नहीं रहे ।)

वैशाली के भग्नावशेष ... 'सीराज' कहाँ ।

शब्दार्थ—भग्नावशेष = खण्डहर, टूटी फूटी अवस्था । लिच्छिवी=वैशाली पर शासन करने वाला एक प्राचीन राजवंश । सीराज=नवाब सिराजुद्दौला जो बंगाल का नवाब था और जिसे अंग्रेजों ने हराया था ।

भावार्थ—आज वैशाली के लिच्छिवी वंश का गौरव अपनी टूटी फूटी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था में खंडहर रूप बन गया है। गंडकी नदी की जो लहरें कवि विद्यापति के मादक गीत सुनकर थिरक उठती थीं आज उदास बनकर बह रही हैं।

हे हिमालय तूने यह जो मौन रहने की चिर समाधि धारण की है उसे भंगकर अपने बंगाल से यह तो पूछ कि वह नबाव साम्राज्य कहाँ गया जिसने अन्तिम दम तक अंग्रेजों के पैर भारत पर नहीं टिकने दिए थे। वह सिराजुद्दौला भी आज नहीं रहा जो कि जीवन भर अंग्रेजों से लड़ा और जिसकी मृत्यु के रूप में भारत ने अपनी आँखों का अन्तिम प्रकाश खो दिया था।

तू तरुण देश .... अरे विशाल।

शब्दार्थ—ध्वंशराग = विनाश का गीत। अम्बुधि = समुद्र। अन्तस्तल= हृदय। प्राची=पूर्व। प्रांगण = आंगन। स्वर्ण युग=सोने का युग, धन धान्य सम्पदा से भरा अतीत का समय। अग्निज्वाल=आग की ज्वालाएँ। यती = ऋषि।

भावार्थ—हे हिमालय, तू इस देश से पूछ तो सही कि यहां आज विनाश का घोर नर्तन कैसे हो रहा है! देश नष्ट भ्रष्ट हो रहा है। स्वदेश की वड़वाग्नि के समान भारत भूमि पर यह कौनसी आग है, जिसकी ज्वालाएँ आज धधक उठी हैं।

पूर्व दिशा में सुनहली किरणों से विभूषित आग की ज्वालाओं के समान जो यह बाल अरुण सूर्य चमकता है उसी प्रकार अतीत के क्षितिज पर भारत का स्वर्ण युग आया था। लेकिन आज चारों ओर अन्धकार छाया हुआ है। हे ऋषि श्रेष्ठ हिमालय तू अपनी समाधि भंग करते हुए सिंह गर्जना कर और भारत के अन्धकार को मिटा दे।

रे रोक युधिष्ठिर .... महोच्चार।

शब्दार्थ—गांडीव=अर्जुन का धनुष।

भावार्थ—हे हिमालय, स्वर्ग की ओर प्रस्थान करते हुए तू युधिष्ठिर को स्वर्ग जाने दे, किन्तु हमें अर्जुन और भीम को उनकी गांडीव और गदा के साथ वापिस लौटा दे। देश को युधिष्ठिर जैसे शान्ति प्रिय व्यक्तियों की आवश्यकता नहीं है, वह तो अर्जुन और भीम जैसे बलवान और शत्रु मर्दन के लिए तत्पर युवकों को चाहता है। (कवि दिनकर इन पंक्तियों में भारतीय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वाधीनता संग्राम में गाँधीजी की शांतिप्रिय नीति से सहमत नहीं है, वे भारत में स्वतन्त्रता के लिए सशस्त्र क्रान्ति चाहते हैं।)

हे हिमालय भगवान शङ्कर आज तेरे यहाँ निवास करते हैं। तू आज उनसे कहदे कि वे पुनः एक बार प्रलय नृत्य करें। चारों ओर क्रांति के बादल उमड़ पड़ें और हरहर बम का महानाद चतुर्दिक गूंज उठे।

ले अँगड़ाई ... जागो विशाल।

शब्दार्थ—धरा=पृथ्वी। विराट=बहुत भारी। निनाद=हुँकार। शैलराट=पर्वतेश्वर, पर्वतों का स्वामी। कुहा=अन्धकार। प्रमाद=आलस्य। हिमकिरीट=बर्फीले मुकुट। भाल=मस्तक।

भावार्थ—हे शैलराट हिमालय! आज तू अँगड़ाई लेता हुआ खड़ा हो, जिससे कि यह सारी पृथ्वी काँप उठे। तू वज्रनाद करता हुआ ऐसी गर्जना कर जिससे देश का सारा अंधकार फट जाय और देश की समस्त मूर्छा और आलस्य दूर हो जाय। हे तपस्वी! आज तप करने का अवसर नहीं है। आज तो मौन त्यागकर शत्रु को ललकारने का समय है। नए युग के नव-निर्माण के लिए चारों ओर क्रांति की भेरी बज रही है, हे विराट हिमालय जाग उठ।

हे मेरे नगपति, तुम भारत माँ के साक्षात् बर्फीले मुकुट हो। भारत देश के सुन्दर मस्तक हो। तुम नए युग की क्रांति का सन्देश जगा रहे हो। तुम जाग उठो।

पाटलिपुत्र की गंगा से

संध्या की ... मृदुल उमंग।

शब्दार्थ—मलिन=उदास। विषाद=दुख।

भावार्थ—हे गंगा, संध्या की उदास भरी छाया में तू किस दुख से व्यथित होकर अपने हृदय की मधुर अभिलाषाओं को मन ही मन सहन करती हुई, निष्क्रिय और निश्चेष्ट बना रही हो।

उमड़ रही ... प्रवाह।

शब्दार्थ—आकुल अन्तर=दुख से व्याकुल हृदय। वेदना अथाह=गहरा दुख। गहन भार=बहुत अधिक भारी। निश्चल=गति हीन, निश्चेष्ट।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—तुम्हारे दुख से व्याकुल हृदय से कौनसी अथाह वेदना उमड़ी पड़ रही है। हे गङ्गा वह कौनसा दुख है जिसके भार से तेरा प्रवाह भी शिथिल पड़ गया है। (गर्मियों में गङ्गा की धारा पतली और शांत रहती है। कवि कल्पना करता है कि गङ्गा का यह क्षीण रूप किसी वेदना के कारण हो गया है।)

मानस के ... लघु द्वार।

शब्दार्थ—मानस=हृदय। मृदुल=कली। सजनी=सखी। गन्ध=सुगन्ध। अनिल=वायु।

भावार्थ—सखि रूप में गंगा को सम्बोधित करता हुआ कवि कहता है कि हे गंगा तुम्हारे हृदय की शांति कली में ऐसी कौन-सी असीम वेदना भरी हुई है जो गंध बनकर वायु में मिलने के लिए तनिक-सा स्थान खोज रही है। भाव यह है कि गंगा का दुख उस तक ही सीमित नहीं है, वरन् वायु में मिलकर चारों ओर फैलना चाहता है।

चल अतीत की ... जय गान।

शब्दार्थ—रंग भूमि=वह स्थान जहाँ नाटक खेला जाता है। स्मृति-पंखों=स्मृतियों के सहारे। विकल-चित=दुखी हृदय से।

भावार्थ—हे गंगा तुम्हारी वेदना का कारण कहीं यह तो नहीं कि तुम पुरानी स्मृतियों के सहारे, अपने गौरवशाली अतीत के संसार में चंद्रगुप्त का जयनाद सुन रही हो। आज उस महान वीर की याद तुम्हें व्यथित बना रही हो।

घूम रहा ... अशोक सम्राट्।

शब्दार्थ—गत=बीता हुआ। विभव=वैभव, ऐश्वर्य। विराट=बहुत अधिक विशाल। सुरसरि=गंगा।

भावार्थ—स्वप्न की भांति हे गंगा कहीं तेरी आँखों में बीते हुए वैभव के चित्र तो नहीं विचर रहे। मगध के महान् सम्राट् अशोक की स्मृति में तो कहीं तुम लीन नहीं हो रही हो ?

सन्यासिनी समान ... गरिमा गान।

शब्दार्थ—विजन=निर्जन, जन रहित। गत-विभूति=बीता हुआ वैभव। गरिमा-गान=महिमा के गान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—आज इस निर्जन वातावरण में सन्यासिनी की भाँति अपने बीते हुए वैभव के ध्यान में लीन बनी हुई, हे गंगा अपने करुण-क्रन्दन में गुप्त-वंश की महिमा का गान तो नहीं कर रही ?

गूंज रहे तेरे ... के संदेश ।

शब्दार्थ--गौतम=गौतम बुद्ध । ध्वनित=आवाज़ करना ।

भावार्थ –हे गंगा, तेरे इन किनारों पर आज भी गौतम बुद्ध के महान् उपदेश गूंज रहे हैं। तेरी लहरों में आज भी अहिंसा का वह महान संदेश मुखरित हो रहा है जो कि किसी दिन सारे संसार में व्याप्त हुआ था ।

कुहुक कुहुक ... की लाली ।

शब्दार्थ--सरल हैं ।

भावार्थ—यह कोयल भी अपनी कुहुक-कुहुक के मादक स्वर में उसी अतीत के गीत गाती फिरती है । यह जो प्रतिदिन आकाश पर उषा की लाली छाती है, उसमें भी हमारे अतीत का स्वर्ण संदेश स्वर-मय हो रहा है ।

तुझे याद है ... में तलवार ।

शब्दार्थ—पदों=पैरों । जय सुमनों के हार=विजय के फूलों से बने हार ।

भावार्थ—हे गंगा क्या तुझे याद है कि तेरे इन चरणों पर भारतीय वीरों ने कितने ही विजय-सुमनों को चढ़ाया है अर्थात् तेरे तट पर अनेक विजय प्राप्त की हैं । अनेक बार तेरे वीर पुत्र समुद्रगुप्त ने शत्रुओं के खून से रँगी हुई तलवार को तेरे जल में धोया है ।

तेरे तीरों पर ... अवभृथ स्थान ।

शब्दार्थ—दिग्विजयी=संसार को विजय करने वाला । नृप=राजा । चक्रवर्तियों = समस्त संसार पर जिनका राज्य होता है । कूल=किनारे । अवभृथ= यज्ञ के समाप्त हो जाने पर किया जाने वाला स्नान ।

भावार्थ—हे गङ्गा तेरे किनारों पर कितने ही सम्राटों ने अपनी दिग्विजय के झण्डे फहराए हैं। जिन चक्रवर्तियों का समस्त संसार पर राज्य छाया हुआ था, उन्होंने भी तेरे ही किनारों पर संसार विजय का अनुष्ठान पूरा होने पर स्नान किया था ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विजयी चन्द्रगुप्त   शृङ्गार ।

शब्दार्थ—मनुहार = खुशामद । शृङ्गार=सजावट ।

भावार्थ—हे गङ्गा, विजयी चन्द्रगुप्त के पैरों पर पराजित सिल्यूकस को तूने अनुनय विनय करते देखा था । हे देवि गङ्गा क्या तुझे याद है कि मगध उन दिनों कितना वैभव और ऐश्वर्य शाली था ।

जगती पर छाया   उन्नत भाल ।

शब्दार्थ—उन्नत भाल=ऊँचे सिर ।

भावार्थ—सारा संसार कभी हमारे अधिकार में था । हमारी भुजाओं ने उसे विजित बनाया था । अनेक बार ग्रीक यवन आदि विदेशियों के मस्तक जिनको वे गर्व से ऊँचा उठाये रहते थे, हमारे देश के चरणों पर पराजित बन कर झुके थे ।

उस अतीत गौरव   बन फूलों की ।

शब्दार्थ—उपकूलों = किनारों । कीर्ति सुरभि = यश की सुगन्धि । गमक रही=महक रही ।

भावार्थ—हे गङ्गा, तेरे इन्हीं किनारों में उसी गौरवशाली अतीत की महान गाथाएँ छिपी हुई हैं । तेरे तट के बन फूलों की सुगन्धि चारों ओर फैल रही है । उस सुरभि में आज भी हमारे प्राचीन अतीत की कीर्ति महक रही है ।

नियत नटी   साकार ।

शब्दार्थ—नियत-नटी = भाग्य रूपी अभिनेत्री । स्वर्णोदय=वैभव और सम्पदा से भरा सर्व श्रेष्ठ समय । साकार=साक्षात् ।

भावार्थ—परन्तु नियत के खेल ने उस गौरव शाली अतीत को नष्ट भ्रष्ट कर दिया । हे गङ्गा तेरा विगत वैभव और ऐश्वर्य आज धूल में मिल गया है । स्मृतिरूप में आज उसके भग्नावनशेष बचे-हुए हैं ।

तूने सुख सुहाग   व्यस्त, सखी ।

शब्दार्थ—अस्त=डूबता हुआ । भिक्षाटन=भीख माँगते हुए । व्यस्त=काम में लगा हुआ ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे गङ्गा तूने अपने सुख भरे सुहाग को बनते और मिटते हुए

देखा है। अर्थात् तूने पाटलिपुत्र का उत्कर्ष भी देखा है और अवनति भी देखी है। जो तेरे राजकुमार अपने पराक्रम से संसार पर शासन करते थे, वे ही आज भिखारियों के से कर्म कर रहे हैं।

एक एक कर उद्भूत हुआ।

शब्दार्थ—भस्मीभूत=जल कर राख होना। महासिंधु=विशाल समुद्र। सैकत=बालू। उद्भूत=निकलता।

भावार्थ—एक एक करके सारे राजवंश नष्ट हो गए। विदेशियों ने उन्हें पराधीन बनाया। इस प्रकार तेरा वैभव और सौख्य से भरा उपवन जल कर राख हो गया। तेरी आँखों के आगे सुख का विशाल सागर सूख गया और चारों ओर दुख दैन्य की बालू बिखर गई।

धधक उठा शृङ्गार।

शब्दार्थ—मरघट=शमशान स्थल। धधक उठा=जल उठा। दहकने=जलने।

भावार्थ—जिस दिन हे गङ्गा तेरे सोने का संसार आग की लपटों में जलता हुआ शमशान रूप हो रहा था तभी मगध की समस्त शोभा दिनों दिन नष्ट होती गई।

जिस दिन दो टूक हुई।

शब्दार्थ—जय भेरी=विजय का बाजा। मूक=मौन, चुप। दो टूक होना=करुणा से हृदय का द्रवीभूत होना।

भावार्थ—जिस दिन मगध का सारा गौरव नष्ट भ्रष्ट हो गया, विजय के निनाद समाप्त हो गए, हे गंगे उस दिन यदि तेरा कलेजा दुख से टूट कर दो टूक नहीं हो गया तो तू जम कर पत्थर क्यों नहीं बन गई। इतने अपमान के बाद भी आज तू क्यों बह रही है?

देवि! आज तलवारों की।

शब्दार्थ—नक्कारों=दुन्दुभियों।

भावार्थ—हे देवि गंगे, आज भी तेरी धूल में विजय दुन्दुभियों के स्वर छिपे हुए हैं। आज भी उसमें मौर्यों की तलवारों की झंकार का स्वर व्याप्त है। भाव यह है कि तेरे तट पर गूंजने वाले विजय निनाद आज मिट्टी में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विलीन हो गए हैं, और मगध की वीरता आज धूल में छिप गई है।

दाएँ पार्श्व ... है वैशाली।

शब्दार्थ—पार्श्व=बगल।

भावार्थ—हे गङ्गा तेरे दाहिनी ओर आज शक्तिशाली मगध धूल में लिपटा हुआ सोया पड़ा है। बांयी ओर वीर लिच्छवियों की वैशाली आज विधवा की भांति अपने नष्ट हुए वैभव पर आँसू बहा रही है। भाव यह है कि मगध और वैशाली दोनों की दशा आज शोचनीय है।

तू निज ... रह जाती है।

शब्दार्थ—मानस-ग्रन्थ=मन की स्मृतियाँ। गरिमा=महिमा। वीचि-दृगों=लहर रूपी आँखें। हेर हेर=देख देख करके। सिर धुन धुन कर रोना=पश्चाताप के आँसू बहाना।

भावार्थ—तू अपने हृदय में बसी हुई स्मृतियों को प्रगट करके आज मगध और वैशाली की महिमा के गीत गा रही है परन्तु आज अपनी लहर रूप आँखों से उनकी पतनोन्मुखी अवस्था को देख देखकर सिर धुन कर पछता रही है।

देवि दुखद है ... रत रहना।

शब्दार्थ—असीम पीड़ा=बहुत भारी दुख। संस्मृति=पूर्ण स्मृति। रत रहना=लीन रहना, लगे रहना।

भावार्थ—हे गंगे वास्तव में वर्त्तमान की इस दारुण अवस्था का दुख सहना अत्यधिक कठिन है। इससे कहीं अधिक सुख तो गौरवशाली अतीत का ध्यान करने में प्राप्त होता है।

अस्तु आज ... विभव विलास।

शब्दार्थ—अस्तु=खैर। गो धूलि लग्नि=संध्या की वेला में। सम्प्रति=वर्त्तमान काल। उपहास=हंसी उड़ाना। विभव विलास=वैभव की आनन्द क्रीड़ा।

भावार्थ—खैर हे गङ्गा संध्या काल में गांवों और नगरों के किनारे धीमी गति से बहते हुए अपने ... स्वर में यह कहना कि आज वर्त्तमान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काल में छाई हुई दरिद्रता का तुम जो उपहास करते हो, उसी स्थान पर मैंने मौर्य वंश के वैभव और ऐश्वर्य को नृत्य करते हुए देखा था।

श्री उदयशंकर भट्ट

धीरे धीरे ... युग दीप जला।

शब्दार्थ—युग दीप=समय का दीपक। अगणित=असंख्य। शैशव=बचपन। हास=आनन्द। अतृप्त=अपूर्ण। मलयज=मलय पवन। दोलित=आन्दोलित, तरंगित। हिमसा=बर्फ के समान। मधुमास=बसंत ऋतु।

भावार्थ—समय धीरे-धीरे गतिशील बनता रहता है। समय के इस प्रवाह में असंख्य बचपन डूब गए हैं। यौवन की अनेक अपूर्ण अभिलाषाएँ इसमें निहित हैं। मलय पवन से तरंगित वसन्त ऋतु की भाँति अनेक उल्लास भरे जीवन इस काल की गति में समा गए हैं।

इस प्रकार वर्फ की भाँति समय गलता रहा है। युग का दीपक धीरे-धीरे जला है।

किंकिणी रात ... दीप जला।

शब्दार्थ—किंकिणि=कमर में पहिनी जाने वाली करधनी। मुग्ध=आसक्त। रसा=उलझा। हासों=खिलना।

भावार्थ—इस समय की गति ने रात्रिकाल में चाँदनी के रूप में किंकिणी पहिन कर अपना शृंगार किया। उषा की मनोहरता पर यह आसक्त हुआ, परन्तु उसमें उलझा नहीं। खिलते हुए फूलों को देखकर भी यह नहीं रुका। इस प्रकार समय का प्रवाह यदि तेजी से गतिशील नहीं बना तो चलते-चलते कहीं ठहरा भी नहीं। दीपक के प्रकाश की भाँति वह धीरे-धीरे जलता ही रहा।

संध्या प्रभात ... युग दीप जला।

शब्दार्थ—हिमपात=पाला, यहाँ शीतऋतु से तात्पर्य है।

भावार्थ—अनेक संध्या और प्रभातकाल समय के प्रवाह में बह गये हैं। काल के इस दीपक ने अनेक बसंत, बरसात, गर्मी और शीत की ऋतुएँ व्यतीत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती हुई देखी हैं। युग का यह दीपक विश्व जीवन के अनेक तूफानों के बीच पला है, परन्तु इसका प्रकाश कभी धुँधला नहीं हुआ। यह युगदीप तो धीरे-धीरे अविराम गति से सदैव जलता ही रहा है।

मानव की स्वार्थ ... दीप जला।

शब्दार्थ—परायणता=लगा हुआ, प्रवृत्त। गर्व=अहंकार।

भावार्थ—जिस प्रकार दीपक का प्रकाश तेल के द्वारा तेज होता है, उसी प्रकार युग का दीपक भी मनुष्य के स्वार्थ, अहंकार और बुद्धि का खून पाकर और भी अधिक उजला होता गया है। भाव यह है कि मनुष्य के स्वार्थ, अहंकार और बुद्धि ने ही समय के प्रवाह को सदैव बल दिया है। मनुष्य के अहंकार, स्वार्थ और बुद्धि के ही कारण विश्व जीवन में वे कार्य किए जाते हैं, जिनसे युग की धारा आगे बढ़ती है।

मानव की ... युग दीप जला।

शब्दार्थ—सुघर=सुन्दर। अनन्त=असंख्य। खरतर=तीव्र रूप से प्रकाशमान। भू=पृथ्वी। आलोकित=प्रकाशमान। बला=जला।

भावार्थ—मनुष्य का खून और चर्बी ही इस प्रदीप का तेल है। मनुष्य की लाशें इसकी सुन्दर बत्ती है। भाव यह है कि मानवजन मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं, परन्तु समय का प्रवाह नहीं रुकता। वह और अधिक तेजी से आगे की ओर बढ़ता ही रहता है।

जिस प्रकार अपनी प्रकाशपूर्ण किरणों से दीपक अन्धकार को निगलता है, उसी प्रकार युग का यह दीपक भी संघर्षों के बीच जल कर प्रकाशमान होता है। मानव-जीवन के संघर्ष ही समय के प्रवाह को बलवान बनाते हैं। पृथ्वी का यह युगदीप इसी प्रकार ज्योतिर्मय होता रहता है।

समय का प्रवाह धीरे-धीरे चलता रहता है।

शैशव यौवन ... युग-दीप जला।

शब्दार्थ—शैशव=बचपन। क्षार=राख। पंथी=पथिक। विकार=दोष।

भावार्थ—इस युग के दीप की लौ से असंख्य बचपन और यौवन मिट कर राख बन गए। भाव यह है कि समय के प्रवाह में असंख्य बचपन और यौवन नष्ट हो गए। जीवन के राह के अनेक पथिक मृत्यु को प्राप्त होकर उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पार चले गए। परन्तु समय की गति में इससे कोई अन्तर नहीं आया। वह पूर्ववत भाव से ही गतिशील होता रहा। उसका प्रवाह मंद नहीं पड़ा। जिस प्रकार दीपक की लौ जब जलती है, तब तेल और बत्ती समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार युग के इस दीपक की बत्ती और तेल भी मनुष्य की चर्बी और लाशें हैं। मनुष्य ज्यों-ज्यों मृत्यु को प्राप्त होता जाता है, समय का प्रवाह और अधिक तेजी से बढ़ता जाता है। इस प्रकार स्वयं अपने को आहार बनाकर समय प्रवाहित होता रहता है।

(इस पंक्ति का अर्थ यह भी हो सकता है कि ज्यों-ज्यों समय प्रवाहित होता है, त्यों-त्यों समय नष्ट होता जाता है, इस प्रकार स्वयं अपने को ही नष्ट करता हुआ समय का प्रवाह चलता रहता है)।

युग का दीपक धीरे-धीरे जलता रहता है।

आज नई आई होली है।

आज नई ... आँखें धोली हैं।

शब्दार्थ—महाकाल=महादेव। अंग-अंग=प्रत्येक अंग में। बड़वानल=समुद्र में लगने वाली आग। ज्वालाएं=आगकी लपटें। नग=पर्वत। हलाहल=जहर। पन्नग=शेष नाग। अम्बर=आकाश।

भावार्थ—आज क्रांति की नई होली छाई हुई है। महादेव के अङ्ग-अङ्ग से ज्वालाएं निकल रही हैं। धरती काँप रही है। समुद्र की लहरें बड़वाग्नि से झुलस रही हैं। पर्वत ज्वालाएं उगल रहे हैं। सारी प्रकृति अग्नि की लपटों में जली जा रही है। शेष नाग के फन जहर उगल रहे हैं। आकाश रो रहा है, तारे टूट-टूटकर नीचे गिर रहे हैं। ऐसा लगता है मानो स्वर्ग में भी आग लग गई है।

नर आँखों ... झोली है।

शब्दार्थ—अंगारे=आग के शोले। मरणदान=मृत्यु।

भावार्थ—मनुष्य की आँखों में आज स्वार्थ के अङ्गारे दहक रहे हैं। दूसरे के खून की प्यास उसके हृदय में जगी हुई है। मानव जीवन स्वयं अपने आप ही मृत्यु के निकट पहुंचा रहा है। मनुष्य पर अब कोई बन्धन नहीं रह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गया। वह मनमाने कृत्य कर रहा है। उसकी अवस्था मृत प्राय है। उसका जीवन उसके प्राणों से रहित बन चुका है।

कृष्ण बुद्ध .... भोली है।

शब्दार्थ—निरर्थ=बिना किसी अर्थ का। भोली=नादान।

भावार्थ—कवि कहता है कि मैं आज यही सोच रहा हूँ कि कृष्ण, बुद्ध, ईसा द्वारा मानव जाति को दिए गए सभी उपदेश व्यर्थ हो गए। उनके उपदेशों का कुछ भी प्रभाव मनुष्य जाति पर नहीं पड़ा। मानव कल्याण के हेतु रचा गया साहित्य भी क्या आज कोई मूल्य नहीं रखता? मानवजन के लिए क्या उसकी उपयोगिता नष्ट हो गई?

कवि कहता है कि इसमें संदेह नहीं कि इस युग के जीवन की आँखें बहुत नादान हैं। वह अपना भला-बुरा न सोचकर अपने हाथों अपने पतन की राह टटोल रहा है।

लपटों में .... आई होली है।

शब्दार्थ—दृष्टिबिन्दु=दृष्टिकोण। पंकिल=कीचड़। महामरण=मृत्यु। चिनगारी=आग। नव-आगत=नए आने वाले। हिम-आवृत्त=बर्फ से ढँके हुए। शव=लाश। अधरों=होठों।

भावार्थ—इस क्रान्ति की ज्वालाओं में बड़े साम्राज्य जलकर नष्ट होते जा रहे हैं। मानव की स्वार्थ बुद्धि से भरे दृष्टिकोण आज बदल रहे हैं। इस युग के विनाश में नए युग का निर्माण झाँक रहा है। अर्थात् आज का युग विनष्ट होकर नए युग में बदल रहा है। मनुजता की लाश के ठण्डे ओठों ने आज नए जीवन का राग छेड़ा है।

आज क्रान्ति की नई होली मची हुई है।

आज का जीवन यही है आज की है यही वाणी

आज उठ .... मधुमास जागे।

शब्दार्थ—अंगार=आग के शोले। शृङ्गार=सजाना। भग्न=टूटी हुई। नभ अंगारिका = आकाश के अङ्गारे, यहां तारों से अभिप्राय है। पुतलियों= आंखों। अश्रु=आँसू। मधुमास=वसंत ऋतु। स्मय=गर्व से।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे मेरी जवानी, जीवन की इस आनन्द केलि को छोड़कर क्रान्ति की ज्वालाओं से अपने जीवन का शृङ्गार कर।

यह कौनसी अदृश्य शक्ति है जो दूर उस पार से मुझे जागरण का उद्-बोधन दे रही है। मेरी टूटी हुई जीवन वाणी से जो नए जीवन के निर्माण के गीत छेड़ रही है। देख अङ्गारों के समान प्रतीत होने वाले तारों के रूप में आकाश किस गर्व के साथ सांसें भर रहा है जैसे अश्रु ढूंढ़ने वाली उन तारों रूपी आकाश की पुतलियों में मधुमास छा गया हो।

साँस में युग — कौन से स्वर।

शब्दार्थ--प्रलय के घन=विनाश के बादल। भूकम्प=पृथ्वी का हिलना। संहारिणी=संहार करने वाली। चपल नर्त्तन=चंचल नृत्य। खंडहर=टूटा फूटा रूप। कंकालपंजर=हड्डियों का ढाँचा।

भावार्थ—आज इस युग की साँसों में विनाश के बादल भर रहे हैं। भाव यह है कि यह युग ज्यों ज्यों बीत रहा, त्यों त्यों विनाश के अधिक निकट पहुंच रहा है। आज विनाश अपनी गति से संसार को हिलाता हुआ चंचल नृत्य कर रहा है। आज युग का खंडहर बना रूप नए निर्माण के लिए चौंककर अपने ही आप उठ खड़ा हुआ है। मानव के मृत प्राय कंकाल आज क्रांति के नए स्वर छेड़ रहे हैं।

सुप्त सदियों — मेरी जवानी।

शब्दार्थ--सुप्त=सोई हुई। नग=पर्वत। तट=किनारे। निशा के स्वप्न= रात्रि काल के क्षणिक सपने। ढूह = कगार, ढेर। नवसृष्टि=नए युग।

भावार्थ—अनेक सदियों के सोए हुए पर्वत आज करवट लेकर जाग उठे हैं। समुद्र अपने पुराने किनारों को तोड़कर आगे बढ़ने लगे हैं, अर्थात् आज मनुष्य अपनी पुरानी परम्पराओं और मर्यादाओं को तोड़ता हुआ आगे बढ़ रहा है। मनुज जाति के परम्परा रूप पिछले जो सहारे हैं, वे रात्रि के क्षणिक सपनों की भाँति नष्ट हो रहे हैं। नदी के किनारों पर स्थित बड़े बड़े कगार अब नष्ट होते जा रहे हैं। भाव यह है कि आज मनुष्य जाति के सारे बन्धन समाप्त हो रहे हैं। वे बाधाएँ जो मनुष्य की प्रगति को अवरुद्ध बनाए हुए थीं अब नष्ट होती जा रही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आज के इस संसार में अब नए युग का जीवन झांक रहा है। इसलिए हे मेरी जवानी उठ क्राँति के अङ्गारों से अपना शृङ्गार कर।

मैं नहीं हूँ आह्वान माँगू।

शब्दार्थ—अति तृप्त=पूर्ण तृप्ति। स्वर=सुन्दर ध्वनि। सुसज्जित=सजा हुआ कल्पना=अनुमान करना। ऐश्वर्य=सम्पदा। आह्वान=पुकार।

भावार्थ—मैं उस प्यास के समान नहीं हूँ जो पूर्ण तृप्ति चाहती हो। मेरा हृदय सुन्दर ध्वनि से पूर्ण मधुर संगीत भी नहीं चाहता। मैं वह सौन्दर्य भी नहीं हूँ जो संसार की प्रशंसा द्वारा अपने गर्व को तृप्त करना चाहे। मैं कल्पना के सहारे सुख सम्पदा के चित्र भी नहीं आँकता।

चाहता हूँ संसार मीठा।

शब्दार्थ—सतत=निरन्तर। अधर-उपहार=ओठों की भेंट, चुम्बन। उपचार=चिकित्सा।

भावार्थ—मैं यह भी नहीं चाहता कि मेरा जीवन सदैव यौवन के मधुर उल्लास से भरा रहे। मैं यौवन के उपहार स्वरूप चुम्बनों की भी कामना नहीं करता। मैं तो संसार के दुखों की जलन को मिटाने का उपचार करना चाहता हूँ और यह भी चाहता हूँ कि यह सारा दुखी संसार यौवन के मधुर सुख से भर जाए।

यह कि जीवन सिक्त कर दूँ।

शब्दार्थ—सरपट=तेजी से। विवशता=लाचारी। मरघट=शमशान स्थल। स्नेह=प्रेम। अभिषिक्त=स्नान कराना। सिक्त=गीला।

भावार्थ—मैं उस स्थान पर अपने जीवन को तेजी से लेजाना चाहता हूँ जहाँ कि मनुष्य जीवन किसी प्रकार की लाचारी से नहीं भरा हुआ हो। मनुष्य अपने अधिकारों से बंचित न हो। मैं जगत के प्राणों को प्रेम से भर देना चाहता हूँ। मानवता के पथ को अपने जीवन से सजाकर उसे ऐसे सुख से भर देना चाहता हूँ, जिसका कभी विनाश न हो।

प्राण में त्रास जागा।

शब्दार्थ—अनुरक्त=प्रेम। रवानी=तेजी। अङ्गार=आग के शोले। कंकाल=अस्थिपंजर। हास=हास्य, हँसी। त्रास=दुख।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Shank Sharma Abhimanyu काव्यतीर्थ, वेदान्तशास्त्री

भावार्थ—विश्व जीवन में प्रेम का स्पंदन भरता हुआ हे मेरे जीवन तेजी से गतिशील बन। हे मेरी जवानी क्रांति की ज्वालाओं से अपना शृंगार कर। गरीबों की झोंपड़ियों में जो शोषित और निर्धन जनों के मृत प्रायः जीवन पले हुए हैं, उनमें भी जीवन का आनन्द जाग उठा है। आज हृदय को करुणा से विचलित करने वाला दुख युग के शोषित रूप को देखकर उमड़ उठा है।

लाश को ... आकार जागा।

शब्दार्थ—गतिमय=जीवन युक्त। प्रलय=विनाश। जर्जरों=पुराने पड़े हुए, टूटे-फूटे। वज्र की शक्ति=अतुल शक्ति। नव सृष्टि=नया संसार। आकार=रूप।

भावार्थ—क्रांति का विध्वंश राग आज लाशों में भी जीवन शक्ति भर रहा है। शोषण के प्रहारों से जो जर्जर बन चुके थे उनमें भी वज्र के समान अतुल शक्ति वाला विश्वास जग उठा है। आज का युग पराजित हो रहा है। उसकी पराजय नवयुग की विजय का रूप ले रही है। आज के युग के विध्वंश पर नए युग के स्वरूप का निर्माण हो रहा है।

बुझ न पाएगी ... खड़ा है।

शब्दार्थ—जलन=आग, दुख। पिपासा=प्यास। मूक=शांत। अश्रु=आँसू। वेदना=दुख। दास=गुलाम। क्षार=राख। कल=भविष्य। आज=वर्त्तमान।

भावार्थ—आज के इस युग से मैं संघर्ष कर रहा हूं। जब तक यह संघर्ष समाप्त नहीं होगा, मेरे हृदय की जलन शांत नहीं बनेगी। मेरे हृदय की प्यास नहीं बुझ पायगी, और न मेरे हृदय की वाणी मौन बनेगी।

उठो संसार के छाए हुए दुख को नष्ट करदो। दुख से सजल विश्व की आँखों के आँसू पोंछ उसके हृदय को सांत्वना प्रदान करो। संसार के मनुष्यों को दूसरों की पराधीनता से मुक्त करो। देखो, आज का यह युग पराजित होकर मिट्टी में मिला तुम्हारे पैरों पर पड़ा हुआ है। जिस सुन्दर भविष्य की तुम कल्पना किया करते थे वह आज वर्त्तमान बनकर तुम्हारे सामने आगया है।

वरण करता ... मेरी जवानी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शब्दार्थ—वरण=अङ्गीकार।

भावार्थ—वही वीर स्वर्ग को प्राप्त करने का अधिकारी है जो मृत्यु से भी भयभीत नहीं होता। मृत्यु से वीर मरते नहीं हैं, वरन् मृत्यु तो वीर को अमरत्व प्रदान करती है। आजका सच्चा जीवन यही है कि मृत्यु से खिलवाड़ करते हुए आगे बढ़ें। आज की पुकार भी यही है।

हे मेरी जवानी उठ, क्रांति की ज्वालाओं से अपना शृंगार कर।

श्री हरिवंशराय बच्चन

स्वप्न भी ... शरण भी।

शब्दार्थ—जागरण=जगना। छल=धोका। भूत=बीता हुआ संसार। जल्पना=कोरी बकवाद। कल्पना=अनुमान। भ्रम=धोका, संशय। शरण=सहारा।

भावार्थ—यहाँ सोने और जागने दोनों में ही धोका है। न तो सोकर ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है, और न जागने से ही कुछ लाभ है। बीते हुए युग की बातें कोरी बकवाद हैं। उन्हें प्रत्यक्ष रूप से किसने देखा है? भविष्य के बारे में भी कल्पना ही की जा सकती है। यह वर्त्तमान भी संशय से पूर्ण है। इसका सहारा भी धोके से भरा हुआ है।

स्वप्न भी ... वरण भी।

शब्दार्थ—मनुज=मनुष्य। वरण=स्वीकार।

भावार्थ—न तो सोने में ही लाभ है, और न जागने में ही कुछ वास्तविकता है। मनुष्य भी यहाँ अपने अधिकारों से वंचित है। वह इतना लाचार है कि न तो किसी बात के लिए इन्कार ही कर सकता है और न उसे स्वीकार ही।

स्वप्न भी ... मरण भी।

शब्दार्थ—थाम गर्दन=विवश बनाकर।

भावार्थ—न तो सोने में ही कुछ वास्तविकता है, और न जागने में ही कुछ लाभ है। मैं यह भी नहीं जानता कि कौन बलात् मेरे जीवन को अपने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिकार में करके मुझे यह कहने के लिए विवश कर रहा है कि यहाँ जीना भी व्यर्थ है और मृत्यु भी बेकार है। न तो जीकर ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है और न मृत्यु द्वारा ही।

स्वप्न भी ... अशोभन।

शब्दार्थ—निमंत्रण = बुलाना। तम=अन्धकार। विनिर्मित=बना हुआ। ज्वलित=जलते हुए। अगणित=असंख्य। स्वप्न=सपने। शोभन=भले। अशोभन=बुरे।

भावार्थ—न तो सोने में ही कुछ लाभ है, और न जागने में ही। निशा आज सोने का निमंत्रण दे रही है। रात्रिकाल का महल अन्धकार से बना हुआ है। इस महल में तारे रूपी असंख्य दीप प्रकाशमान हो रहे हैं। निद्रा इस रात्रि रूपी महल के दरवाजे हैं। (जिस प्रकार मकान में प्रवेश करने से पूर्व दरवाजों से प्रवेश करना पड़ता है, उसी प्रकार रात्रि रूपी महल में प्रवेश, करने से पूर्व नींद के दरवाजों में से होकर गुजरना पड़ता है। ये निद्रा के द्वारों की शोभा स्वप्नों के अनुसार सुन्दर है और असुन्दर भी।

अब निशा ... नियन्त्रण।

शब्दार्थ—भूत=बीता हुआ समय। भावी=भविष्य। तज = त्यागना। नियन्त्रण=बंधन।

भावार्थ—अब निशा सोने के लिए निमंत्रण दे रही है। निद्रित अवस्था में भूतकाल, भविष्य और वर्त्तमान सब एक रूप बन जाता है। भूत, भविष्य और वर्त्तमान में कोई भेद नहीं रहता। उस रात्रि के महल में मनुष्य पर देश, काल और समाज का कोई बन्धन नहीं रहता। मनुष्य इन सब बन्धनों से मुक्त बनकर निद्रा मग्न हो जाता है।

अब निशा ... निमन्त्रण।

शब्दार्थ—प्रवंचन=धोका।

भावार्थ—अब निशा सोने का निमंत्रण दे रही है। निद्रा में मग्न हो कर सपनों के बीच अपनी असम्भव कल्पनाओं को तू सत्य का रूप दे। पर हे भोले मानव! निद्रा के सपने तो क्षणिक और अवास्तविक हैं। फलतः हे भोले मानव तुझे बहुत बड़ा धोका दिया जा रहा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निशा सोने का निमंत्रण दे रही है।

× × ×

तब रोक अरमान हँसा।

शब्दार्थ—मृगजल=मृग मरीचिका, रेगिस्तान में मृग बालू के चमकते हुए कणों को नदी की लहर समझकर पानी की तलाश में इधर-उधर भटकता हुआ फिरता है, अन्त में कहीं भी उसे पानी की प्राप्ति नहीं होती! परिवर्तित=बदलकर। अरमान = अभिलाषाएँ।

भावार्थ—जिन हृदय की अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए मैं जीवन भर पागल के समान भटकता फिरा, परन्तु जब उन्हीं अरमानों ने मुझे धोका दिया और मेरे जीवन का उपहास किया तभी हृदय वेदना से व्याकुल हो उठा। मैं अपनी आँखों से आँसू नहीं रोक पाया।

तब रोक गान हँसा।

शब्दार्थ—अजर = जो कभी पुराना न हो। विस्मृति=भुलाना।

भावार्थ—जिस संगीत को अपने प्राणों में भरकर मैंने अपने जीवन को चिरनवीन और अमरता का रूप प्रदान करना चाहा था, वही गान जब भूली हुई स्मृति बनकर मेरे जीवन का उपहास करने लगा तभी मेरा हृदय वेदना से व्याकुल हो गया और आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी।

तब रोक मैं आँसू।

शब्दार्थ—आराधन=तपस्या। समर्पण=सौंपना। पाषाण=पत्थर।

भावार्थ—जिसकी मैंने सदैव पूजन और आराधना की। जिसके प्रति मैंने अपने जीवन को समर्पित कर दिया वही पत्थर की मूर्ति मेरी पूजा और साधना को मेरी कमजोरी बतलाकर मेरे जीवन का उपहास करने लगी तभी मैं अपनी आँख के आँसुओं को नहीं रोक पाया।

+ + +

लहर सागर विकलता है।

शब्दार्थ—शृंगार=शोभा। विकलता=दुख। अनिल=वायु। अम्बर=आकाश। खिलवार=खेल। साकार=प्रत्यक्ष रूप में। सुसज्जित=भली प्रकार से सजा हुआ। मृत्तिका = मिट्टी। गंध=सुगन्ध। कलिका=कली। उद्गार=

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावनाएँ। मधुवन=सुन्दर उपवन। गलहार=गले का हार, प्रिय वस्तु। ऋतु-पति=ऋतुओं का राजा वसंत। मनुहार=अनुनय-विनय। राग=संगीत की ध्वनि। आधार=सहारा। विनिर्मित=बना हुआ। उपहार=भेंट।

भावार्थ—समुद्र की उठती हुई लहरें समुद्र की शोभा नहीं हैं वरन् समुद्र के दुख का प्रतीक हैं। यह आकाश में बहती हुई वायु आकाश की विनोद-क्रीड़ा न होकर उसके दुख को प्रकट करने वाली है। विविध प्रकार के शोभाय-मान पदार्थों से भरा हुआ यह संसार मिट्टी का है। परन्तु संसार का यह मिट्टी रूप उसकी विकलता को प्रकट करने वाला है। कली से निकलने वाला पराग उसके हृदय की उल्लास भरी भावनाओं का परिचायक न होकर उसके हृदय की वेदना को प्रकट करने वाला है। उपवन में खिला हुआ फूल उपवन की प्रिय वस्तु नहीं, बल्कि उसकी विकलता का परिचायक है। कोयल अपने गीतों से मानो बसंत की मनुहार कर रही है, यह समझकर कि उसका व्यवहार बसंतऋतु को उचित नहीं मालूम दिया। परन्तु यह कोयल की मनुहार न होकर उसके हृदय की वेदना है। गायक के गीत उसके जीवन निर्वाह के साधन न होकर उसके हृदय की वेदना को प्रकट करने वाले हैं। वीणा से निकलने वाले संगीत की मधुर ध्वनि भी उसकी वेदना को व्यक्त करने वाली है। कवि के हृदय की अनुभूतियों से भरे, और प्राणों से अनुप्राणित गीत संसार को दी जाने वाली भेंट नहीं है, वरन् उसके दुखों का प्रतीक हैं।

श्री सियारामशरण गुप्त

पृथ्वी

ओछा।

खुली दिवा

शब्दार्थ-दिवा=दिवस। दीपित=प्रकाश से आलोकित। तिमिर=अंधकार चारिणी=विचरण करने वाली। अभया=निर्भीक। निशा=रात्रि। अवनी=पृथ्वी। व्यापक=फैला हुआ। अतुला=अतुलनीय। निसंकोच=जिसका विस्तार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संकुचित न हो। मापदंड=नाप।

भावार्थ—इस पृथ्वी की यदि कुछ दिशाएँ दिवस के प्रकाश से आलोकित हैं तो दूसरी ओर अन्धकार में विचरण करने वाली अर्द्ध रात्रि भी छाई हुई है। यह पृथ्वी बहुत व्यापक है। इसके विस्तार की कहीं तुलना नहीं की जा सकती। यह धरती इतनी व्यापक है कि सूर्य की किरणें भी यहाँ पूर्ण रूप से नहीं फैल पातीं। वे भी ओछी रह जाती हैं।

यहाँ उच्चगिरि ... यह धरणी।

शब्दार्थ—उच्चगिरि=ऊँचे पर्वत। विस्मय=आश्चर्य मय। अथाह=गहरे। अतल=पाताल। तन्मय = लीन। हरित=हरा भरा। नवलाँचल=नया वस्त्र। पुष्पा=फूल। मरुस्थल=रेगिस्तान। दिग्वसना=दिशाएं ही जिसका वस्त्र है, अर्थात नंगी। धरणी=पृथ्वी।

भावार्थ—विस्मय से भरे बड़े बड़े पहाड़ जहाँ एक ओर इस पृथ्वी पर स्थित हैं वहीं दूसरी ओर यह पृथ्वी पाताल के समान गहरे रूप में लीन है। यह पृथ्वी शश्यश्यामला और फल फूलों से लदी हुई है। दूसरी ओर अपने रेगिस्तानी प्रदेश में यह फल फूलों से रहित नग्न दृष्टिगोचर होती है मानो उसके मुख पर दुख की कालिमा छाई हो।

केसर रंग ... प्राँतर में।

शब्दार्थ—दिव्य=अलौकिक। दिगंचल=दिशाओं रूपी वस्त्र। घन-तम=घना अन्धकार। दोहर=चादर। आवृत=ढका हुआ। पटल=वस्त्र। अविचल=स्थिर। स्वजन=बन्धु बाँधव। संकुला=घना, भरा हुआ। गेहनी=गृहणी। विलग=अलग। विजन=जन रहित। प्रान्तर=जंगल।

भावार्थ—इस पृथ्वी का कोई दिशा रूपी वस्त्र यदि केसर के समान सूर्य के सुनहले रग में डूबा हुआ है तो दूसरी ओर रात्रि के घने अन्धकार की चादर में इस पृथ्वी की दिशाएँ लिपटी हुई हैं। नगरों और गांवों में जहाँ यह पृथ्वी स्वजन बन्धुओं से घिरी हुई गृहणी का रूप धारण किए हुए है, वहीं दूसरी ओर एक तपस्विनी भी भांति वन उपवन के शान्त और निर्जन प्रदेश में यही पृथ्वी दिखलाई देती है। इस प्रकार कहीं तो इस पृथ्वी पर बड़े बड़े नगर और गाँव हैं जहाँ मानव समुदाय कुटुम्ब रूप में निवास करता है, वहीं दूसरी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओर इस पृथ्वी पर निर्जन स्थान है जहाँ कोई भी नहीं रहता।

देखा है दृष्टि हमारी।

शब्दार्थ—वेशों=रूपों । अखण्डिता=जिसके टुकड़े न किए जा सकें, अविभाज्य ।

भावार्थ—इस प्रकार यह पृथ्वी हमें अनेक रूपों में दिखलाई पड़ती है। विविध देशों के रूप में यह अविभाज्य पृथ्वी बंटी हुई है। जितनी भूमि हमारे अधिकार में होती है उसे हम अपना बतलाते हैं। परन्तु हम समस्त पृथ्वी को अपना नहीं समझते। यही हमारा संकुचित दृष्टिकोण है। यह सब पृथ्वी तो एक ही है। इस पर जितने मानव प्राणी रहते हैं, उन सबका ही इस पृथ्वी पर अधिकार है। अतएव संसार के समस्त मानव प्राणियों में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं होना चाहिये।

निवेदन

भर लाओ पट में।

शब्दार्थ—घट=घड़ा, यहाँ जीवन से अभिप्राय है। लपकी=तेजी से। अवसन्न=मूर्च्छित, बेसुध। अचेतन=विवेक शून्य, ज्ञान रहित। अधमेन्धन=पतन शील होना, पाप के गर्त्त में गिरना। चुम्बन-आलंगिन=चुम्बन का स्पर्श। अम्बर पट=वस्त्र।

भावार्थ—तुम इस जीवन रूपी घड़े में मंगलमय भावनाओं का अमृत भर लाओ। क्योंकि तुम्हारे जीवन को अपनी आग से जलाने के लिए पाप की ज्वालाएं तेजी से तुम्हारी ओर बढ़ी आ रही हैं।

इस प्रकार अपने पापों की गति से बेसुध और विवेक शून्य होकर तुम अपने जीवन को पतन के गर्त्त में गिरा दोगे। अभी अभी तुम्हारे वस्त्रों से चुम्बन का स्पर्श हुआ है। इसलिये सावधान बनो, और अपने जीवन रूपी घड़े में जीवन की कल्याणकारी भावनाओं का अमृत जल भर लाओ।

सर के भीतर तट में।

शब्दार्थ—उजागर=प्रकाशमान । नारायण=ईश्वर, भगवान। आगर=घर। बद्ध विनय=विनय से झुका हुआ । विस्तृत=फैला हुआ। सीमित तट=बंधे हुए किनारे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—मनुष्य तो परमात्मा का रूप है। उसका हृदय ईश्वर का स्थान है। इस प्रकार मनुष्य के हृदय में अमरता का प्रकाश भरा हुआ है। जिस प्रकार विशाल समुद्र अपने किनारों के बन्धन में सीमित रहता है, उसी प्रकार शरीर के बन्धन में यह अमरता का प्रकाश सीमित रूप रहता है।

किसकी रसनाएँ ज्वलन संकट में।

शब्दार्थ—रसनाएं=वासनाएं। उच्छृखंल=स्वच्छन्द, नियन्त्रण रहित। तृष्णा = प्यास। वश=अधिकार। विह्वल = व्याकुल। विकट=कठिन, ज्वलन= आग।

भावार्थ—हृदय की ये वासनाएँ भी कितनी स्वच्छन्द है। इन पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। ये अपनी मनमानी करती हैं। ये वासनाएँ अपनी पिपासा को बुझाने के लिये मानव जीवन को अधीर और व्याकुल बनाए हुए हैं। इधर जीवन को अपनी आग से जलाने के लिये पाप की ज्वालाएँ तेजी से बढ़ती चली आ रही हैं। अतएव ऐसी विषम परिस्थिति में इन वासनाओं की आग को कुछ तो शीतल करो। इन इच्छाओं का कुछ तो दमन करो।

अपने इस आत्मा रूपी घड़े में अमरता का जल भर लाओ।

एक फूल की चाह

उद्वेलित अशान्त।

शब्दार्थ—उद्वेलित=तरंगित। अश्रु राशियाँ=राशियों का समूह। धधका कर=जला कर। महामारी=चेचक का रोग। प्रचण्ड = अधिक तीव्र। मृतवत्साओं=ऐसी माताऐं जिनके पुत्र मर चुके हैं। दुर्दान्त=जिसे दबाना बहुत कठिन है। नितान्त=बिल्कुल। कृशरव = क्षीण स्वर।

भावार्थ—चारों ओर चेचक का भीषण रोग फैल रहा था। समस्त जन समुदाय करुण क्रन्दन कर रहा था। उनके हृदय दुःख की ज्वालाओं से जल रहे थे। ऐसी माताओं का आर्तनाद, जिनके कि बालक मृत्यु का शिकार बन चुके थे तथा रोते रोते जिनके गले पड़ चुके थे अपने क्षीण स्वर में भी अत्यन्त दुर्दान्त हाहाकार भरे हुए था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत रोकता ... इस बार उसे।

शब्दार्थ—पल भर=थोड़े समय के लिये। निहार=देखकर।

भावार्थ—मैं सुखिया को बाहर खेलने के लिये अनेक बार मना कर चुका था किन्तु वह दिन भर बाहर ही खेलती रही और घर पर थोड़ी देर भी नहीं ठहरती थी। उसे बाहर जाते हुए देखकर मेरा हृदय डर से काँप उठता था कि कहीं वह भी चेचक के भीषण रोग की शिकार न बन जाय। इस बार सुखिया रोग के प्रकोप से बच जाय, मैं भगवान से सदैव यही विनय करता था।

भीतर जो डर रहा ... दो लाकर।

शब्दार्थ—तनु=शरीर। तापतप्त=बुखार से गर्म। ज्वर=बुखार। विह्वल=व्याकुल।

भावार्थ—मेरे हृदय में जो डर था, वही सत्य बन कर सामने आया। एक दिन मैंने सुखिया के शरीर को ज्वर से पीड़ित पाया। ज्वर की बेचेनी में न मालूम किस डर से भयभीत होकर सुखिया ने कहा मुझ को देवी के प्रसाद का एक फूल कहीं से लाकर दो।

बेटी बतला ... जाने देगा।

शब्दार्थ—भाव=विचार।

भावार्थ—हे बेटी! बतलाओ तो सही तेरे हृदय में यह देवी के प्रसाद के के फूल का विचार कहाँ से आया। किसने तुझे इस विषय में बतलाया है। मैं तो अछूत हूँ। मेरा मन्दिर में जाना मना है। फिर भला देवी के मंदिर में मुझे कौन घुसने देगा। देवी के प्रसाद का फूल मैं कैसे ला सकता हूँ।

बार बार ... व्यथा नई।

शब्दार्थ—हठ=जिद्द। कुसुम समान=फूलों जैसी। तप्त अङ्गार मयी=अङ्गारों की तरह गर्म। प्रतिपल=प्रत्येक क्षण। विपुल=बहुत। वेदना=दुख।

भावार्थ—तू बार बार देवी के प्रसाद के लिये हठ कर रही है। लेकिन मैं तेरे इस हठ को पूरा किस भांति करूँ? तुम्हारे इस हठ की बात किससे कहूँ कौन मुझ अछूत को इसका उपाय बतायेगा। कौन मेरी सहायता करेगा। फूल के समान तेरी कोमल देह ज्वर के प्रकोप से अङ्गारों की तरह जल रही है। प्रत्येक क्षण शरीर की वेदना बढ़ती जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मैंने कई फूल ... दो लाकर।

शब्दार्थ—बहलाकर=राजी कर।

भावार्थ—यह विचार कर कि सुखिया अनेक प्रकार के रंग विरंगे फूलों को देखकर मान जायगी। मैंने अनेक फूल उस के सामने लाकर रख दिये लेकिन उसने सब फूल तोड़ मरोड़ कर फैंक दिये और वह चिल्लाकर बोली कि मुझको देवी के मन्दिर का एक फूल लाकर दो।

क्रमशः कंठ क्षीण ... संध्या गहरी।

शब्दार्थ—क्रमशः=धीरे धीरे। कण्ठ=गला। शिथिल=ढीले। अवयव=शरीर के अंग। मन मारे=उदास होकर। प्रभात=सुबह। सजग=चहल पहल भरी। अलस=आलस से भरी हुई। स्वर्णघनों=सोने के समान बादलों।

भावार्थ—धीरे धीरे सुखिया का गला धीमा पड़ गया। शब्द ध्वनि क्षीण होगई। उसके शरीर के समस्त भाग शिथिल पड़ गये। मैं उसके पास बैठा हुआ नये नये उपायों को सोचने में लगा हुआ था कि किस प्रकार सुखिया के लिये देवी के प्रसाद का फूल लाऊँ। इस प्रकार सोच विचार करते हुए चहल पहल से भरा प्रभात कब समाप्त हो गया। कब दोपहरी आई और वह भी व्यतीत होकर कब संध्या के गहरे अन्धकार में बदल गई और कब सूरज की सुनहली किरणें आकाश में छिप गई यह मैं नहीं जान सका।

सभी ओर दिखलाई ... जगते तारों से।

शब्दार्थ—ग्रसने=खाने। तिमिर=अन्धकार। विस्तृत=लम्बा चौड़ा।

भावार्थ—चारों ओर अंधकार ही अन्धकार दिखलाई दे रहा था। इस अंधकार की काली छाया क्या बच्ची के कोमल प्राणों को लेने आई है। ऊपर विशाल आकाश में जगमगाते हुए तारे धधकते हुए अङ्गारों की भाँति प्रतीत होते थे और जिन्हें देखकर हृदय में एक वेदना होती थी।

देख रहा था ... दो लाकर।

शब्दार्थ—सुस्थिर=शान्त। अटल=न टलने वाला। धारण कर=अंगीकार कर, लेकर। उकसा कर=उत्तेजित कर।

भावार्थ—जो कभी क्षण भर के लिये भी घर में शान्त नहीं रहा करती थी सदैव खेल कूद में मग्न रहती थी आज वह निश्चल और शान्त बनी ज्वर में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पड़ी हुई थी। मैं उसी के मुख से फिर वही ध्वनि सुनना चाहता था कि मुझ को देवी के प्रसाद का एक फूल ही लाकर दो।

हे मात हे शिवे ... में ही हाय यहाँ।

शब्दार्थ—ताप्त ताप = ज्वर की पीड़ा। निरपराध = निर्दोष। हरो = छीनो। काँति = चमक। अटक रहे हैं = उलझे हुए हैं। क्षीणता = बहुत, अधिक दुर्बल।

भावार्थ - हे शिवा और अम्बिका अपनी कृपा के प्रसाद से तुम इस बच्ची के ज्वर की पीड़ा को दूर करो। इस निर्दोष बालिका को मेरे हाथों से न छीनो। हँसी की चमक से खिला रहने वाला इसका चेहरा अब काला पड़ गया है। इसके प्राण साँसों में अटक रहे हैं। मृत्यु मुँह फैलाये बच्ची के निकट आती जा रही है।

अरी निष्ठुरे ... श्री मंदिर को छूत।

शब्दार्थ—निष्ठुरे = दया रहित। तृषा = प्यास। नितान्त = बिल्कुल बहुत, अधिक। अपून = अपवित्र।

भावार्थ—हे हृदय हीन मृत्यु यदि दूसरों के प्राण हरण करने की इच्छा तेरे हृदय में अधिक बलवती हो रही है तो तू इसी समय मेरे प्राण लेकर अपनी मनोकामना पूरी कर ले, लेकिन बच्ची के प्राणों का अन्त मत कर। मैं अछूत हूँ तो क्या इससे मेरी विनय भी अपवित्र हो जायगी ? क्या मेरी प्रार्थना से भी हे मृत्यु तुझे छूत लग जायगी।

अरी रात ... प्रलय घटा सी छाई तू।

शब्दार्थ—अपार = विशाल, बहुत अधिक। अक्षयता = कमी समाप्त न होना। पट्टा = ठेका। अखिल = सम्पूर्ण। प्रलय घटा = विनाश के बादलों की तरह।

भावार्थ—कौन कह सकता है कि मेरी प्रार्थना को मृत्यु के कानों ने सुना अथवा नहीं सुना ? सागर के समान विशाल मृत्यु का मुझे कोई छोर नहीं दिखलाई पड़ा है। रात तू क्या कभी समाप्त न होगी। आज तू विनाश की घटा बनकर समस्त संसार पर छाई हुई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पग भर भी   कुछ तो बेटी।

शब्दार्थ—डट कर = अड़कर। अरुण आभा = सूर्य का प्रकाश। विकृति = परिवर्तन।

भावार्थ—हे रात्रि आज तू हटने का नाम भी नहीं लेती। क्या आज प्रातः काल न होगा हे बेटी आज तेरा यह बदला हुआ रूप कैसे है। इतना समय व्यतीत हो गया है लेकिन फिर भी तू इसी प्रकार शान्त बन कर एक करवट से लेटी हुई हे बेटी कुछ बोल तो सही।

वह चुप थी   एक फूल ही दो लाकर

शब्दार्थ—गिरा = वाणी, बोलने की ताकत। गगन = आकाश।

भावार्थ—सुखिया चुप थी परंतु उसकी वाणी से निकली हुई ध्वनि अब भी शून्य में गूँज रही थी कि तुम मुझको देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर दो।

कुछ हो देवी के   कौन मुझे।

शब्दार्थ—इष्ट = चाहा हुआ अधिकार।

भावार्थ—आज प्रातःकाल होते ही मैं मन्दिर में जाकर अवश्य देवी के प्रसाद का फूल लाऊँगा। यह मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया। हृदय में कोई पुकार पुकार कर मुझसे कह रहा है कि तुझ पर देवी की कृपा है। मुझे भी देवी के प्रसाद के फूल लेने चाहिये। मंदिर में जाने से तुझे कोई नहीं रोक सकता।

मेरे इस निश्चल   सुध बुध सी खोकर।

शब्दार्थ—निश्चल = स्थिर, जमा रहने वाला। अरुण राग = लालिमा। रंजित = रंगा हुआ। भाल = मस्तक। नभस्थल = आकाश। तारकावलि = तारों की पंक्तियाँ। म्लान = मुरझाना। निष्प्रभ = प्रकाश हीन। नीड़ों = घोंसलों। सुध-बुध खोकर = अपने को भूल कर।

भावार्थ—मेरे इस अटल विश्वास ने मेरे हृदय के भार को हलका कर दिया। मैंने ऊपर देखा तो आकाश लालिमा से आरक्त दिखलाई पड़ा। प्रभात हो चुका था। म्लान और प्रकाशहीन तारों के समूह आकाश में विलीन हो गये थे। पक्षी गण प्रभात हुआ जान प्रसन्नता से अपने को भूल कर घोंसलों से बाहर निकल पड़े।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रस्सी डोल हाथ .... पूजा की थाली ।

शब्दार्थ—सलिल सुधा = अमृत के समान जल । तनु = शरीर । उज्ज्वल = स्वच्छ । अशुचि = मलिनता । ग्लानि = संकोच, शिथिलता ।

भावार्थ—रस्सी और डोल लेकर मैं कुऐं पर जा पहुँचा । अमृत के समान शीतल जल से मैंने स्नान किया । घर आकर साफ कपड़े पहने और हृदय से समस्त मलिन संकोच के भाव मिटा दिये । एक थाली में चंदन, पुष्प, कपूर, धूप आदि पूजा की सामिग्री सजाली ।

सुखिया के सिरहाने .... कुछ दूरी पर ।

शब्दार्थ—सिरहाने = सिर के निकट । अशुचिता = अपवित्रता ।

भावार्थ—मैं धीरे से सुखिया के सिर के निकट जाकर खड़ा हो गया सुखिया की पलकें बन्द थीं और चेहरा मुरझाया हुआ था । मेरे हृदय में उसे प्यार से चूमने की इच्छा उठी किंतु इस डर से कि कहीं अपवित्र न हो जाऊं मैं अपने वस्त्रों को ठीक करता हुआ कुछ दूरी पर ही सिमट कर खड़ा रहा ।

वह कुछ कुछ .... फूल तो दूँ लाकर ।

शब्दार्थ—सहसा = अचानक । लग्न = लगी हुई । मुद मग्न = आनंद से भरा हुआ । अक्षय = असमर्थ ।

भावार्थ—न जाने किन सपनों के संसार में विचरती हुई सुखिया सहसा नींद में ही मुस्कराई । हाय उसकी वह मुसकराहट भी मुझे हर्षित न कर सकी । हे बेटी क्या तू मुझे देवी का प्रसाद लाने में असमर्थ समझ कर मेरी हंसी कर रही है । मैं अब तेरी ही आज्ञा का पालन करने के लिये ही मन्दिर जा रहा हूँ । वह कुछ नहीं बोली तब मैंने ही धैर्य भरे शब्दों में उससे कहा कि मैं ही तुझे देवी का प्रसाद लाकर दूँगा ।

ऊँचे शैल शिखर .... मधुर गान कर कर ।

शब्दार्थ—शैल = पहाड़ । शिखर = चोटी । विस्तीर्ण = बहुत लम्बा, सरसिज = कमल । विहँसित = खिले हुये । समुदित = प्रसन्न । रविकर जाल = सूर्य की किरणों का समूह ।

भावार्थ—ऊँचे पर्वत की चोटी के ऊपर एक मन्दिर अत्यन्त विशाल बना हुआ था । जिस प्रकार किरणों को छू कर कमलदल प्रफुल्लित होता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी भाँति सूर्य की किरणों के समूह के स्पर्श से मंदिर के स्वर्ण कलश जगमगा रहे थे। मंदिर के निकट ही एक झरना कल कल स्वर से मधुर शब्द ध्वनि करता हुआ तथा मंदिर की परिक्रमा करता हुआ पर्वत के ऊपर से झरता था।

पुष्प हार सा जँचता उत्सव की धारा।

शब्दार्थ—त्रुटि = गलती, बुराई। उपकरणों = सामिग्री, सामान। आमोदित = हर्ष से भरा हुआ। मुखरित = बोलता हुआ।

भावार्थ—नीचे की ओर झरता हुआ वह झरना ऐसा प्रतीत होता था जैसे मंदिर के चरणों में किसी ने फूलों की माला डाल दी हो। देवी के मंदिर में पूजा की सामिग्री यथाविधि सजी हुई थी। उसमें किसी प्रकार की त्रुटि दृष्टि गत नहीं होती थी। समस्त मंदिर दीप धूप की शोभा से जगमगा रहा था। भीतर और बाहर समस्त स्थानों पर आनन्द और हर्ष की ध्वनि गूंज रही थी।

भक्तवृन्द मृदु-मधुर किस बल से ढिकला।

शब्दार्थ—मृदु मधुर कंठ = कोमल और मीठा गला। मुदमय = प्रसन्नता सहित। पतित तारिणी = पापियों को तारने वाली। पाप हारिणी = पाप को नष्ट करने वाली। ढिकला = आगे बढ़ा।

भावार्थ—भक्त लोग हर्ष, श्रद्धा और भक्ति सहित अपने कोमल और मधुर कंठ से देवी का गुणगान कर रहे थे। चारों ओर पतित तारिणी और पाप हारिणी देवी की जयध्वनि से मंदिर गूंज रहा था। 'पतित तारिणी' जय जय मेरे मुख से भी निकला और स्वतः न जाने किस शक्ति से मेरे पैर आगे की ओर बढ़ गये।

माता, तू इतनी तक आया है।

शब्दार्थ—विधि = नियम, निर्देश। श्री चरणों = देवी के चरणों।

भावार्थ—हे माता तू इतनी सुन्दर है यह मैं नहीं जानता था। मेरे पास जाने से तेरे अछूत पुत्रों को क्यों रोका जाता है। हे माता बतला तो सही तेरा यह कैसा नियम है। तूने स्वयं मुझे अपनी आज्ञा से बुलाया है। तभी तो इस पापी अछूत ने तुम्हारे पवित्र चरणों तक आने का साहस किया है।

मेरे दीप फूल पुण्य पुष्प दूँ जाकर मैं।

शब्दार्थ- अम्बा = देवी। अर्पित करना = देना। अंजलि = दो हथे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लियों को मिलाकर बनाया जाने वाला गड्ढा ।

भावार्थ--पुजारी ने मेरे दीप फूलों को लेकर देवी के चरणों में समर्पित कर दिया । तदनन्तर पुजारी ने अंजलि भर कर देवी का प्रसाद मुझे दिया । अत्यधिक सुख से भरा हुआ पाकर मैं अपने को भूल गया । मन में सोचा देवी के इन पवित्र फूलों के द्वारा बेटी की मनोकामना पूर्ण करूँ ।

सिंह पौर से भी मानुसों के जैसा ।

शब्दार्थ--सिंह पौर = मुख्य द्वार । धूर्त = चालाक, धोकेबाज । परिधान = वस्त्र कपड़े । मानुषों = मनुष्यों ।

भावार्थ--मैं अभी मन्दिर के आँगन के मुख्य द्वार तक पहुंच भी नहीं पाया था कि सहसा मुझे सुनाई पड़ा "यह अछूत भीतर कैसे चला आया ? यह कितना चालाक है । यहाँ स्वच्छ वस्त्र पहिन कर पूर्णतः भले मनुष्यों के सामान बन कर आ गया है । पकड़ो छूट कर भाग न निकले ।"

पापी ने मन्दिर महिमा के भी ।

शब्दार्थ--अनर्थ = कार्य की हानि, अनिष्ट । कलुषित = दूषित, मैली । चिरकालिक = बहुत लम्बे समय की । कलुष = पाप । गरिमा = गौरव । महिमा = महत्व ।

भावार्थ--इस पापी ने मन्दिर में घुस कर मन्दिर का बड़ा अनिष्ट कर दिया । मन्दिर की चिरयुगीन प्रतिष्ठा और पवित्रता को इसने दूषित बना दिया । "लेकिन क्या मेरा पाप देवी के गौरव से भी बढ़ कर है" क्या मेरे अछूत पन से देवी की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचेगा । क्या मेरे पाप की महिमा देवी की महिमा से भी बढ़ कर है ?

माँ के भक्त गिरा दिया ।

शब्दार्थ--खोटा = खराब । सम्मुख = सामने ।

भावार्थ--तुम देवी के भक्त होकर भी देवी के सामने ही उसका गौरव नीचे गिराने का कलुषित विचार हृदय में ला रहे हो । यह तुम्हारी भक्ति कैसी है । लेकिन मेरी इन बातों पर कोई ध्यान न देकर उन भक्तों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया और मुक्का, घूँसों की मार से मुझे नीचे गिरा दिया ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरे हाथों .... ले जाकर।

शब्दार्थ--सरल है।

भावार्थ--देवी का प्रसाद भी मेरे हाथों से नीचे गिर कर बिखर गया। मेरी अभागी बेटी सुखिया के पास अब उस प्रसाद को कौन ले जाकर दे। मैंने उन भक्तों से कहा कि तुम मुझे मार पीट कर कितना ही बड़ा दण्ड दो लेकिन देवी के इस प्रसाद में से एक फूल ले जाकर मेरी बच्ची को दे दो।

न्यायालय ले गये .... क्या कर।

शब्दार्थ—न्यायालय = अदालत। दण्ड विधान = सजा। असीम=बहुत अधिक। अभियोग = मुकद्दमा। दोष = अपराध।

भावार्थ—मुझे अदालत में ले जाया गया। सात दिन की जेल की सजा मुझे दी गई क्योंकि मैंने मन्दिर में घुसकर देवी का अनादर किया था। मैंने चुपचाप नत मस्तक हो उस दण्ड को स्वीकार किया। मेरे ऊपर लादे गये अपराध के आरोप का भला मैं क्या उत्तर देता।

सात रोज ही रहा .... गिरजाघर भी।

शब्दार्थ—अविश्रांत = बिना किसी विश्राम के। तनिक = थोड़ी। ममता =प्यार।

भावार्थ—जेल में केवल सात दिन ही रहा किंतु वे सात दिन मुझे सैकड़ों वर्षों के समान प्रतीत हुये। मैं रात दिन रोता रहा परन्तु फिर भी मेरी आखें रोते रोते नहीं थकीं उसके आँसू कम नहीं हुये। वह अबाध गति से रोती रहीं। साथ के कैदी गण कहते "क्या तुझे भगवान के दर्शन के लिये एक मदिर ही मिला था। वहीं पास मजजिद और गिरजाघर भी तो था वहीं जाकर भगवान की भक्ति कर लेता।

कैसे उनको समझाता .... तनु पंजर को।

शब्दार्थ—पीछे टेल रहा था = पीछे की ओर ढकेल रहा था। जर्जर = टूटा फूटा। पंजर = हड्डियों का ढाँचा, कंकाल।

भावार्थ—मैं उन कैदियों को किस भाँति समझाता कि किसी ममतावश मैं मंदिर नहीं गया था वरन मेरी पुत्री ने देवी के प्रसाद के फूल चाहे थे उन्हें ही लेने मन्दिर गया था। जब मैं सजा काटकर घर पहुँचा तो मेरे पैर घर की

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ओर नहीं उठते थे। ऐसा प्रतीत होता था जैसे कोई शक्ति डर से व्याकुल मेरे शिथिल कंकाल को पीछे ढकेल रही हो।

पहले की सी लेने ... उसे जहाँ।

शब्दार्थ—उलझी हुई = लगी हुई। परिचित = जान पहचान के। बन्धु = भाई। प्रथम = पहले।

भावार्थ—जब कभी मैं कहीं से घर लौटकर आता था तो मुझे मेरी बच्ची खेल में मग्न दिखाई पड़ती थी लेकिन आज ऐसा नहीं हुआ। उसे देखने के लिये मैं मरघट की ओर दौड़ता हुआ गया। मेरे साथियों ने मेरी बच्ची के शव को मेरे आने से पहले ही जला दिया था।

बुझी पड़ी थी चिता ... दे न सका मैं हा।

शब्दार्थ—सरल है।

भावार्थ—बच्ची की चिता बुझ गई थी। जिसे देखकर मेरे हृदय में दुःख की ज्वाला धधक उठी। हाय फूल के समान कोमल बच्ची आग की लपटों में जल कर राख बन गई। हे बेटी जीवन के अन्तिम समय में भी मैं तुझे अपनी गोद में न ले सका। देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर मैं तेरी मनोकामना पूर्ण न कर सका।

वह प्रसाद देकर ... फूल ही लाकर दो।

शब्दार्थ—पूर्ण = पूरी। दैव = ईश्वर। त्रिभुवन = तीनों लोक। विभव = संपदा, ऐश्वर्य। वर = वरदान।

भावार्थ—अपनी बच्ची को देवी का प्रसाद देने के बाद क्या मुझे सजा नहीं दी जा सकती थी? थोड़ी देर पश्चात् भी क्या मैं अपने जन्म-जन्म के पापों का दण्ड नहीं पा सकता था? यदि मैं देवी के मंदिर में जाकर देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर अपनी बच्ची की इच्छा पूर्ण कर देता तो हे ईश्वर क्या उस छोटे से एक फूल के रूप में, मैं समस्त त्रिलोक की सम्पदा लूट लेता? कोई मेरी पुकार पर ध्यान देकर देवी के प्रसाद का एक फूल लाकर दे दो। मैं उसे इसी चिता की ढेरी पर रख दूंगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्री भगवतीचरण वर्मा

यह अशाँत　　　　　　　　　　　　　　　　　　रोदन हो।

शब्दार्थ—कसक=वेदना, दुख। पंचम=कोयल का स्वर। मादक=मतवाली। मलय=मलय पर्वत से चलने वाली सुगन्धित पवन। उन्माद = पागलपन नशा। कलिका = कली। विस्मृत = भूला हुआ। सुरभित=सुगन्धित। क्रीड़ा= खेल, विनोद। पुलकित=हर्ष से भरे। करुणा=दया। रोदन=रुदन, रोना।

भावार्थ—कवि शाँत और निष्क्रिय जीवन नहीं चाहता। जीवन में सुख दुख दोनों का ही वह हामी है। कवि कहता है कि मेरा यह जीवन अशान्ति से भरा हुआ हो। इस जीवन में प्यार भी दुख की टीस से भरा हुआ हो। यौवन शान्ति और निश्चल न होकर नशे की भांति मतवालापन लिए हुए हो। कोयल का मधुर संगीत उन्मत्त बनाने वाला हो और मलय पवन जीवन में मस्ती भरती हुई बहे। अपने सौरभ में बेसुध खिलती हुई कलियों के उच्छ्वासों और सुगन्ध से यह उपवन महक रहा हो। मेरे हृदय में दिन रात हलचल भरी क्रीड़ाएँ भरी रहें। खुशी से झूमता हुआ मेरा जीवन कुछ दुख का भी अनुभव किया करे।

मैं एक ओर तो विनाश की ओर अग्रसर बनूं और दूसरी ओर निर्माण के पथ पर बढ़ता चलूं। यह विनाश और निर्माण का संघर्ष ही मेरे जीवन की गति बने। यह संसार सुख और दुख से भरा हुआ हो। इस प्रकार यह संसार उस खिलौने की भांति बन जाए जो कभी हंसता हो और कभी रोता हो।

× × ×

तुम लुटाती　　　　　　　　　　　　　　　　　　रंगिनि।

शब्दार्थ—उन्माद=पागलपन, नशा। मानस=मन, हृदय। विकम्पति= काँपते हुए। मौन=शान्ति। उन्मत्त = उन्माद कारी, नशे से भरा। मंथन = मथना। विकराल=भयंकर। अवलियाँ=समूह, पंक्ति। विंध=पिरोई हुई। रच रही=बना रही। सुकुमार=कोमल। सिहरन=कम्पन। रंगिनि=विनोद प्रिय युवती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे रंगिन तुम इस जीवन में कौनसा नशा भरती आ रही हो।

तुम्हें देखकर मेरा शान्त हृदय उन्मत्त होकर तरंगित हो रहा है, जैसे किसी ने इसे मथ दिया हो। ज्ञान के समस्त कठोर बन्धन अब ढोले पड़ गए हैं। भाव यह है कि तुम्हें पाकर मैं अपने समस्त ज्ञान और विवेक को भूल चुका हूँ। तुम्हारी मिलन की याद के सपने आज आँखों के आँसू बन चुके हैं। ये प्रेमाश्रु तुम्हारे स्वागत के लिए प्रेम की जयमाल की रचना कर रहे हैं। हे रंगिन तुम किस मिलन की याद के भाव मेरे हृदय में जगाती हुई आ रही हो। तुम कौनसा उन्माद आज बिखेरती हुई चली आ रही हो।

तुम बिछाती ... रंगिनि।

शब्दार्थ—छवि जाल=शोभा का समूह। चपल गति=चंचल गति। सौरभ=सुगन्ध। विसुध=बेसुध। नर्तन=नाच। स्वरों=शब्द, ध्वनि। चरणचुम्बन=चरणों का स्पर्श। अरुण=लाल रंग। पदतल=पैरों के नीचे का भाग। प्रभा=प्रकाश। रश्मियों=किरणों। शतशत=सौ सौ। शाश्वत=चिर काल तक बने रहने वाला, कभी नष्ट न होने वाला। मुग्ध=आसक्त, मोहित। सूत्र=डोरे।

भावार्थ—हे रंगिनि, तुम किस शोभा के समूह को बिखेरती हुई चली आ रही हो। तुम्हारी चंचल चाल से लिपटा हुआ सौरभ नृत्य करता हुआ सा प्रतीत होता है। भाव यह है कि तुम्हारा आगमन चारों ओर सौरभ फैला रहा है। तुम्हारे चरणों को चूमता हुआ तुम्हारे नूपरों के स्वर से मधुर संगीत गूंज रहा है। तुम्हारे लालिमा से आरक्त पैरों के प्रकाश की सौ सौ किरणों के तार शाश्वत यौवन की मधुर भावनाओं की रचना कर रहे हैं। भाव यह है कि तुम्हारे पैरों की लालिमा को देखकर हृदय में यौवन की उल्लास भरी भावनाएं जग उठती हैं। हे रंगिनी तुम्हारे सौन्दर्य की कल्पना के डोरों में ही यह दिशाएँ और समय सब बँधे हुये हैं। हे रंगिनी तुम किस शोभा का समूह बिखेरती हुई चली आ रही हो।

रच रही ... रंगिनी।

शब्दार्थ—पद चाप=पैरों की ध्वनि। प्रणय=प्रेम। पद=पैर। सिहर उठती=काँप उठती। सुप्त=सोई हुई। सृष्टि=संसार। केलिमय=आनन्द क्रीड़ा से युक्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रति=काम विलास। मदन=कामदेव। मानो=अभिमानी। आगत=भविष्य। लुप्त=छिपा हुआ। अतीत=बीता हुआ।

भावार्थ—तुम्हारे पैरों की ध्वनि, हे रंगिनि प्रेम के किन गीतों की रचना कर रही है।

तुम्हारे एक पैर में युग युग की सोई हुई प्रणय कहानी जाग उठती है। तुम्हारे दूसरे पैर में, सृष्टि के जो चिन्ह धुंधले पड़ चुके थे वे पुनः प्रकाशमान हो जाते हैं। (भाव यह है कि अब तक यह संसार नीरस और उदासीन प्रतीत होता था, परन्तु तुम्हारे आगमन से यह संसार भी सुखमय और आनन्द प्रद प्रतीत होने लगा है।) तुम्हारा एक पैर प्रकृति की कोमलता लिये हुये है, तो दूसरा पैर काम विलास की आनन्द प्रद क्रीड़ाओं को जगाने वाला है। तुम्हारे पैरों की ध्वनि सुनकर आज पुरुष हृदय में अभिमानी कामदेव जाग उठा है। तुम्हारे पैरों की आहट से मैं अपना अतीत और भविष्य सब कुछ भूल चुका हूँ।

हे रंगिनि तुम्हारे पैरों की ध्वनि प्रेम के किन गीतों की रचना कर रही है।

अलस नयनों .... भार रंगिनि।

शब्दार्थ—अलस=आलस्य से भरे। भार=बोझ। मधु=पराग। विकल=दुखी। पुलकित=प्रसन्न। मधुप टोली=भौंरों का समुदाय। कुहुक=कोयल का स्वर। मलय वातास=मलय पवन। उपहार=भेंट।

भावार्थ—हे रंगिनि तुम अपने इन आलस्य से भरे नेत्रों में किस विजय को छिपाए हुए हो।

कलिका के खिलते ही उसकी सौरभ से भरी हुई कलियाँ नीचे की ओर झुक गई हैं। कलियों के सौरभ से पागल बन कर भौंरों का समुदाय उन पर मंडरा उठा है। कोयल नीचे की ओर झुकी हुई आम की डाली पर कुहुकने लगी है। चारों ओर सुगन्ध फैलाती हुई मलय पवन बहने लगी है।

हे रंगिनि आज तुमने मुझे अपने प्यार के बन्धनों में बन्दी बना लिया है। परन्तु यह बन्धन तो मेरे लिए तुम्हारे प्यारका उपहार स्वरूप है। हे रंगिनि क्या यही विजय तुम अपनी आँखों में छिपाए हुए हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुछ सुन   कहाँ प्रिये।

शब्दार्थ---जीवन सरिता=जीवन की नदी। संयोग=मिलन।

भावार्थ---हे प्रिये, हमारा और तुम्हारा मिलन इस जीवन में क्षणिक ही है। मृत्यु के बाद न मालूम तुम कहाँ होगी और हम कहाँ रहेंगे। यह जीवन तो उस नदी के समान है जिसकी प्रत्येक लहर मिटने के लिए ही उठा करती हैं। इस प्रकार यह जीवन भी मृत्यु के लिए संसार में आता है। अतएव इस थोड़े से जीवन में हम तुम हिलमिलकर रहलें और एक दूसरे के दुखदर्द की बातें करें।

पलभर तो   भार प्रिये।

शब्दार्थ—अजान=अज्ञात। राही=पथ पर चलने वाले। सार=तत्व, वास्तविकता। दुःसह=कठिन। एकाकीपन=अकेलापन।

भावार्थ--इस जीवन में कुछ क्षणों के लिए तो हम साथ-साथ रहलें। एक दूसरे के दुख दर्द की बातें सुनें और कहें। एक दूसरे के सुख और दुख में हाथ बँटायें।

हम दोनों ही जीवन के अज्ञात पथ के राही हैं। हम नहीं जानते हमें कहाँ चलना है, आगे यह पथ कैसा है। फिर भी हमें आगे बढ़ते ही जाना है। इसमें ही जीवन की वास्तविकता है। परन्तु हे प्रिय इस जीवन राह पर अकेले चलना बहुत कठिन है। इसलिए आओ हम साथ-साथ इस मार्ग पर चलें।

पल भर   बोझ प्रिये।

शब्दार्थ—लय=लीन। उल्लास=सुख।करुणा=दुख। मृदुल=कोमल।

भावार्थ---हे प्रिये हम दोनों ही इस जीवन के क्षणों को हिलमिलकर हँसते खेलते हुए व्यतीत करें। एक दूसरे के दुख-दर्द में हाथ बँटायें। हम दोनों ही एक दूसरे में अपने को लीन करदें। तुम्हारा जीवन मेरा बन जाए और मेरा जीवन तुममें लय हो जाए।

जीवन के इन क्षणों का तो बस इतना ही मूल्य है, इतनी ही इनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सार्थकता है कि सुख और हर्ष के साथ इनको व्यतीत किया जाय। कभी इस जीवन में दुख के क्षण भी आयँगे और कभी कोमल प्यार के स्वर भी गूँजेंगे।

सौरभ से ... मिललें।

शब्दार्थ--सौरभ=सुगन्ध। लय=लीन। उपवन=बाग। मधुश्री=पराग। सुषमा=सुख, सुन्दरता। अनन्त=असंख्य।

भावार्थ- हे प्रिये आओ इस जीवन उपवन में बहती हुई सुगन्धि से अपने हृदय को भरलें। आओ हम एक दूसरे से मिल जाएँ। जीवन के इस अल्प समय में आओ जी भर कर मिलन का आनन्द उठाएँ।

जीवन के उपवन में यह जो सुख का पराग बरस रहा है। सरस बसंत का रूप लेकर यह जो यौवन का उल्लास जगा है, वह हमारे क्षणिक प्राणों में सदा के लिए बस जाए। इस उल्लास और सुख से भरी हमारे जीवन की साँसें फिर हे प्रिये अनन्त और असंखय बन जाएँ।

जिस प्रकार खिलता हुआ फूल एक दिन मुरझा जाता है, उसी प्रकार यह जीवन भी एक दिन नष्ट हो जायगा। फिर क्यों न हम फूल की भाँति खिल कर अपना जीवन व्यतीत करें। (क्यों कि इस जीवन को फूल की भाँति मुरझाना तो है ही।) हे प्रिये आओ इस क्षणिक जीवन में अपने मिलन के आनन्द का उपभोग करें।

× × ×

हम दीवानों ... चले अभी।

शब्दार्थ--दीवानों=पागलों। हस्ती=अस्तित्व। मस्ती=पागलपन, नशा। आलम=संसार। उल्लास=सुख, हर्ष।

भावार्थ--इस संसार में हम दीवानों का अस्तित्व ही क्या है? यदि आज यहाँ हैं, तो कल कहीं और स्थान पर चले जायँगे। हम जहाँ भी धूल उड़ाते चल देते हैं, मस्ती का संसार हमारे साथ चल पड़ता है। (दीवानों से कवि का तात्पर्य कवियों से है। कवि का कथन है कि कवि लोग इस संसार में धूल उड़ाते हुए चलते हैं, उन्हें किसी की परवाह नहीं होती। वे मस्ती से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपना जीवन व्यतीत करते हैं।) अभी हम संसार के उल्लास का रूप लेकर आए थे, अभी उसके आँसू बनकर वह चले।

सब कहते ही ... पिए चले।

शब्दार्थ--सरल हैं।

भावार्थ--सब लोग हमारे विषय में पूछते ही रह गए कि हम यहाँ किस उद्देश्य से आए थे और किस स्थान पर चल पड़े हैं। कवि कहता है कि हमसे यह पूछने की आवश्यकता ही नहीं है कि हमें कहाँ चलना है? क्योंकि हम स्वयं नहीं जानते कि हमें कहाँ जाना है? हमतो बस इसलिए चल रहे हैं क्योंकि हमें चलना है।

इस संसार से हमने कुछ सीखा है, और इस संसार के लिए अपनी ओर से कुछ दिया भी है। संसार के दुख-दर्द में हमने हाथ बँटाया है। संसार की दो बातें हमने सुनी हैं, और दो बातें हमने उससे कही हैं। इस संसार में हमने सुख का भी अनुभव किया है, और दुख का भी। इस प्रकार सुख दुख के सभी भावों का हमने एक भाव से अनुभव किया है। सुख और दुख में हमने कोई भेद नहीं किया। न हमने सुख की परवाह की है और न दुख की ही।

हम भिखमङ्गों ... हार चले।

शब्दार्थ--भिखमंगों=भिखारी। स्वच्छन्द=नियन्त्रण रहित। निशानी = चिह्न। भार=बोझ। मान=सम्मान।

भावार्थ--इस संसार में जो भिखारी समाज है, जो दीन-दुखी और निर्धन जन हैं, हमने उनके लिए अपने हृदय का खुलकर प्यार लुटाया है। इस संसार में हमें असफलता ही हाथ लगी है। अपने हृदय में इसी असफलता का चिह्न लिए हम इस संसार से चले जा रहे हैं। हमें इस संसार के सम्मान और तिरस्कार की परवाह नहीं है। मान और अपमान की बिना कोई चिन्ता किए हमने इस संसार से जी भरकर खिलवाड़ किया है। हम बड़ी खुशी-खुशी से अपने प्राणों की बाजी इस संसार में हार चले हैं। अपनी असफलता पर हमें कोई दुख नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रम भला तोड़ चले।

शब्दार्थ—नत मस्तक=हार कर, सिर झुका कर। अभिशाप=अमंगलकारी भावनाएँ। दृगों=आंखों।

भावार्थ—अपने प्रति की गई संसार की भलाई बुराई को हम भूल चुके हैं। हमने इस प्रकार बुराई का कोई प्रतिकार नहीं किया है, वरन् सिर झुका कर इस संसार से अपना नाता तोड़ते हुए चल पड़े हैं। अपने ओठों से हमने संसार के अभिशापों का पान किया है और आँसुओं के रूप में संसार के लिए हमने वरदान छोड़े हैं। भाव यह है कि संसार में दुख का अनुभव करके भी हमने उसके लिये सुख की ही कामना की है।

अपने और पराये के भेद भाव को भी हम भूल चुके हैं। इस संसार में जितने भी लोग हैं सब सुख पूर्वक रहें। हमने स्वयं अपने जीवन को सुख और दुख के बन्धनों में बांधा था। आज अपने ही हाथों उन बन्धनों को तोड़ते हुए हम चल पड़े हैं।

श्री नरेन्द्र शर्मा

शांत है मन भी।

शब्दार्थ—समीरण=वायु। मौन=शांत। बात=हवा, वायु। नखत=नक्षत्र, तारे। दृग=आँखें। निश्वास=सांसें। चिर-विकल=सदैव व्याकुल रहने वाला।

भावार्थ—पर्वतों पर बहने वाली वायु अब शांत है। चीड़ का वन भी स्थिर और नीरव है। बालक की बातों की भाँति वायु का वातावरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। आकाश में चमकते हुए तारे भी निश्चल और स्थिर बने हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो बहुत देर से रोती हुई रात अब चुप हो गई हो और ये तारे उसके आँसुओं से रहित आँखें बन गई हों। इसी प्रकार मेरे हृदय के विश्वास भी किसी दिन गतिहीन बन जायँगे और पर्वत समीरण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

की भाँति मेरा विकल हृदय भी शांत बन जायगा।

रुकी झंझा ... जीवन भी।

शब्दार्थ--झंझा=बरसात में चलने वाले तूफान। दृग=आँखें। गिरि=पर्वत। असित तरु=काले वृक्ष। पांत=पंक्ति। अघात=चोट। निस्सीम=सीमा रहित, व्यापक। शून्य जीवन=अभावमय जीवन।

भावार्थ—बरसात के तूफान थम गए हैं। सामने पर्वत पर वृक्षों की काली पंक्ति दिखलाई दे रही हैं। ऊपर नीला आकाश फैला हुआ है मानो उसका नीला रंग प्रहार पर प्रहार सहने के कारण पड़ गया हो। इस व्यापक आकाश की भाँति एक दिन मेरा यह अभावमय जीवन भी असीम रूप बन जायगा। (कवि कल्पना करता है कि मृत्यु के बाद यह जीवन भी आकाश की भाँति सर्वत्र व्यापक बन जायगा।)

यह खुला नभ ... बन्धन भी।

शब्दार्थ- अनमोल=अमूल्य। वृष्टि=वर्षा। कुमुदिनी=रात्रि में चंद्रमा की किरणों से खिलने वाला फूल।

भावार्थ—आकाश कितना साफ और धुला हुआ प्रतीत हो रहा है। उसमें मनोहर चाँदनी छाई हुई है। चाँदनी के रूप में अमृत की वर्षा हो रही है। चाँदनी की किरणों को देखकर कुमुदिनी ने अपने हृदय के द्वार खोल दिए हैं। कुमुदिनी की कलियों की भाँति हमारे जीवन के प्रति मोह के बन्धन भी खुल जायँगे।

आह्वान

मेरे पंकिल ... नीरज।

शब्दार्थ—पंकिल=मलिन, मैला, कींचड़ मय। अकलुष=स्वच्छ, पवित्र। पंकज=कींचड़ में जन्म लेने वाला कमल। चपल=चंचल। नीर=जल। स्थिर तप=शांत साधना। नीरज=जल से उत्पन्न होने वाला कमल।

भावार्थ—मेरे अहङ्कार की मलिनता में हृदय की स्वच्छता का, तथा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चंचल मन में मौन साधना का उसी प्रकार उदय हो जिस प्रकार कि मलिन जल में कमल उत्पन्न होता है।

अन्तर ... अपरम्पार।

शब्दार्थ—अन्तर=हृदय। अभाव=शून्यता, सूनापन। अक्षय=जो कभी नष्ट न हो। आभा=प्रकाश। साकार=प्रत्यक्ष रूप में। अमल=स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र। अपरम्पार=परमात्मा, ईश्वर।

भावार्थ—हे भगवान मेरे हृदय में साकार रूप से विराजकर मेरे हृदय की शून्यता को दूर कर दो। अपना शाश्वत प्रकाश उसमें भरदो। जिस प्रकार कमल की निर्मलता मलिन स्थानों में ही जन्म लेती है, उसी प्रकार हे ईश्वर तुम भी कमल की निर्मलता का रूप लेकर मेरे मलिन हृदय में आ विराजो।

क्षुद्र हृदय ... जीवन प्राण!।

शब्दार्थ—क्षुद्र=तुच्छ। क्षीर-सिन्धु=क्षीर सागर, वह स्थान जहाँ विष्णु भगवान शेष की शय्या पर शयन करते हैं। सरसिज=कमल। अम्लान=खिला हुआ। प्रेम-ज्योतियुत=प्रेम के प्रकाश से युक्त। दीप-पुष्प=दीपक रूपी फूल। ज्योतित=प्रकाशमान।

भावार्थ—हे भगवान मेरे इस तुच्छ हृदय को अपना क्षीरसागर बनालो। मेरे हृदय की मलिनता में विकसित कमल के समान खिल उठो। हे कमल रूप भगवान, प्रेम के प्रकाश से युक्त दीपक बनकर मेरे हृदय, जीवन और प्राणों में भी नया आलोक भरदो।

यहीं छिपे ... जीवन में।

शब्दार्थ—पंकिल मन=मलिन हृदय, दुर्गन्धों की कींचड़ से भरा हृदय।

भावार्थ—यद्यपि तुम मुझे दिखलाई नहीं दे रहे, फिर भी तुम मेरे मलिन हृदय में कहीं न कहीं अवश्य छिपे हुए हो। मेरे हृदय की इच्छाओं रूपी चंचल लहरों से खेलते हुए तुम इस जीवन में अवश्य कहीं न कहीं विद्यमान हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आह आज ... सोते प्राण।

शब्दार्थ—मौन अधर=शांत मुख। अजान=अज्ञात।

भावार्थ—अहा! आज ही तो संध्या शांत मुँह से तुम्हें मेरा जीवन सर्वस्व बतलाकर मेरे सोए हुए प्राणों को जगा गई है।

मेरे पंकिल ... तप के नीरज।

शब्दार्थ—पंकिल=मलिन। करुणा=दया। पंकज=कमल। चपल नीर=चंचल जल। सतत=लगातार, निरंतर। नीरज=कमल।

भावार्थ—जिस प्रकार मलिन स्थान पर भी स्वच्छ कमल जन्म लेता है, उसी प्रकार हे ईश्वर तुम भी मेरे मलिन हृदय में अपनी करुणा का कमल खिलाओ।

मेरे चंचल मन में तुम्हारी शाश्वत साधना के कमल का उदय हो।

रुद्ररूप भारत

भारत अधिनायक ... कातर।

शब्दार्थ—अधिनायक=स्वामी। गणनायक=गणों के स्वामी शिवजी। प्रलयङ्कर=विनाश करने वाले। पार्श्व परिवर्त्तन=करवट बदलना। भूकम्प=पृथ्वी का हिलना। रोमों=रोनों, शरीर पर स्थित छोटे-छोटे छेद। भय-कातर=डर से अत्यन्त व्याकुल बने।

भावार्थ—कवि भारत को शिव का रूप प्रदान करता है। गणनायक शिवजी की भाँति भारत संसार का अधिपति है। भारत के रूप में प्रलयङ्कारी शङ्कर आज जाग उठे। इन शिवजी के तनिक करवट लेने से विहार में भयंकर भूकम्प आ गया था, जिनके रोम मात्र के हिलने से पृथ्वी काँपने लगती है और सारे नगर, गाँव भयभीत बन, दीन दुखी जनों की भाँति काँपने लगते हैं, धूल में गिर पड़ते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिनकी सांसों ... गुण अक्षय।

शब्दार्थ—निमिष=पल भर। दिग्दिगंत=समस्त दिशाएँ। सागर=समुद्र। सुधि लें=याद करें। हर=शिवजी। लोक=संसार। हिम सित=बर्फ से समान। अक्षय केश=कभी नष्ट न होने वाले बाल।

भावार्थ—शिवजी की साँसों के कम्पन मात्र से ही पल भर में ही समस्त दिशाएँ, पृथ्वी और सातों सागर हिल उठते हैं। सभी ओर प्रलय का रूप दिखलाई पड़ने लगता है। यह भारत भी ऐसे ही शिवजी के समान है। जिस प्रकार शिवजी के कन्धों पर अक्षय श्वेत बाल लहराते हैं उसी प्रकार हिमालय के बर्फीले शिखरों के रूप में भारत के कन्धों पर भी श्वेत बाल बिखरे हुए हैं। ये कभी नष्ट नहीं होते। शिव रूप भारत की इन बर्फीली जटाओं से गंगा निकलती है। (गंगा हिमालय से निकलती है। यह भी पौराणिक आख्यान है कि गंगा स्वर्ग से शिवजी की जटाजूट पर उतरी थीं, उसके बाद पृथ्वी पर गिरीं। इस प्रकार भारत का हिमालय पर्वत मानो शिवजी की जटाएँ हैं। हिमालय और जटाओं का रूपक यहाँ बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से चित्रित किया गया है।)

चंदन और ... विन्ध्याचल।

शब्दार्थ—विभूति=राख। शशि=चन्द्रमा। वह्नि=आग। जीवाशय=बहुत से मानव प्राणी। लय=लीन। प्रतिपालित=प्रतिपालन करने वाले, रक्षा करने वाले। हर=महादेव। सांपू=ब्रह्मपुत्र नदी। पंचनद=पंजाब की पाँचों नदियाँ। नीलकंठ=गले का नील रंग, शिवजी का कण्ठ विष पान करने के कारण नीला पड़ गया था। अहिदल=सर्पों का समूह। रत्नाकर=समुद्र। मुण्डमाल=मनुष्यों की खोपड़ियों की माला।

भावार्थ—शिवजी का शरीर चंदन और राख से पुता रहता है। भारत में भी असंख्य चन्दन के बन और धूल से भरे प्रदेश हैं। शिवजी के सिर पर चन्द्रमा शोभायमान है। भारत के मस्तक पर भी आकाश में चन्द्रमा चमकता है। शिवजी के नेत्रों में आग भरी हुई है। उसी प्रकार तारों के रूप में भारत के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेत्रों में भी आग भरी हुई है। शिवजी के हृदय में अनन्त प्राणियों का वास है, भारत में भी तीस करोड़ मानव प्राणी वास करते हैं। भारत के रूप में मानव-समुदाय का प्रतिपालन करने वाले ऐसे शिवजी आज निद्रा त्यागकर जाग उठें।

गहनों के समान शिवजी के शरीर पर सर्प शोभायमान हैं। भारत के शरीर पर भी सर्पों की भाँति गतिशील ब्रह्मपुत्र, सिंध, पंचनद, यमुना आदि नदियाँ आभूषण के समान प्रतीत होती हैं। यमुना भारत का नीलकण्ठ है। भारत के पैरों को सदैव समुद्र चूमता रहता है। शिवजी के गले में मनुष्यों की खोपड़ियों की माला पड़ी हुई है, उसी प्रकार भारत के गले में विन्ध्याचल की भाँति मुण्डमाल शोभित है।

राजस्थानी ... चराचर।

शब्दार्थ—मरुस्थल=रेगिस्तान। खप्पर=खोपड़ी से बना भिक्षापात्र। शोणित=रक्त, खून। वाहन=ले जाने वाले। दल=समूह। रुद्र=शिव। सुवासित=सुगन्धित। अम्बर=आकाश। स्मिति=हास्य। मिस=बहाने। भाखित=मालूम देने वाला, प्रतीत होने वाला। वक्रहास=कुटिल हास्य, अट्टहास। चराचर=समस्त संसार।

भावार्थ—राजस्थान का रेगिस्तान शिव रूप भारत का खप्पर है। दक्षिण की चंचल नदियाँ मानो मुण्डमालों के रक्त का वहन करने वाली हैं। (कवि ने विन्ध्याचल को भारत के मुण्डमाल का प्रतीक माना है। दक्षिण की नदियाँ विन्ध्याचल पर्वत से ही निकलती हैं।) ऐसा शांति निद्रा में सोया हुआ रुद्र रूप यह भारत जगकर शिवजी की भाँति सारे संसार में प्रलय मचादे।

मनोहर काश्मीर के रूप में जहाँ यह भारत इतना कोमल है, वहीं वह इतना कठोर भी है कि उसकी साँसों के कम्पन से पृथ्वी और आकाश काँपने लगते हैं। यह मानसरोवर की शोभा जहाँ भारत की मधुर मुसकान मात्र है, वहीं इसका विकट हास्य समाज संसार के प्राणियों को भयभीत बनाने वाला है।

सती शक्ति ... आडम्बर हर।

शब्दार्थ—सती=शिवजी की पत्नी। शक्ति=पार्वती। सहचर=साथी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वह्नि=आग। त्रिनयन=तीन नेत्र वाले, शिवजी। शशिधर=चन्द्रमा को धारण करने वाले। भू गर्भानल=पृथ्वी के नीचे छिपी हुई आग। आडम्बर=ढोंग। हर=दूर करके।

भावार्थ--प्रलयङ्कारी शिवजी सती पार्वती और भूतों के साथ रहने वाले हैं। मरघट का स्थान ही जिनका निवास है। जिनके नेत्रों में आग भरी हुई है, जिनके तीन नेत्र हैं, जो मस्तक पर चन्द्रमा धारण करते हैं, पृथ्वी के नीचे छिपी हुई आग का रूप लेकर बाहर निकल पड़ें और विश्व के समस्त ढोंग और आडम्बरों को नष्ट करदें।

× × ×

साँझ होते - निराशा।

शब्दार्थ—विरह-व्याकुल=किसी के वियोग से दुखी। प्रवासी=दूर देश में बसने वाला। अस्त=छिपना। श्रांत=थका हुआ। म्लान=मलिन, मुर्झाया हुआ। विलुप्त=विलीन होना, छिपना।

भावार्थ—संध्या होते ही हृदय में न मालूम कैसी उदासी छा गई है। हे वियोग से दुखी प्रवासी, क्या तुम्हारे हृदय में किसी की याद उमड़ आई है। क्या अपने प्रिय से मिलने की आशा डूबते हुए सूरज की भाँति क्षीण, म्लान और विलीन हो गई हैं? भविष्य का यह अनुमान कि प्रिय से अब मिलन नहीं होगा, अभी से अपने हृदय में बसाकर क्या तुमने यह निराशा धारण करली है? -

पड़ गई रही है।

शब्दार्थ—भग्न-उर=दुखी हृदय। म्लान=मलिन। गेह=घर। भाया=भला मालूम देता। निराश्रित=जिसका कहीं आश्रय न हो, रहने को जगह न हो। नियति=भाग्य। शासित=जिस पर शासन किया जा रहा हो। व्यथित=दुखी। मही=पृथ्वी। आसरा=सहारा।

भावार्थ—तेरे हृदय की उदासी कहीं दिवस के अवसान की काली छाया का प्रतीक बनकर तो नहीं आई? अथवा अपने घोंसलों की ओर लौटते हुए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन पंक्तियों को देखकर तुझे भी घर पर किए जाने वाले विश्राम की याद उठ आई हो। ओ आश्रय विहीन, भाग्य के सहारे जीवन व्यतीत करने वाले प्रवासी जब तक यह पृथ्वी है, तब तक तू दुखी क्यों हो रहा है ? यह पृथ्वी जब धूल, कण, तृण आदि तुच्छ पदार्थों को सहारा देती हैं तब तुम्हें उदास होने की क्या आवश्यकता है ? यह पृथ्वी तुम्हारा भी आश्रय बनेगी।

देख ऊपर ... अलकें।

शब्दार्थ—कुंद-तारक-पुंज=चमकीले तारक समूह। घन=बादलों। माधवी=एक लता का नाम है। गंध=सुगन्ध। अन्ध=बेसुध, अन्धा। पलकें=आँखें। सुरभिसींची अलकें=सुगन्धि से भीगे हुए केश।

भावार्थ-हे प्रवासी, ऊपर तो देख आकाश में किस प्रकार चमकीले तारे खिले हुए हैं। यह आकाश दुर्भाग्य से भरे बादलों की छाया का सदैव सहारा रहा है।

हे प्रवासी माधवी लता की सुगन्धि से बेसुध बन कर तुम्हारी आँखें क्यों झँपी जा रही हैं। क्या तुम्हें अपनी प्रेयसि के सुगन्धि से भीगे हुए केश याद आ गए हैं।

क्यों उदित ... उदासी।

शब्दार्थ—उदित=उदय होता हुआ। शशि=चन्द्रमा। म्लान=मुर्झाया हुआ। विरह विधुरा=विधुर की भांति पत्नी वियोग से व्याकुल। शशिप्रिया=चंद्रमा के समान मुख वाली प्रेयसि। स्नेह दीपक=प्रेम का दीपक। चिर लगन=सदैव लीन रहने वाला। स्नेह=प्रेम। ज्योति=प्रकाश।

भावार्थ—हे प्रवासी क्या तुम्हारे हृदय में उदय होते हुए चन्द्रमा के म्लान मुख को देखकर उदासी छा गई है अथवा विधुर की भांति पत्नी वियोग से व्याकुल तेरे हृदय में चन्द्र मुख की भांति सुन्दर प्रेयसि की याद उठ आई है।

हे प्रवासी जब तक तेरे हृदय में तेरी प्रिया की याद विद्यमान रहेगी तब तक तेरे शरीर में प्राण रहेंगे। तेरे प्राण जीवन के स्पंदन से गतिशील बनेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हे प्रवासी प्रेम की ज्योति बन कर तू सदैव जीवित रहेगा।

इसलिये हे प्रवासी तू प्रिया के ध्यान में निरन्तर लीन रह कर उसके प्रेम में स्नेह का दीपक बन कर जलता रहे। इस प्रकार अपने हृदय से उदासी के अन्धकार को दूर कर।

× × × ×

आज उज्ज्वल .... गया जग।

शब्दार्थ—उज्ज्वल=स्वच्छ। खग=पक्षी।

भावार्थ—जिस प्रकार उज्ज्वल चाँदनी को दिन समझ कर रात्रि में पक्षी गण सो नहीं पाते उसी प्रकार निद्रा के सपनों को सत्य समझ कर मैं नींद से गया हूं।

पूर्णिमा है .... थिर।

शब्दार्थ—शशिबिम्ब=चन्द्रमा की परछाई। श्राँत=थकी हुई। विजन=निर्जन, जहाँ कोई मानव प्राणी नहीं हो। सदृश्य=समान। चिर=सदैव। भाव=हृदय की भावनाओं। थिर=एक स्थान पर स्थायी।

भावार्थ—पूर्णिमा काल की अर्द्ध रात्रि का समय है। मस्तक पर चन्द्रमा की परछाई पड़ रही है। परन्तु पेड़ के नीचे काली छाया पड़ी हुई है, मानों इधर उधर भटकने से थकी हुई छाया यहाँ शांत भाव से स्थित हो गई हो। मैं आज निर्जन प्राँत के इस वृक्ष की भांति बना हुआ हूँ और तुम चन्द्रमा के समान मुझ से बहुत दूर हो। परन्तु जिस प्रकार वृक्ष के तले छाया शाँत भाव से स्थित है, उसी प्रकार मेरे हृदय के भावों की छाया अभी स्थिर नहीं हुई है।

दूर हैं .... सुन्दर।

शब्दार्थ—चरण पावन=पवित्र पैर। निराश्रित=विना किसी आश्रय के। साधन=उपाय। ग्रथित=उलझा हुआ। सुधि=याद। सिन्धु=समुद्र। भ्रमित=भटकता हुआ।

भावार्थ—तुम्हारे पावन चरण आज मुझ से दूर हैं। उनके विना आज में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आश्रय विहीन बना हुआ हूँ। मेरा कोई भी सहारा नहीं है। मेरा मन तुम्हारी स्मृति रूपी समुद्र के भंवर में उलझ कर भटक रहा है। तुम्हारी याद में भटकता हुआ मैं बहुत थक चुका हूँ। अब मैं तनिक विश्राम चाहता हूँ। परन्तु तुम्हारे पावन चरणों को छोड़कर मैं किन चरणों के तले विश्राम करूँ, जबकि तुम्हारे पावन चरण मुझ से दूर हैं।

दूर हो तुम ... न पाऊं।

शब्दार्थ—निस्सार=तत्वहीन, व्यर्थ। मिथ्या=झूठे। श्री चरण=विभूतिमय चरण। अचिर=क्षणिक।

भावार्थ—तुम मुझ से बहुत दूर हो। दूर से ही तुम्हारी याद के सपने मुझे आते हैं। परन्तु ये सपने व्यर्थ और झूठे हैं। अतएव इन निस्सार सपनों की अपेक्षा अपने चरण मेरी ओर बढ़ाओ अर्थात् मेरे निकट आओ। मैं तुम्हारे इन क्षणिक सपनों को लेकर क्या करूँगा जो मेरे जागते ही नष्ट हो जाते हैं। मैं तो ऐसी नींद चाहता हूं जिसके जगने पर अपने को अकेला नही पाऊं परन्तु तुम्हें भी अपने साथ पाऊँ।

मैं अकेला ... जगे खग।

शब्दार्थ—आह=दुख। पद चाप=पैरों की ध्वनि। रव=स्वर ध्वनि। खग=पक्षी।

भावार्थ—सारा संसार सो रहा है। परन्तु मैं चन्द्रमा को दुखित हृदय से देखता हुआ अकेला जग रहा हूँ। परन्तु सहसा किस अज्ञात सत्ता के पैरों की आहट सुनकर पक्षी गण जगते हुए शब्द ध्वनि करने लगे।

× × × ×

कल दिन ... पर बदली।

शब्दार्थ—श्रम=थकान। तड़ित=बिजली। सुधि=याद।

शब्दार्थ—कल दिन के समय मैं कमरे में खड़ा हुआ था। तुम्हारा चित्र मेरे सामने था। तुम्हारे चित्र को देखकर दिन भर की थकान के दुख को भूल गया। इतने में कमरे की सफेद दीवालों पर हलकी सी छाया दिखलाई पड़ने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगी। मेरे हृदय में बिजली के समान तुरन्त ही यह ध्यान आया कि तुम दरवाजे पर खड़ी हुई हो परन्तु मुड़ कर जब मैंने बाहर देखा तो वहां खिलती हुई धूप को पाया। वह छाया सूर्य पर किसी बदली के आने से दिखलाई पड़ी थी। उस छाया को देखकर मुझे तुम्हारी याद आई थी।

श्री रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

फूल काँटों ... मुरझा गया।

शब्दार्थ—कंटकों=काँटों। सुरभि वाही=सुगन्ध वहन करने वाला। कपूरी=कुछ पीले हलके रंग की। मधु ऋतु=बसन्त ऋतु।

भावार्थ—काँटों के बीच जो फूल आनन्द और हर्ष से खिला हुआ था। शय्या पर पहुँचते ही वह फूल मुरझा कर नष्ट हो गया।

मनोहर ऊषा की भांति फूल काँटों में शोभायमान हो रहा था। उसके स्पर्श से चंचल होकर सुगन्धित वायु वह रही थी। उसकी कपूरी रंग की पखंड़ियों में बसंत ऋतु के सपने जाग उठे थे अर्थात् फूलों को देख बसन्त ऋतु के सौन्दर्य की याद आ जाती थी। यही फूल काँटों में तो खिला था परंतु सेज पर बिछाते ही मुरझा गया।

प्रखर रवि ... मुरझा गया।

शब्दार्थ—प्रखर=तेज। ताप=गर्मी। झंझा=बरसात में चलने वाली आँधी। असह=जो सहन नहीं किए जा सकें, अत्यंत कठिन। तरुण=युवक रूपी फूल। संघर्ष कामी=संघर्षों में पलने वाला। मलिन=उदास, दुखी।

भावार्थ—जब तक यह फूल झाड़ी पर लगा हुआ काँटों के बीच हँस रहा था, तब तक सूर्य की तेज गर्मी और बरसात के भारी तूफान भी इस फूल का कुछ नहीं बिगाड़ सके। काँटों की भाँति संघर्षों में पलने वाले उस तरुण रूपी फूल को वे दुखी और निराश नहीं बना सके। परन्तु जब फूल झाड़ी से टूट कर अलग हो गया, वह एक दिन भी जीवत नहीं रह सका।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काँटों में खिलने वाला फूल सेज पर पहुँचते ही मुरझा गया। (यहाँ कवि ने फूल को मानव जन का प्रतीक माना है। कवि कहता है कि काँटों की भाँति संघर्षों में पलने वाला जीवन ही वास्तविक जीवन है। जब तक जीवन आपत्तियों और दुखों से संघर्ष करता रहता है तब तक सूर्य की तेज जलन बरसात के भीषण तूफानों की भांति विश्व जीवन के असह दुख भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। परंतु जिस प्रकार फूल कंटकों से अलग होकर सेज पर जाते ही मुरझा जाता है उसी प्रकार यह मनुष्य भी जब संघर्षों के जीवन से हट कर प्रणय की आनन्द केलि में आसक्त होता है, त्यों ही वह नष्ट हो जाता है। उसका जीवन मृतप्राय बन जाता है।)

जो अडिग ... मुरझा गया।

शब्दार्थ—अडिग=जो विचलित न हो। अड़ा=खड़ा। शरद=शरद काल मुक्त=बन्धन रहित। द्वन्द=संघर्ष। संघात=चोट।

भावार्थ—जो तारा बरसात के तूफानों में अविचल रूप से खड़ा रहता है वही शरद की शांत ऋतु में टूटकर गिर जाता है। इसलिये जीवन की वास्तविक प्रगति शांत और निश्चल जीवन में नहीं है, वरन् संघर्ष और आपत्तियों के प्रहारों में है। कांटों की भांति दुख और संघर्षों के बीच पलने वाला जीवन ही विकास की गति को प्राप्त हो सकता है। क्योंकि फूल काँटों में ही खिलता है, परन्तु शय्या पर बिछाते ही वह मुरझाकर नष्ट हो जाता है।

× × ×

ठहर जाओ ... जल कर।

शब्दार्थ—घड़ी भर=कुछ समय तक। प्रतिरोम=प्रत्येक रोम से। सरस=मधुर उल्लास=हर्ष। निर्झर=झरना। किरण=प्रकाश की ज्योति।

भावार्थ—हे सुन्दरी कुछ समय के लिये और रुक जाओ। जिससे कि मैं तुम्हारे रूपको जी भर कर देख लूँ। तुम्हारा मधुर स्वर कुछ क्षणों के लिये मेरे कानों में और गूँजता रहे। तुम्हें देखकर मेरे रोम रोम से झरने की भांति मधुर उल्लासों का स्रोत बह उठे। जो हृदय तुम्हारे अभाव से निराशा के अन्धकार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से भर गया है, वही तुम्हारे दर्शनों से शायद प्रकाश से भर उठे।

ठहर जाओ

आत्मा उज्ज्वल।

शब्दार्थ—सित आवरण=सफेद पर्दा। लघु=छोटा। चितवनों=दृष्टि, नजर। छाँह=छाया। उज्ज्वल=प्रकाश।

भावार्थ—हे सुन्दरी कुछ देर के लिए रुक आओ जिससे कि मैं जी भर कर तुम्हें देख लूँ।

तुम्हारे सौंदर्य का यह श्वेत आवरण की भांति मनोहर रूप मेरे हृदय को कितना शीतल प्रतीत होता है। तुम्हारे कण्ठ से निकलने वाले स्वर बाँसुरी के मधुर संगीत की भांति चंचल हैं। तुम्हारी चंचल चितवनों की छाया में मेरी आत्मा प्रकाश से भर उठती हैं।

उलझतीं

स्वप्न की माया।

शब्दार्थ—तरुण पाँखें=पूर्ण विकसित पङ्ख। सौरभ=सुगन्ध। मधुबात=बसन्त ऋतु की वायु। गगन=आकाश। दूधिया=दूध के समान रङ्ग वाली। शशि=चन्द्रमा। ढहे=गिरे हुये। माया=जादू।

भावार्थ—हे रूपसि जिस प्रकार किसी पक्षी के तरुण पङ्ख जाल में उलझ कर फड़फड़ाते है, उसी प्रकार मेरे प्राण रूपी पङ्ख तुम्हारे छवि जाल में उलझ कर फड़फड़ा रहे हैं।

ऐसा प्रतीत होता है मानों फूल की भांति सौरभ बिखेरती हुई सुगन्धित वायु तुम्हारा ही रूप धर कर बह रही है। ऐसा लगता है मानों तुम्हारे रूप में आकाश की दूधिया गङ्गा के समान चन्द्रमा की मधुर चाँदनी धरती पर उतर आई हो। मेरा मन टूटे फूटे महल की भांति निराशा का खण्डहर रूप बन गया था परन्तु तुम्हारे स्वप्नों की भांति किस अज्ञात जादू ने भग्न हृदय में अब आशा की ज्योति जगमगा दी है।

ठहर जाओ

ले आँखें।

शब्दार्थ—चिर प्यास=सदैव बनी रहने वाली प्यास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे सुन्दरी कुछ क्षणों के लिये और ठहर जाओ जिससे कि मेरी आँखें तुम्हारे रूप का जी भर कर पान कर लें।

तुम्हें अपने सामने पाकर मैं अपने जीवन को वास्तविक समझने लगता हूँ। भाव यह है कि तुम्हारे बिना मेरा जीवन निस्सार और मिथ्या प्रतीत होता है। उस समय मेरे जीवन की पूर्णता की तुलना कोई देवता भी नहीं कर पाता मेरे हृदय में ऐसी चिर प्यास जगती है, जिसे पाकर अमरता भी कृत कृत्य हो जाती है।

हे रूपसि क्षण भर के लिये और ठहर जाओ जिससे कि मेरी आंखें तुम्हें जी भर देख लें।

"आज कवि का मूक क्यों स्वर ?"

क्यों स्वर।

कर रहा

शब्दार्थ—चीत्कार=तीव्र रुदन, किसी दुख से व्याकुल होकर भीषण रुदन करना। मूक=चुप। स्वर=वाणी, कविता। मनुज=मनुष्य। व्याप्त=भरा हुआ। मरण के नग्न बन्धन=मृत्यु का खुला रूप।

भावार्थ—आज सारा संसार विनाश के मार्ग पर बढ़ता हुआ भीषण चीत्कार कर रहा है, फिर भी कवि की वाणी आज शाँत है। विश्व की वेदना को वह प्रगट नहीं कर रही। संसार के दुख से वह उदासीन है।

मनुष्य का सुख शांति और संयम से भरा जीवन आज जलकर नष्ट हो गया। मृत्यु अपने खुले रूप में उसके सामने खड़ी हो गई है। फिर भी आज कवि की वाणी अवरुद्ध है। कवि की कविता के स्वर मौन हैं।

क्यों स्वर।

ले सतत

शब्दार्थ—सतत = निरन्तर। आधार = सहारा। अपदस्थ = स्थान हीन मानव = मनुष्य। ढहरहा = गिररहा। विनिर्मित = बना हुआ। चेतना = ज्ञान, विवेक। स्तम्भ = खम्भा। शव = लाश।

भावार्थ—जिस ज्ञान का आधार लिए आश्रयहीन मनुष्य अब तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपना जीवन व्यतीत कर रहा था, वही अनेक युगों से बना हुआ ज्ञान का स्तम्भ आज टूट गया। इतने पर भी आज कवि की वाणी चुप है। कवि का हृदय इसका कोई प्रतिकार नहीं कर रहा।

रुक गया क्यों स्वर।

शब्दार्थ—जगती = संसार। स्रोत = धारा। विश्व चिंतन = संसार के विषय में मनन, चिंतन। प्रवाहों = गति, चाल। अवरुद्ध = रुकी हुई।

भावार्थ—आज जब कि समस्त संसार की प्रगति रुक गई है। विश्व-चिंतन के रूप में संसार के समस्त ज्ञान विज्ञान की गति जब कि आज अवरुद्ध बन रुक गई, ऐसी स्थिति में भी आज कवि चुप है। संसार की दशा से उसकी कविता उदासीन है।

यह निहत्थों क्यों स्वर।

शब्दार्थ—निहत्थों = साधन विहीन। निरीहों = जो कुछ कर न सके। कातर = दुख से भरे। दीर्घ = लम्बे। शोषण = नाश करना। चरम = पूर्ण रूप से बढ़ा हुआ। वीभत्स = भयंकर। विद्रूप = स्वरूप। लखकर = देखकर।

भावार्थ—आज मनुष्यों के ही हाथों दीन, और पीड़ित जनों के प्राणों का नाश किया जा रहा है। लम्बे काल से किए जाने वाले शोषण के इस महाभयंकर रूप को देख कर भी आज कवि का स्वर मौन बना हुआ है। शोषण के विरुद्ध कविता रूप में आज उसके हृदय की भावनाएं प्रस्फुटित नहीं हो रहीं।

सृष्टि के आदिम क्यों स्वर।

शब्दार्थ—सृष्टि = संसार। आदिम = प्राचीनकाल। मुक्त = बंधन रहित, स्वच्छंद। बर्बरता = जंगलीपन। त्राण = रक्षा। संस्कृति=संसार।

भावार्थ—आज के युग के इस शोषण को देखकर प्राचीन युग का वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असभ्य जङ्गलीपन भी शर्माता है। वह भी शोषण के इन अत्याचारों के सामने तुच्छ हैं। आज संसार की रक्षा का कोई उपाय भी नहीं दिखलाई पड़ता। इतने अधिक मानव प्राणियों के प्राणों का विनाश कर के भी मृत्यु अभी तक संतुष्ट नहीं हुई। मानव समुदाय का विनाश करने के लिए अब भी वह तत्पर है।

ऐसी स्थिति में भी कवि आज चुप है। उसकी कविता के स्वर युग के शोषण का प्रतिकार नहीं कर रहे।

चीर तम-तल ... क्यों स्वर।

शब्दार्थ—चीर तम तल = अंधकार को नष्ट कर के। उल्लसित = आनंद और हर्ष से भरा हुआ।

भावार्थ—संसार के इस अन्धकार को नष्ट करता हुआ क्या जीवन के शक्तिशाली और उल्लास भरे स्वरूप का अब निर्माण नहीं होगा। क्या कवि का स्वर इसी प्रकार मौन बना रहेगा। जीवन के स्वस्थ निर्माण में कविता रूप में उसके हृदय की वाणी क्या कुछ योग प्रदान नहीं करेगी ?

अथ देर नहीं ... खाए जाता।

शब्दार्थ—निशि = रात्रि। ढलने = समाप्त होने। एकाकीपन = अकेलापन।

भावार्थ—अब रात्रि समाप्त होने में अधिक देर नहीं है। जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूं वह मेरे लिए अनजान है। इसलिए मार्ग पर चलते हुए मुझे कुछ भय सा प्रतीत होता है। परन्तु मैं मृत्यु से नहीं डरता, क्योंकि अब जीवन से मुझे कुछ भी मोह नहीं रह गया है।

इस मार्ग पर मैं अकेला चल रहा हूँ। कोई भी मेरा इस पथ पर संगी साथी नहीं है। यह एकाकी पन ही मेरे हृदय को विकल बना रहा है।

लहरों में डूब ... प्रगति स्रोत राही।

शब्दार्थ—शशि = चंद्रमा। विह्वल = व्याकुल। सरिता = नदी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रभात तारा = सूर्य । गह्वर=गड्ढे । भूधर = पर्वत । प्रतिडग = प्रत्येक कदम । शिखर = चोटी । रजनी = रात्रिकाल । अम्बर = आकाश । ज्वालावाही = प्रकाश की किरणों को वहन करने वाला । प्रगतिस्रोत राही = प्रगतिशील धारा की भाँति राही बन कर ।

भावार्थ—नदी की लहरों में चाँदनी का रूप लेकर चंद्रमा डूबता हुआ सा प्रतीत होता है । नदी की धारा अधीर होकर बह रही है । इतने में बादलों को चीर कर प्रभात काल का सूर्य निकल आया ।

मुझे ज्ञात नहीं है कि आने वाले पथ पर कितने गड्ढे और पर्वत हैं । जो कि कदम कदम पर शत्रु के समान पथ पर बढ़ने वाले मनुष्यों की गति को रोके हुए हैं । मेरा पथ सुनसान है । मेरे अतिरिक्त इस पर और कोई नहीं चल रहा । ऐसा कोई भी संगी साथी मेरे साथ नहीं है जो मेरे प्राणों में शक्ति भर कर मेरी सोई हुई गति को जगा दे । मेरे कदमों को शक्ति देकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे ।

कवि कहता है कि मैं किरणों को अपना साथी बना कर ही इस संघर्ष मय संसार से मार्ग पर बढ़ जाऊँगा । रजनी के अंधकार से भी अधिक भयंकर उस सूनेपन की याद जो हृदय में छाई हुई थी उसको भी मैंने हृदय से दूर कर दिया । अब प्रकाश की किरणों को वहन करने वाला सूर्य शीघ्र ही आकाश को आलोकित करता हुआ निकलेगा । परन्तु तब तक तो मैं प्रगति शील धारा की भाँति अपने पथ पर बहुत दूर निकल जाऊंगा ।

आह्वान

ले चलो

अनल में ।

शब्दार्थ—अतल = गहराई । उन्मत्त = पागल । दुर्दिन = बुरा समय । अन्तर = हृदय । प्रलय = विनाश । उन्माद = पागलपन । तृषा = प्यास । वाहन = वहन करने वाला । अनल = आग ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—इस नौका को और भी अधिक गहराई में ले चलो।

मेरा दुर्भाग्य उन्मत्त होकर वायु के तूफान की भांति मेरी नौका के ऊपर आ रहा है किंतु मेरे प्राणों में मूर्च्छना नहीं है। वे अपने दुर्भाग्य से सावधान हैं। आज मेरे हृदय को विनाश और उन्माद घेरे हुए हैं। तृषा की अग्नि में मुझे जाना ही पड़ेगा।

आह रे उन्मत्त .... अतल में।

शब्दार्थ—निमन्त्रण = बुलावा। मुखरित = बोल उठे। दुर्दान्त = जिनका अन्त करना बहुत कठिन हो। दारुण = भयंकर। समर्पण=सौंपना। लालसा = वासना, इच्छाएं।

भावार्थ—अपने को संबोधित करता हुआ कवि कहता है कि मेरी हे जीवन नौका के उन्मत्त मांझी आज वासना की लहरें तुझे अपनी ओर खींच रही हैं। अपनी नौका को तूने जो वासना के हाथों सौंप दिया है उसका ही भयंकर और वीभत्सस्वरूप आज सामने दिखलाई दे रहा है। इन भयंकर वासना रूपी लालसाओं से बचने के लिए इस जीवन नौका को अतल में ले चलो।

बाँध दे .... अतल में।

शब्दार्थ—तरी = नौका। तूफान धारी = तूफान को धारण करने वाले। चिर विसर्जन = सदैव के लिए परित्याग, समाप्ति। स्वप्न = सपने। मरण-वाहन = मृत्यु को वहन करने वाले। क्षुब्ध = रोष से भरा। स्रोत = धारा। प्रतिक्षण = प्रत्येक समय।

भावार्थ—हम ऐसे पथिक हैं जो तूफान की तरह चलते हैं। लहरें भी हमारी नौका की गति का साथ नहीं दे सकतीं। हम तो मृत्यु के पुजारी हैं जो सदैव अपने जीवन की समाप्ति के स्वप्न सजाया करते हैं।

अब तो जीवन नौका की गति प्रतिपल क्षुब्ध बनती जा रही है, इसलिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीघ्र ही नौका को अतल में ले चलो।

इस पिपासा ... जल में।

शब्दार्थ--पिपासा = प्यास। प्रज्वलित = जलते हुए। आवर्त्त = पानी का भँवर। उदाम = स्वतन्त्र, बंधन रहित। संचय = समूह, ढेर। अलक्षित = अज्ञात, अदृश्य। गर्त्त = गड्ढा। विस्फोट = उबल कर फूट पड़ना।

भावार्थ—इस वासना की लहरों में आग के समान जलते हुए भंवर उठ रहे हैं। इस जीवन यात्रा का स्वतन्त्र यात्री लुटा जा रहा है क्योंकि उसकी साँसों की धरोहर का समूह नष्ट होता जा रहा है। एक गम्भीर स्वर उठ रहा है कि जल में अदृश्य गर्त्त और विस्फोट छिपा हुआ है।

यह विफल ... अतल में।

शब्दार्थ—विफल = परिणाम रहित। तृष्णा = किसी की प्राप्ति के लिए आकुल इच्छा। पराजित = हारी हुई। अकंपित = स्थिर, शाँत। तरी = नौका। नूतन = नया।

भावार्थ--आज मेरे जीवन की केवल यही स्पष्ट निशानी बाकी रह गई है कि मेरी कोई इच्छा पूरी नहीं हो सकी। जीवन नौका की स्थिर गति ही इस राह के पथिक की शाश्वत कहानी है। आज नए मार्ग को सजाते हुए इस जीवन नौका को अतल में ले चलो।

प्रभाती

उषा के ... सदृश धुले।

शब्दार्थ—अलसित = आलस्य से भरे। निशापरी = रात्री रूपी परी। नखत = नक्षत्र, तारे। मुग्ध = मोहित होकर। सस्मित = प्रसन्नता से भरे हुए। रजत-तुहिन = चाँदी के समान कुहरा, स्वप्न दल = सपनों के समूह, यहाँ ओस की बूँदों से तात्पर्य है। मुकुल = खिले हुए। मंजु = कमल क

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फूल । ज्योत्स्ना = चाँदनी । कल = सुन्दर, मधुर । मधुकण = अमृत के कण । सदृश्य = समान ।

भावार्थ—प्रभात की बेला का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि अब उषा सुन्दरी के आलस्य से मुंदे नेत्र खुल गए हैं । (निद्रा त्यागने पर सब के नेत्र आलस्य से भरे होते हैं ।) ऐसा प्रतीत होता है मानों निशा सुन्दरी के तारे रूपी मधुर चुम्बनों के स्पर्श से उषा के मधुमय नेत्रों का आलस्य धुलकर दूर हो गया हो । उषा की आँखों में अब मुस्कान खिल उठी है ।

चाँदी के समान बर्फीला कुहरा ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानों रात्रिकाल के तारे सपने धरती पर गिर कर बह रहे हों । खिले हुए कमल की चंचल कलियों पर चाँदनी के फेन के समान, अमृत कणों के रूप में ओस की बूंदें छाई हुई हैं मानों वे सुन्दर वायु के स्वर में कुछ ढूंढ़ रहे हों ।

ला भरी . गान ढुले ।

शब्दार्थ—छवि = शोभा । विस्मित = विस्मित से भरी, आश्चर्य चकित । वनश्री = वन की शोभा । पुलक = प्रसन्नता । सरसी = छोटा तालाब । अधर दलों = दोनों ओठों । सौरभ गान = सुगंधि से भरे गान ।

भावार्थ—वन श्री अपनी शोभा से विस्मित होकर यौवन के उन्माद के समान अंगड़ाई ले रही थी । छोटे छोटे तालाब अपनी लहरों के द्वारा अपना हर्ष प्रगट कर रहे थे । नवकलियाँ चारों ओर सुगन्धि बिखेर रही हैं मानो उनके होठ सुगन्धि के गीत गा रहे हों ।

तुम भी किरण मन्द मन्द डुले ।

शब्दार्थ—कनकलता = सोने की लता के समान । चिर सोहागमयि = सदा सौभाग्यशाली रहने वाली । मरंदमयि = परागमयी । प्रांगण = आँगन । मन्द मन्द = धीरे धीरे ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भावार्थ—हे किरण सुन्दरी तुम भी जाग उठो। सुवर्ण लता के समान तुम्हारा सौंदर्य है। तुम चिर सौभाग्यवती हो। (सूर्य सदैव पति रूप सेंतुम्हारे साथ विद्यमान हैं।) हे मकरंद मयी किरण सुन्दरी रात्रि भर तुमने प्रियतम के चुम्बनों का सुख प्राप्त किया है। अपने इस चुम्बनों के पराग को अब अपने मंद-मंद हृदय से जग के आँगन में बिखेर दो। (कवि कल्पना करता है कि किरणों को रात्रिकाल में अपने पति सूर्य का साहचर्य प्राप्त हुआ हो। सूर्य के चुम्बन स्पर्श ही किरणों का प्रकाश है, जिसे कवि किरणों के पराग का रूप देता है। इसी प्रकाश को कवि किरणों के द्वारा संसार में फैलाने के लिए कहता है।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. ....3323.........

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

म[illegible]मा (विशारद) परीक्षा के लिए सहायक पुस्तकें—

१—मध्यमा हिन्दी दिग्दर्शन (नये वर्ष के लिए)
नया संशोधित चौथा संस्करण ३॥)
२—ब्रजमाधुरी सार की टीका २॥)
३—तुलसी संग्रह की टीका २)
४—आधुनिक काव्य संग्रह की टीका २॥)
५—हिन्दी गद्य निर्माण : एक परिचय २॥)
६—जीवनयज्ञ : परिचय १॥)
७—मध्यमा प्रश्नपत्र हिन्दी उत्तर सहित सं० २००३ से २०१० तक ४॥)
८— ,, ,, ,, ,, सं० २०१० केवल [illegible])
९—मध्यमा प्रश्नपत्र इतिहास उत्तर सहित सं० २००४ से ६ तक ४॥)
१०—मध्यमा प्रश्नपत्र भूगोल उत्तर सहित सं० २००४ से ८ तक ४)
११—मध्यमा प्रश्नपत्र कृषिशास्त्र उत्तर सहित सं० २००४ से ८ तक २)
१२—मध्यमा प्रश्नपत्र अर्थशास्त्र उत्तर सहित सं० २००४ से ६ तक ४)
१३—मध्यमा प्रश्नपत्र गार्हस्थ्यशास्त्र उत्तर सहित ३)
१४—झाँसी की रानी (संक्षिप्त) अध्ययन १)
१५—गोदान : अध्ययन १॥)
१६—ध्रुवस्वामिनी: अध्ययन १)

[अन्य आलोचनात्मक साहित्यिक पुस्तकों का सूचीपत्र मंगाइये।]

सभी पुस्तकें मिलने का पता :—

विनोद पुस्तक मन्दिर,

हॉस्पिटल रोड, आगरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri